श्रीसद्गुरुभ्यो नमोनमः

विश्वनी महान विभूति
महान योगीराज, परम कृपाळु, गुरुदेव श्रीमद
विजयशांतिसूरीश्वरजीना अपूर्व जीवन वृतांत साथे

गुरु काव्य गुंजन

रचनार
किंकर

कीमत ०-१०-०

प्रार्थना

राग-हरीगीत छंद

आ जगतमा भमतो हतो, पण भ्रमर मारी नव ठरी,
मळीयो खरेखर एक जेणे, जीवनमा शाती करी;
आशा तणा पासा बधा, सवळा पड्या साचा अरे!
काळातरे स्वप्नुं फळयु, महापुन्यशाळी नर खरे! १
रखडई मरे भटकई मरे, पण सत साचो क्या-जडे,
जे भावना उरमा हती, ए स्थानमा नयनो पडे.
ओ! भारती माता, खरेखर विश्ववंद्य कहाय तु,
दुःख हारिणी शुभ कारिणी, सुख अर्पनार गवाय तु २
कल्याणकारी सृष्टिनी, देवी सती ओ! भारती,
आनदकारी सृष्टिनी, देवी सती ओ! भारती,
जयकारिणी आ सृष्टिनी, देवी सती ओ! भारती,
पुरहर्पना उभरावती, देवी सती ओ! भारती. ३
ओ भारती तुज, छाछायामा खरेखर दीसतो,
पहाडो अने भेखड विषे, ए कर्मदळने पीसतो,
जंगल गुफा भय भासतो, त्या एकीका फरता फरे,
ए ईष्टना साधक थवा, हिंसक पशुथी नव डरे. ४
नयनो कमळ सम दीसता, मुखचद्र सम चळके खरे!
शाती तणो साचो मीनारो, ज्योत अतरमा झरे!
मद मोह मायाने हण्या ने, काम क्रोध गया सरे!
आत्मोन्नतिने साधवा, सिद्धात साचा आचरे! ५

विश्नु कहो ब्रह्मा कहो, जरथोस्त कहो के राम कहो,
इसु क्राइस कहो के कृष्ण कहो, महावीर कहो पारस कहो;
आ सर्व नाम तणुं खरेखर, मूळ आखर एक छे,
जेने जीवनने जीतीयुं, तेनो खरेखर टेक छे. ६

ए विश्व आखुं एक समजी, अंतरंगे म्हालता,
उंच नीच के धनवान, निर्धन सर्व एक पीछाणता;
माया निहाळी एहनी, मानव कदी नव भूलता,
रात्रि अने दिन एहनां, स्वप्नां महीं सौ झूलता. ७

गभरु अवस्था बाल्य वयमां, सर्व छोडी निसर्या,
मातृ पितु स्नेही सबंधी, मन विषे ए विसर्या;
ममता बुरी संसारनी, ए भान अंतरमां थयुं,
फरता हता वन वृक्ष त्यां, गुरु देवनुं शरणुं भयुं. ८

वय आठ वर्ष सुधी अरे! ए ढोर जंगल चारता,
जन्मे हता आहिर पण कंई, आत्म आहिर नव हता;
धन्य आहिर जातने, हो! धन्य आहिर ज्ञातने,
धन्य एनां मातने, हो! धन्य एना तातने. ९

चंडाळमां जन्मेल नर, चंडाळ नव कहेवाय छे,
वैश्नवपणुं धरनार नर, विश्नु नहि कहेवाय छे;
जे कर्म बुरां आचरे, ते नर खरो चंडाळ छे,
आचारथी जे शुद्ध छे, तेनो उंचो अवतार छे. १०

पुन्य आहिरना खीत्या, ए विश्वना साधु बन्या,
मस्ति जगावी आत्ममा, मृत्यु तणो भय विसर्या;
साची धूनी परमात्मनी, ए शोध माहे निसर्या,
आ देहनी माया अने, ममता बधी ए विसर्या. ११

त्यागी बन्या ए सोळ वर्षे, जैन दीक्षा आचरी,
शांतिविजयना नामथी, आ विश्वमा हाकल करी;
नव भेद जाण्यो कोईमा, सहु विश्वना महेमान छे,
निज आत्मने अपनाववो, ए वीर नरनु काम छे १२

अध्यात्म योग पीछाणवा, ए घोर जगलमा फर्या,
मतभेद सर्वे त्यागीने, ए आत्म माहे उतर्या,
साधक बन्या जे पूर्वमा, ए मार्ग अतरमा वर्यो,
पत्थर अने पहाडो विषे, ओमूकारनो दीपक धर्यो १३

आहा ! अजब आनदमा, मस्तान थई ए नाचता,
निर्जर भयानक वन विषे, ए सिंह थईने राचता;
एकलो आव्यो जवानो, एकलो निश्चय खरे।
साधीश जो कई आत्मनु, तो देहनु सार्थक खरे। १४

वर्षो सुधी ए मौनमा, रात्रि दिवसने गाळता,
अभिग्रह भयकर आदरी ने, इद्रियोने वाळता,
स्वादो तजी सहु जीभना, वर्षो थकी तप आचर्या,
उपसर्ग नदीया फारमा पण, मन विषे ए नव डर्या १५

साधु थवुं ए दोहीलुं, पण वेष सजवो स्हेल छे,
तीक्ष्ण धारे नाचवुं, एथी वधु ए खेल छे;
आत्मने साधु बनावे, तेज साधु थाय छे,
जे आत्मने समजे नहि, ते विश्वमां अथडाय छे. १६

आत्म तत्व पीछाणवु. ए मार्ग शूरवीरनो अरे!
झूकवुं खरेखर मस्तिमां, ए मार्ग वीरलानो खरे!
नवकाम त्यां कायर तणुं, ए वाड कंटकनी अरे!
हींमत धरी आगळ वधे, ए वाड ओळंगे खरे! १७

कंटक तणी वाडो गुंदीने कोक वीरलो चालतो,
ए तीक्ष्ण धारोने वींधीने, कोक वीरलो हालतो;
कंटक थकी पण दोहीलुं, साचुं रसायण आत्मनुं,
सौ औषधीथी दोहीलुं, साचुं रसायण आत्मनुं. १८

भट्ठी पुरी पकवे नहि, तो सर्व निष्फळ जाय छे,
काचुं कदी लेवाय तो, आखुं शरीर कहोवाय छे;
अभिमान आवी जाय तो, पळमां वधुं धावाय छे,
अंकुर आवी जाय तो पण, सर्व निष्फळ जाय छे. १९

साची कसोटी आत्मनी, स्हेवुं खरे मुश्केल छे,
निज मस्तिमां जाग्रत रहीने, साधवुं मुश्केल छे;
दुनियातणो संसर्ग छोडी, जीतवुं मुश्केल छे,
आ सर्वमां विजयी बने तो, मोक्ष मळवो स्हेल छे. २०

ओम्कारना साचा सूरोना, तानमा ए नाचता,
अतर मही वाजींत्र एना, रातदिन उच्चारता,
ओम्कारनी मस्ति मही, ए ध्यानमा लय पामता,
ओम्कारना साचा स्मरणथी, पुर्ण रसमा जामता २१

ओम्कार सर्वे मत्रमा, राजा समो कहेवाय छे,
ओम्कार सर्वे मगळोमा, आद्यपद कहेवाय छे,
ओम्कारमा विश्नुमहेश्वर, सर्व आवी जाय छे,
जैनोतणा सिद्धातमा, परमेष्टि पद कहेवाय छे. २२

ओम्कार आखा विश्वनो, साचो अमोलो मत्र छे,
ओम्कार आत्म सुधारणानो, एक साचो यत्र छे;
साधु अने सन्यासीनो, साधक खरो ए मंत्र छे,
अवधूत अने योगीजनोनु, गान ए पण मत्र छे. २३

ओम्कारनी शक्ति थकी, सौ कार्य सिद्धि थाय छे,
ओम्कारनी शक्ति थकी, सात्विक बळ प्रेराय छे;
ओम्कार माहे देवदेवी, सर्व आवी जाय छे.
ओम्कारना ध्याने करी, सर्वत्र शाती थाय छे. २४

आहा ! अजब ओम्कारछे, आहा ! गजब ओम्कारछे,
सहु कार्यनो साधक वळी सम, एक ए ओम्कार छे,
ओम्कार सारा विश्वनु पूजनीक बळ कहेवाय छे,
ओम्कार केरा जापथी, मानवजीवन पलटाय छे. २५

रुपीओ अने योगेश्वरो, ए साधता निश्चय खरे,
पण मानवी निश्चय करे तो, कंईक भास करे अरे;
सारा जीवननो सार सहु, ओम्कारमां देखाय छे,
निज हर्षथी भजतां थकां, आनंदमंगल थाय छे. २६

ॐकार तारा ध्यानथी, कंई वीरनर साधी गया,
ॐकार तारा ध्यानथी, कंई आत्ममां जामी गया;
ॐकार तारा ध्यानथी, कल्याण साचुं थाय छे,
ओम्कार तारा ध्यानथी, परमात्मपद लेवाय छे. २७

ओम्कार तारी शक्तिनुं, वर्णन खरेखर शुं करुं,
ओम्कार तारी भक्तिनुं, वर्णन खरेखर शुं करुं;
ओम्कार तारा ध्याननी, भिक्षा खरे माग्या करुं,
गुरुकृपा जो थाय तो, ए ध्यान अंतरमां वरु. २८

आत्मनी साची धूनीमां, परमपद गुरु पामीया,
वर्षों सुधी मस्ति करीने, पुर्ण रसमां जामीया;
सिद्धि खरेखर अंतरे, वाधी पुरी ओम्कारथी,
लब्धी खरेखर अंतरे, वाधी पुरी ओम्कारथी. २९

मृत्यु समां कष्टो सही, ए वीर साचा निवडया,
जंगल अने पहाडो फरी, ए धीर साचा निवडया;
शांतीतणी साची सरिता, अंतरे उभराई रही,
शांतीतणी छोळो शरीरना, रोमेरोम वही रही. ३०

विश्वप्रेम तणो झरो, आहा ! अजब छलकई रह्यो,
समभाव रसनु पान पी, मानव समूह हर्षई रह्यो;
विश्वना सहु प्राणीओ, निज सम अरे ! ए मानता,
उंच नीच के निर्धन, बधाने एकरूप पीछाणता. ३१

जगतना चारे खूणे, सौ गान गुरुनु गाय छे,
दर्शन करीने एहना, मानव पुरा हरखाय छे;
नयनो अजब जादु भर्यां, अदभूत प्रेम वहाय छे,
ए प्रेमनी छोळो महीं, सहु स्नान करता जाय छे. ३२

वचनामृतो गुरुदेवना, अमृतसमा वरसाय छे,
कर्मो थकी सळगी रह्या, मानवजीवन बुझवाय छे;
ओम् ह्रीं अर्हं तणा, साचा सूरो भजवाय छे,
भक्ति अने नीतितणा, शास्त्रो खरे उजवाय छे. ३३

गुरुदेवना उपदेशमा, सहु सार आवी जाय छे,
विश्वमा सहु मानवी, सूणता थका हरखाय छे;
ममता हृदयथी त्यागीने, समभाव रस रेडाय छे,
अहंभाव अंतरथी तजी, सहु एक आलेखाय छे. ३४

आहा ! अजब ! गुरुदेवनी, भक्ति नवे भजवाय छे,
ए भक्तिना साचा सूरो, चारे तरफ गजवाय छे,
भक्ति तणी कींमत नथी, भक्ति खरे पूजवाय छे,
अंतर थकी भक्ति करे तो, मेल सहु धोवाय छे. ३५

स्वार्थने छोडी भजे तो, कंईक सिद्धि थाय छे,
पण मोह मायाथी भजे तो, रोझ सम अथडाय छे;
आशा अने तृष्णामहीं, आखुं जगत होमाय छे,
अंतर खरे ! निर्मळ बने तो, सर्व आवी जाय छे. ३६

आशा अभागी मानवीने, मोहमां पटके खरे,
आशा तणा पासा महीं, मानव बधे भटके खरे;
आशा अमर जाणी बिचारो, मानवी अथडाय छे,
आशा तणी जंजीरमां, ए रात दिन रोळाय छे. ३७

आशा अजब जंजीर छे, आशा जीवननुं तीर छे,
आशा रुपी बाजी महीं, जे जीतीया ते वीर छे;
आशा तणी बाजी अहो ! चारे तरफ खेलाय छे,
पासा पडे सवळा नहि तो, सर्व हारी जाय छे. ३८

आशा तणा पडदा तळे, आखुं जगत नाच्या करे,
आशा तणां फळ चाखवा, मानव अहो ! राच्या करे;
आशारुपी तीर वागतां, मानव पूरो वींधाय छे,
महा पुन्यशाळी होय तो, ते पार पामी जाय छे. ३९

आहा ! दीपक आशा तणो, चारे तरफ सळगी रह्यो,
आहा ! दीपक आशा तणो, मानव हृदय झळकी रह्यो;
आशा तजीने कोक वीरलो, आत्मनुं साध्या करे,
पण मुक्तिनी साची, अभीलाषा पूरी पने खरे. ४०

आशा तणी वाजी तजी, गुरुदेव श्री साधी गया,
दुनिया तणी जजीरथी, ए सर्व आराधी गया;
आशापुरी मुक्ति तणी, ए शोधमा फरता फरे।
माया तणा वधन थकी, ए आश उंच्च अहो! खरे. ४१

हिंसा करावा बंध गुरुए, विश्वमा हाकल करी,
सत्यना साचा दीपकुनी, ज्योत विश्वमहीं धरी,
लख्खो मनुष भील ज्ञातिना, हिंसक खरे अपनावीया,
ओम्कारना शुभ मंत्रथी, सहुना जीवन पलटावीया ४२

ओम्कारनो डको वजावी, राजवी पावन कर्या,
हिंसा करावा वध, सूत्रो जीवदयाना पाठव्या,
कई रोगीओना रोग सहु, आशीषथी चाल्या गया,
मृत्यु बिछाने सूई रहेला, मानवी जाग्रत थया. ४३

मरुधर भूमि पावन करी, डको वजाव्यो देशमा,
मस्तिपुरी निज ध्याननी, झळकी रही छे वेषमा;
रात्रि दिवस पळपळ विषे, गुरुध्यानमा लय थाय छे,
ओम्कारना अदभूत बळथी, ज्योत झळकावाय छे. ४४

आ विश्वना चारे तरफ, जयघोष घरघरमा कर्यो,
ए कार्यमा सिद्धि थवाने, योगने आगळ धर्यो,
ज्योती खरेखर योगनी, आ विश्वमा प्रसरी रही,
लख्खो जीवो उगर्या अहो! तेमा जरा शका नहि. ४५

शक्ति अजब ! त्हारी प्रभो, गुणग्राम पामर शुं करुं,
भक्ति करी हुं ताहरी, अंतर विषे राच्या करुं;
मेरु समो त्हें भार लाध्यो, कल्पना पण क्यां करुं,
बींदु अरेरे ! एहमांथी, वहन हुं केमे करुं. ४६

गङ्घा समो अवतार मारो, जीवन सहु एळे गयुं,
पण पुन्य कंईक कर्यां हशे, तो शरण त्हारुं सांपड्युं,
वळता जीवनमां तें प्रभो, शांती करी साची अरे !
त्हारा विना आ जगतमां, कीरतार साचो नव खरे ! ४७

दोरी लीधी छे हाथतो, मुजने कदी नव चूकजे,
निरधार बाळक ताहरो, रस्ता विषे नव मूकजे;
दोषो अति मारा प्रभो !, मागु क्षमा अंतर विषे,
आ दीन तणो आधार तुं, तारक प्रभो साचो दीसे. ४८

पकडी हवे त्हें दोर तो, भवपार बाळ उतारजे,
मुज पापीना दुर्गुण कदापी, अंतरे नव धारजे;
पागल बन्यो तुज भक्तिमां, कंई मार्ग नव सूझतो अरे !
तुज भक्तिरसना पानमां, आनंद मंगल छे खरे ! ४९

साची कृपा त्हारी हती, तो कंईक हुं आगळ वध्यो,
भक्तितणी मस्तिमहीं, हुं छंद पूर्ण करी शक्यो;
बाळक पीता पासे हृदयथी, लाड भाव कर्या करे,
तीम बाळ किंकरदास त्हारा, तानमां नाच्या करे. ५०

॰

आभार दर्शन

स्हायक मित्रो !

प्राणप्रभुनी दिव्य कृपानुसार "भक्तिरस काव्यो" अने आत्मचिंतन पदोनी एकहजार प्रत टुक समयमा ज पूर्ण थवाथी त्रीजा पुस्तकनी योजनामा गुथायो

तन मन अने धनपूर्वक जे मित्रोए मने स्हायता करी मारा आरंभेल कार्यमा फळीवुद्ध बनाव्यो छे तेओना आभारनी तुलना हु करी शकतो नथी. प्रिय मित्रोनी जहेमत अने आदर्श हाकलनु ज आ एक रेखाचित्र छे. प्राणप्रभु ! प्रत्येक शुभ कार्योमा ए मित्रोने उदारशील बनावे एटली ज अभ्यार्थना

मारा प्रिय मित्र भाईश्री भोगीलाल पानाचंदे प्राणप्रभु प्रत्येनी पोतानी भक्तिनी धखश अने अतरनी उर्मिओ साथे रचेल काव्य कळानो मारा अज्ञात अने पागल जीवनमा लखाएल पुस्तकमा समावेश करी मारा कार्यने शोभाव्युं छे, तेओनो आभार हु आ स्थळे भूलतो नथी.

जेओनी नोकरीमा रही हु मारु व्यवहारु जीवन दिपावी रह्यो छुं ते मारा आत्म प्रिय शेठजी वकील श्रीयुत हिंमतलाल प्रभाशंकर शुक्ल के जेओनी नोकरी वफादार नोकर तरीके नहि बजावता बधु समय आवा ज कार्योमा वीतावु छु. मारी धगशने तेओए स्वयपणे पीछाणेली छे एटले ज आवा कार्यो

हुं तेओनी छत्रछायामां पुर्ण करी शकुं छुं. तेओनो आभार लखवा मात्रथी वळी शके तेम नथी. तेओना आभार नीचे ज मारुं व्यवहारु जीवन दिपावुं छुं.

मारा प्रिय मित्रोनी धर्मभावनाने लईने ज आ पुस्तक प्रसिद्ध करी शक्यो छुं. तेनो क्रम एवी रीते छे के पुस्तकना खर्चना प्रमाणमां ज चोपडीनी किंमत नक्की करी छे अने तेनां जे नाणां आवे ते स्हायक मित्रोनी मूळ रकमने कायम राखी अने वीजी आवृत्तिओ तेमांथी प्रसिद्ध करवी एज आशय अने हेतुने शीरोधार्य करी आ पुस्तक वांचको समक्ष रजु करुं छुं.

वांचक मित्रो व्होळा प्रमाणमां आ पुस्तको खरीद करी मारा श्रमने यथार्थ वनावशे एटली ज भिक्षा याचतां विरमु.

आश्विन कृष्ण
संवत १९९४
अमदावाद

आप सर्व मित्रोनो
आभार पात्र
किंकरना जयवंदन

टुंक नोध

परम कृपाळु श्रीमद गुरुदेवना कृपावृक्षनी अद्वैत छायामां रमण करता "भक्तिरस काव्यो अने आत्मचिंतन पदो" सुधारवानु कार्य हस्तमा लीधु

गुरुश्रीनी वखतो वखतनी मीठी सुवास अने उत्साहनी छोळो मारा रोमे रोममा वहावता आ भक्तिरस थाळ वाचको समक्ष मूकी शक्यो.

जेओने हु मारा प्राणप्रभु तरीके स्वीकारु छु ते महान योगीराज, तिर्थरुप, परमकृपाळु गुरुदेव श्रीमद विजय-शांतिसुरीश्वरजीना कृपावृक्षने मारा मनोमदिरमा रोपवाने दशदशवर्ष पूर्वनी आ अपूर्व तैयारीओ चाली आवता भक्ति-रुप जळद्वारा जीवन ज्योतने झूकावी.

लावा समये, कृपावृक्षने खीलावता तेना फळनी आशाए आगळ वध्यो चपाना वृक्षने ज्यारे पुष्प उपार्जीत थाय छे त्यारे तेनी वासना उत्तम सुवासथी नाशीकाने भरपुर बनावे छे, तेवी ज रीते भक्ति पुष्पनी म्हेक अने वैराग्य रुप वानगी साथे भक्ति रस थाळने केटलेक अशे पुर्ण कर्यो.

"भक्तिरस काव्यो अने आत्मचिंतन पदोमा अवारनवार सुधारो वधारो तेम केटलाक मूळ विषयमा परी-वर्तन थवाथी आ पुस्तकना नाममा फेरफार करवानी मारी

आंत्रीक जीज्ञासाने अमलमां मूको तेनुं नाम " वैराग्य तरंग अने गुरु काव्य गूंजन "ना नामथी संबोधा वांचको समक्ष मूकवा मारी भावना श्रेय करी.

आखाए पुस्तकमां काव्यो अने पदो घणी ज सरळ अने सादी भाषामां रचाएल होवाथी सामान्यमां सामान्य मानव स्हेलाईथी समजी शके तेम छे. वधु नहि लखतां आटलेथी ज मारी नोंध पुरी करी आंत्रीक उछरंग वहावतां वैराग्य तरंग अने गुरु काव्य गूंजनमां प्रवेशुं.

लखवामां हस्तदोष थयो होय अगर प्रुफ सुधारवामां न्यूनता जणाय ते स्थळे मारी अज्ञानता अने भूल बदल वांचक पोते ज विचारी लई क्षमानी द्रष्टिए निहाळशे एटली ज प्रेम भिक्षा याची विरमु.

नथी विद्वान के वक्ता, कविनु ज्ञान अंतरमां,
न जाणुं शास्त्र पींगळनां, लखुं छुं सर्व मस्तिमां;
बनावी भक्तिमां पागल, जीवन आगे धपावुं छुं,
जीवन जादव प्रभो शांति, हृदयमां एक ध्यावुं छुं.

फतासा पोळ
नवी पोळ
अमदावाद
संवत १९९४
आश्विन कृष्ण

किंकरना जयचंदन.

आंत्रिक उर्मीओ

गझल

अजव ! मस्ती जीवन जागी, अखडानद उभरायो,
वह्या झरणा कृपा सिंधु, रच्या काव्यो अति हर्षे. १

नथी विद्वान के वक्ता, कवितु ज्ञान अतरमा;
कृपा ए ईष्टनी प्रगटी, रच्या काव्यो अति हर्षे. २

भ्रमण करतो हतो जगमा, मळया महापुन्यथी साचा;
प्रभो ए दिव्यनी छाया, रच्या काव्यो अति हर्षे. ३

हतो हुं शोधमा जेनी, गुरुवर ए मळ्या मुजनें;
प्रभो ! शाति सूरीश्वरजी, रच्या काव्यो अति हर्षे ४

समर्प्यु छे जीवन सघळुं, स्वीकार्या अतरे म्हारा;
जीवन तारक प्रभो साचा, रच्या काव्यो अति हर्षे ५

परमहर्षे पड्यो चरणे, मूक्यु मस्तक कृपा सिंधु,
छपाव्यो बोध अतरमा, रच्या काव्यो अति हर्षे. ६

सदाए दिव्य झरणाथी, तृपा म्हारी छीपावु छु,
करु छु स्नान हु एमा, रच्या काव्यो अति हर्षे. ७

अरे हु मूढ बुद्धिनो, नथी कई ज्ञान म्हारामा,
अकारो लागतो सहुने, रच्या काव्यो अति हर्षे ८

वन्युं आ शु प्रभो आजे, अजव शक्ति खीलावी छे,
पुरी मस्ती जगावी तें, रच्या काव्यो अति हर्षे. ९

जीवननी सर्व घटनाओ, कीधी आगे प्रभो मुजने;
पीलाव्यो भक्ति रस साचो, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १०

जीवननाटक वन्युं दुलहु, पूरो नाच्यो प्रभो एमां;
शरण त्हारुं स्वीकारीने, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ११

प्रभोए दुःखसुखे प्रगटयां, कराव्युं भान अंतरमां;
चढाव्यो भक्तिमां आगे, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १२

खीली बुद्धि प्रभो मारी, नथी वर्णन कह्युं जातुं;
वन्युं मुज शक्तिनी वहारे, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १३

नथी मारी प्रभो शक्ति, वस्यो तुं अंतरे साचो;
करावी सर्व रचना तें, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १४

बतावी दिव्य घटनाओ, अगम संदेश आप्यो छे;
निहाळुं ते मुजब सर्वे, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १५

मळया बहुधा रुपे मुजने, समय समये लीला न्यारी;
अजब! दर्शन करी त्हारां, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १६

प्रभो! आ दीनबाळकना, तमे कीरतार छो साचा;
अवरथी काम नहि मुजने, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १७

प्रभो! हुं आपने मानुं, त्रिभुवन आपने जाणुं;
अरे! सर्वस्व पीछाणु, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १८

विषय अध्यात्मनो लीधो, न जाण्यो भेद अंतरमां;
प्रभो! में आपने स्थापी, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १९

गुणानुवाद करवाथी, कदापी पार नहि पामु;
गजन शक्ति प्रभो त्हारी, रच्या काव्यो अति हर्षे २०

हु तो भांडुत छु भाई, प्रभो ! मालीक छे मारा,
लखावे तेम हु लखता, रच्या काव्यो अति हर्षे २१

अरे ! अंजीन छु हु तो, प्रभो छे हाकवावाळा;
चलावे तेम हु चालु, रच्या काव्यो अति हर्षे. २२

प्रभुनो रथ बन्यो छु हु, प्रभो छे नाथ जीवनना,
दोरावे तेम दोरातो, रच्या काव्यो अति हर्षे. २३

नथी आ माहरी शक्ति, प्रभुनी सर्व माया छे;
हुकमनु पान फाधुं छे, रच्या काव्यो अति हर्षे २४

पुरा पूजनीयने लायक, प्रभोने मानजो सर्वे;
हुं तो पामर कीडो जगनो, रच्या काव्यो अति हर्षे २५

कदापी उर नहि आणो, करी छे में सहु रचना,
चरणरज सर्वनो हु तो, रच्या काव्यो अति हर्षे. २६

दया दीन पर त्पावीने, करो सहु दोषने माफी;
कहे छे दास सर्वेनो, रच्या काव्यो अति हर्षे २७

कदी अभीमान नव आवे, प्रभो ए शक्तिने प्रेरो,
बनावो मीट्टीसम मुजने, रच्या काव्यो अति हर्षे २८

जगतना नाश सुखोनी, नथी आशा प्रभो मुजने,
स्पृहा राखु कदापी नहि, रच्या काव्यो अति हर्षे. २९

जीवन मारुं रडे आजे, प्रभोनी भक्तिने काजे;
सदा मुज रोममां गाजे, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३०
कदापी हुं भूलुं तुजने, विसारो नहि प्रभो मुजने;
निरंतर राखजो घटमां, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३१
नथी आधार बाळकने, प्रभो त्हारा विना साचो;
जीवनतारक तमे मारा, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३२
प्रभो! निरधार बाळक छुं, नथी त्हारा विना मारे;
दया अंतर विषे धारो, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३३
जीवन दोरी मूकी चरणे, करो भवपार बाळकने;
न छोडुं प्राणना भोगे, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३४
उगारो के प्रभो मारो, छतां हुं छुं सदा त्हारो;
जीवनथी पार उतारो, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३५
कदापी नव भूलो किंकर, त्हमारा दीन बाळकने;
पडुं छुं पाय करगरतो, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३६

प्रस्तावना

भारत वर्षमा चालता वीतडावादमा महान पुरुषो जवल्ले ज मळी आवे कदापि मळी आवे तो तेओनी ओळख करवी ए पण महद् पुन्यनो योग होय तोज बनी शके

दश वर्ष पूर्वे आ सस्मरणो मारा जीवनमा भ्रमण करी रह्या हता. सवत १९८४ नी सालमा ए महान अवतारी पुरुष महात्मा गुरुदेव भगवत श्री विजयशांतिसूरिश्वरजीना पवित्र दर्शननो भोगी वन्यो अने मारी आतर तृपाने सतुष्ठ करी.

विश्वनी द्रष्टिए एम पण मानवामा आवे छे के " हरि-ष्यामी " जो तु तारा अंतःकरणथी गुरु करवानी ईच्छा धरावतो होय तो प्रथम गुरु त्हार पहेरेला वस्त्र उतारी लई निर्धन अवस्थामा मूकी देशे. मृत्युना अत सुधी सहन करवानी शक्ति धरावतो होय तोजतु अंतःकरणथी गुरु करजे.

प्रस्तुत कथन मारा हृदयमा प्रथमथीज रमी रह्यु हतुं. जगतना क्षणीक सुख अने नाशवत मायानी स्पृहा मात्र राख्या शिवाय आत्मतत्व गृहण करवानी मारी आत्रिक अभीलाषा हती

"हरिष्यामी" करवानी तो मारामा यत्कीचीत स्पृहा मात्र हजु सुधी जागी नथी छता भक्तिमाज पागल वनी मस्त जीवनमा तलीन रहेवुं एज आत्रिक ध्येय हतो अने छे.

आ महान पुरुषनी त्याग वृत्ति, आत्मधून, विश्वप्रेम अने जगत कल्याणनी आदर्श भावना निहाळतां पूर्व समयमां थएल महान पुरुषो पैकीना तेओश्री एकज छे.

आ महान पुरुषना सहवासमां लांबा समय सुधी रही में मारी मानव जातने पावन बनावी छे. तेओश्रीना वधु गुण-ग्राम नहि करतां एटलुं तो चोक्कस जणावीश के आ कळीयुगना विषम समयमां एक महान् अवतारी पुरुष तरीकेज तेओश्री पोतानो जीवन प्रवाह दिपावी रह्या छे. कोईपण प्रकारना मत मतांतर अने जातीना भेद भाव वगर मैत्री भावनो झरो वहावी रह्या छे.

युरोपीअन पारसी मोमेडन हींदु आदी हरेक कोमना मानवो तेओश्रीने एक महान अवतारी पुरुष तरीके स्वीकारे छे अने पूज्य माने छे.

आ महान पुरुषना कृपा वृक्षने मारा मनो मंदिरमां खीलावतां खीलवतां तेओश्रीनी परम कृपा अने अमूल्य वानगी द्वारा भक्ति रसथाळ प्रथम जुदी जुदी द्रष्टिए वांचको समक्ष मूक्यो हतो.

सम्राट काव्य माळा भाग १ लो बीजो भक्ति तरंग अने भक्तिरस काव्यो तथा आत्मचिंतन पदो ए भक्ति रसथाळनी भीन्न भीन्न वानगीओ हती, ते पुर्ण थवा बाद आ "वैराग्य तरंग अने गुरु काव्य गुंजन"मां एकंदरे त्रण विषयो जुदा जुदा स्वरुपे आलेखवामां आव्या छे.

प्रथम वैराग्य पद तरगमां हरेक जीवात्माने ं भासे नहि तेवी रीते नाशवत जगतना वैभवो, चपळ लक्ष्मी, माया अने मोहना भयानक युद्धो, कुटुंव अने परिवारनी पाछळ पागल बनी अधदशामा भ्रमण करतो मुसाफीर, जीवन अने मुक्ति, आदी भीन्न भीन्न विपयो द्वारा पदो रची तेना शब्दे शब्दे वैराग्य रस रेडयो छे. जेने एकज वखत वाचवाथी मानवना रोमे रोम खळभळी उठे. वैराग्य तरगनीए अणमोल वानगी छे.

द्वीतीय गुरु काव्य तरंगमां गुरु भक्तिनी अखड ज्योत झळकाववामा आवी छे गुरु एटले भव समुद्र तरवानी साची दीवादाडी " गुरु एटले जीवन नैया पार करवानी भक्ति रुप होडी " गुरु एटले आत्मानो साचो मार्गदर्शक " गुरु एटले वळता जीवननी शात भरी भूमीका " गुरु एटले दुःखनो साचो विश्राम " गुरु एटले ब्रह्मा, विश्नु, महेश, महावीर, कृष्ण, क्राईस अने जरथोस्त आदी सर्वं गुरुमा ज आवी जाय छे प्रभु या ईश्वर करता गुरुने प्रथम द्रष्टिए पूजनीय मनाय छे कारण के गुरु आत्माना साचा मार्गदर्शक छे. हरेक धर्ममां गुरुपद उच्च अने जीवन तारक मनाय छे ए गुरु भक्तिनो अद वैतरस गुरु काव्योमा रेलमछेल वहाव्यो छे जे गुरुभक्तिनी अणमोल वानगी छे.

तृतीय श्री शांतिसूरीश्वर काव्य तरग आ महान पुरुप के जेओने हु मारा प्राण प्रभु तरीके स्वीकारु छु ते महान

पुरुषनी त्याग वृत्ति, आत्मधून, विश्वकल्याणनी भावना, आदी विषयोने काव्योमां रची तेओश्री प्रत्येनी मारी आंत्रिक रोशनी प्रगटावी छे के आ सर्व तेओश्रीनी:मारा मनो मंदिरमां रमण करती कृपानो अंकुर छे.

कवीत्व शक्ति शब्दकोष अगर विद्वत्ताना अंश मात्र ज्ञान सिवाय मारा प्राण प्रभुनी कृपापात्रतानोज आ भक्ति रसथाळ छे.

वांचको हर्षथी वांचे अने आत्म मस्तीने खीलावी सत्यना पंथे आ भक्ति रसथाळनी अणमोल वानगीनुं शेवन करी क्षुधातुर आत्माने शांतत्व पहोंचाडी नीरंतर आत्मानुं ज साधे एटली ज अभ्यार्थना.

फतासा पोळ
नवी पोळ
अमदावाद
संवत १९९४
आश्विन कृष्ण

किंकरना जयवंदन

परम कृपालु श्रीमद गुरुदेव माटे

अभिप्रायो

चमत्कारिक जैन योगी

अठवाडीक गुजराती पत्र अमदाबाद, ता ६-१-३६ना अंकमाथी

आधुना जाणीता जैन योगीश्री विजयशातिसूरीश्वरजी महाराज हालमा मारवाडमा सरस्वती अरण्यमा बीराजे छे आ योगीराजे एक दिवस एक हजार माणसोने आमत्रण आप्यु हतुं परतु पाच हजार माणसो त्या भेगा थवाथी भोजन करनाराओ फीकरमा पड्या हता परतु योगीराजे तेमने खात्री आपी हती के राधेलो खोराक जेटला आवशे ते बधाने पुरो पडशे आ मुजब ५ हजार माणसाए भोजन कर्या छता पाछ-ळथी ५०० माणसो घराईने खाय तेटलुं वध्यु हतु.

ॐ

आचार्य श्री विजय केसर सूरीजीना अतिम उदगारो

आत्मोन्नतिकारक वचनामृतोमाथी

पाचमनी सवार थई झाडा बध थई गया हता पोते पोताना समुदायने जणाव्युं के आवुथी शांतिविजयजी आवीने मने मळी गया अने तेओए कह्यु छे के हवे जवानी तैयारी करी लो. प्रथम में तेओने एक समय कह्यु हतु के मारा अत समये मारी खबर लेजो

तपस्वी मुनिश्री मिश्रीलालजीना आंत्रिक उदगारो

वांचकनी विचारसृष्टी अठवाडीक स्थानकवासी जन अमदावाद तारीख ११-१-३७ मांथी

२५६मा उपवासनी रात्रे मने एक दिव्य प्रकाश देखायो तेमां आबुवाळा योगीराज आचार्यश्री विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराजनां दर्शन थयां तेमणे आदेश आप्यो के तमारी हठ छोडी दई पारणु करो. आथी पूर्ण श्रद्धा थई के गुरुदेवनो जे हुकम छे तेनो कुदरत साथे संबंध छे.

प्रथम ज्यारे आबुथी तारद्वारा ते योगीराज गुरुदेवे पारणु करवानी आज्ञा करी, त्यारे हुं एक विश्वप्रेमी महापुरुष तरीकेनी श्रद्धाथी पर हतो, ज्यारे हुं तेमनी पासे रह्यो, तेमना समागममां आव्यो, त्यारे पण मने संपूर्ण श्रद्धा न हती अने हुं एम समजतो के तेमनो अने मारो धर्म जुदो छे. तेम बीजी अनेक शंकाओ साथे केटलाक माणसो तेमनी विरुद्ध बोलता होवाथी ते पुरुषनी यथार्थतानी मने पुरेपुरी श्रद्धा न हती.

परंतु २५६ मा उपवासे मने तेमनो भास अने प्रकाश थवाथी मारो तेमना प्रत्ये जगतना महात्मा पुरुषो पैकीना एक होवानो विश्वास स्थापीत थयो. अने तेथी तेमनी आज्ञाने कुदरतनी प्रेरणा समजी में २५८ मा उपवासे पारणु कर्युं छे.

कवाली

जीवन जादवनाथ मारा, नमन करु हु लळी लळीने;
प्राण प्यारा प्रभु अमारा, चरण पडु हु वळी वळीने. १

आत्मपथे अजर आधी, शाम घोर लता छवी;
कर्म दूतो नाच करता, केर कालो करी करीने २

अगम पथे प्रयण करवु, ए वीरोनु धाम छे;
क्रोध किल्लो तोडवाने, क्षमा कटोरा भरी भरीने ३

ध्येय मारो एक छे जे, नाम त्हारु नव भूलु,
ध्यान त्हारु नित्य साधु, भक्ति रसने भरी भरीने. ४

अकळ माया अकळ छाया, अवनवी ज्योती झरे,
अध नयनो नहिं नीरखता, कर्म कचरो भरी भरीने. ५

परतणु अतर दुभावे, एज मोटुं पाप छे,
एज आजे हु नीरखतो, दिव्य अजन करी करीने ६

तार या तु मार तोपण, तु अमारो एक छे,
बाळ किंकरदास त्हारो चरण पडे छे वळी वळीने ७

में मारी जींदगीमा कोई अद्भूत वस्तु जोई होय तो ते योगनिष्ठ महात्माश्री शांतिविजयजी ज छे. तेओ बाह्यतः केवा मामुली-देखाय छे, अने ज्यारे पोते वातो करे छे त्यारे एक साधारणमा साधारण माणस बोलतो न होय एम लागे

छे, देखाव पण तेओश्रीनो कुदरती एवोज छे, एटले जगत स्हेजमां भूलथाप खाई जाय छे एमां कांई नवाई नथी. पण मने तो एम लाग्युं के आतो कोई उंच कोटीना महान् आध्यात्मिक ज्ञानना भंडार छे. एवा महान् पुरुषोने आपणे स्हेजे ओळखी शकीए नहीं. कारण के तेओ पोते योगमां, तेमज आध्यात्मिक ज्ञानमां एटला बधा उंडा उतरेला छे के अढार अढार मास सुधी तेओना पासे रहीने एक विद्वान् माणस पण संपूण समजी शकतो नथी. हालना आटला बधा साधुओमां एओ पोतेज योग क्रिया तथा आध्यात्मिक ज्ञाननी बाबतमां मोखरे छे. " एवा महान् योगीश्वरजीने समजवा माटे महान् शक्तिवाळो आत्मा घणा लांबा टाइमेज कांईक सहेजे समजी शके छे."

आचार्य श्रीमद् विजय केसरसूरीजी

ॐ

महाराज श्रीशांतिविजयजी महाराजना समागममां आववाने तथा तेओश्रीनो उपदेश सांभळवाने हुं भाग्यशाळी थयो छुं. तेओश्री एक उत्तम योगी पुरुष छे, अने तेमनु चारित्र घणी उंची कोटीनुं छे, एवा महर्षिनां प्रवचनो समुदाये सांभळवाथी जेम औषधिथी शरीरनुं दर्द अने मलीनता दूर थई आरोग्य अने निर्मळ बन छे, तेम जन समाजनी मानसिक

मलिनता दूर थई जीवन आरोग्य अने सुखी बने छे. एवा महान पुरुषो आपणामा वधारे अने वधारे थाओ अने तेमना पवित्र जीवन अने आदर्श उपदेशथी जनसमुदायनु जीवन वधारे नीतिमान अने सुखमय बनो एवी मारी चाहना छे.

महाराजा लखधीरजी, मोरवी

योगनिष्ठ मुनि महाराज श्री शान्तिविजयजीना समागममा हु छेल्ला छ सात वर्षथी आव्यो छुं ते उपरथी हु जोई शक्यो छुं के तेओश्री एक उच्च कोटीना महापुरुष छे. योगाभ्यासथी प्राप्त थती विश्वदृष्टि (Clair doyance) तेओश्रीए मेळवी छे अने तेना बे दाखला मारा अगत अनुभवथी में जोया छे तेओश्री सरल प्रकृतिना एक योग-परायण सत पुरुष छे. हु ईच्छु छुं के अधिकारी सज्जनो तेमना पवित्र सवधमा आवी तेमनी आत्मिक उच्चतानो लाभ मेळवे.

सर दोलतसिंहजी महाराजा, लींवडी

में दुनियाना दरेके दरेक देशनी मुसाफरी करी अने घणा घणा महान पुरुषोने हु मळी छु, अने छेवटमा पूज्य गुरुदेव महाराज शांतिविजयजीने पण मळी. हमारा पाश्चिमात्य लोकोमा एटलु तो ठीक छे के, हमो बराबर समजीनेज मानीये छीए अमो अमारा मनने पूछीए छीए के (Doubt) दरेक वस्तुमा

शुं छे? मीस मेयोए मधर इन्डीआ नामनी जे चुक लखी छे तेमां लखतां एणे मोटी भूळ खाधी छे, कारण के हिंदमां हजीए आवा देवरत्नो छे, तो पछी एणे शुं बुद्धिथी ए पुस्तक लख्युं हशे? हवे तो हुं एने बराबर जबाब आपीश एटले एनी भूल समजाशे अने जगत सत्य वस्तु सारी रीते समजी शकशे.

(Guruji is a God no doubt)
(गुरुजी परमेश्वर छे, तेमां शक नथी.)

मीस–माइकल पीम
तंत्री, ट्रीब्युट हेरोल्ड, (न्युयोर्क)

दुनियाना महान् आदर्शमां आदर्श पुरुष होय तो ते एक शांतिविजयजीज छे.

कुदरती शक्तिओ खरेखर पूज्य गुरुदेव शांतिविजयजीनेज प्राप्त थई छे.

जो मनुष्य गुरुजीनो खरेखरो दावो करी शके तो शांतिविजयजी खरेखरा गुरुजी कही शकाय.

लाला लजपतरायना उर्दु वंदेमातरम् पत्रमांथी

ओ लोर्ड! ओ प्रभु! आपने मळवुं ते आ जगतना तमाम पवीत्र तत्वोने मळवा बराबर छे, आप एक छो! आप अनंत

छो ! आप शीव छो ! आप कृष्ण छो । आप देव छो ! आप नीर्गुण छो । आप सर्गुण छो ! आप सत्य छो ! आप पवित्र छो । आप उंच छो । आप सर्वस्व छो । अने ते सर्वथी पर ते पण आप छो. आपने पुन्य नथी लागतु तेमज पाप पण नथी लागतु. आपने ओळखवाने माटे लाखो जन्मनी जरुर छे. जो आपनी कृपा थाय तो स्हेजमा आपने ओळखी शकाय ! आपना जे वचनो छे ते तमाम शास्त्रोनो समावेश छे. आ जगतना कल्याण माटे अदृश्यथी आप जगतनी चोतरफ दिव्य संदेश पहोंचाडी रह्या छो.

" आप हायर ओफ धी हायर एन्ड गोड ओफ धी गोड छो "

साउथ केनेरा (दक्षिण आफ्रीका)

(ना पत्रमांथी टुंक सार)

धर्माचार्य दर्शननीधी स्वामी रामदास एम. ए.

योगीश्री शांतिविजयजीनुं मधुर दर्शन

ए एक उच्च कोटीना महापुरुष छे उता बाळकना जेवु निर्मल्स अने गभरु एमनु हृदय छे. महात्माओना लक्षण शास्त्रमा तो गमे तेवा लख्या होय पण बीजे भाग्ये ज जोवामा आवे एवु बुद्धि अने हृदयनुं विचारबळ अने आरो सरल बाळभाव अने आरो सुंदर समन्वय ए मने तो खरा महात्मापणानु स्वरुप छे, एज एमना अने मारा परिचयथी मने लाग्यु छे

ज्यारे ज्यारे हुं एमनी पासे गयो छुं त्यारे त्यारे एमना सानिध्य मगज अने हृदयना भावोनी एकता थई जईने फक्त एमनी सामे जोया करवानी अने एमनुं वक्तव्य सांभळया करवाना भावमात्र सिवाय बीजी कांई वृत्ति उत्पन्न ज थती नथी. दरेक आवनारने एवो भास थई जाय छे एम में जोयुं छे. महात्मा-पणानी एथी विशेष व्याख्या—सामग्री बीजी शुं होई शके ? लोकेषणानी ईच्छाथी तेओ घणा पर छे……..घणा महान् पुरुषोना परिचयमां आववाना प्रसंगो मने बन्या छे, पण एमनुं सानिध्य मने अपूर्व लाग्युं छे. कया अने केटला अभ्यासनुं आ परिणाम हशे ए जो समजाय अने ते प्रमाणे करी शकाय एटली सुगमता जणाय तो तेम करवानुं मन थई जाय एवुं छे.

सर प्रभाशंकर पट्टणी : भावनगर :

ॐ

अल्हाबाद, सोमवार
ता. १५ जुलाई १९३५

अल्हाबाद लीडर पत्रना

अंग्रेजी लखाण उपरथी गुजरातीमां ट्रांसलेशन

पाणी तथा भोजननी चमत्कारीक पुरवणी

मारवाडमां आवेल एरणपुरा नजीक वीसलपुर गाममां जैन धर्मने लगती धार्मिक क्रियाओ करवामां आवी हती. (प्रतिष्ठा ओत्सव) जे वखते हजारो जैनो तथा बीजाओए हाजरी आपी हती.

आ प्रसंगे जैन धर्मना ईतिहासमां नोंधवा लायक बनाव बन्यो हतो

आ नाना गामडामां उनाळाना समये दरेक साल पाणीनी तंगी पडती जेथी आ समये पण आटली नधी मानवमेदनीने पाणी पूरु पाडवाना उपाय शोधवा माटे गामना लोको चिंतातुर बन्या हता.

आ सर्व क्रियाओ आबू पर्वतनी प्रख्यातीवाळा विद्योत्पादक, योगीराज, आचार्य सम्राट, जगतगुरु, योगीन्द्रचुडामणी, गुरुश्री विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराजना शुभ हस्ते थवानी हती. गाम लोको गुरुदेव भगवाननी पासे गया. योगीराजे खात्री आपी के तमारे चिंता करवी नहि.

योगीराज बीजापुरमा पधार्या बाद पाणी पुरुं पाडवानी क्रिया संपूर्ण रीते बाकी हती अने समये नहि तेवी कल्पाभोय पण पाणीनी भरती थई.

सर्व क्रियानी समाप्ति सुधी अखूट पाणी मळ्या कर्युं. त्यारथी त्यांना गामनी फरता चारे मानवीओ भारी जता त्यां गरताने बदले मोताव थवो पडतो दरेकने मानवुं पडतुं के आ पण कोई देवी हाजोगीन थाय छे.

एवन वषद मातरसागर सुरीश्वरजी नगर शेठनी क्षांतानी ऐतिहासिक जैन धर्मनां पुराणमाननी महान पदवी छे ते योगीराजने अर्पण करी.

दील्ही

ता. ७-१-१९३६

स्टेट्‌समेन पत्रना अंग्रेजी लखाण उपरथी गुजरातीमां ट्रांसलेशन

एक अर्वाचीन चमत्कारीक योगी

हीज होलीनेस, योगीराज, जगतगुरु, आचार्य सम्राटश्री विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराज मारवाडमां एक सरस्वतीना अरण्यमां बिराजे छे. प्रथम ते जगा एक वेरान जंगलरुप हती परंतु गुरु दर्शनभीलाषी हरेक जातना मानवो आववाथी ए भरपुर शहेर जेवुं लागे छे.

एक धनवान वेपारीए ए स्थानमां जमण कर्युं हतुं. जेमां एक हजार मानवना खोराकनी सगवड करी हती परंतु गुरुदेवनां दर्शन माटे सांज सुधीमां पांचेक हजार माणस आवी जवाथी कार्यवाहको मुझवणमां पड्या. परंतु गुरुदेवना आशीर्वादथी तमाम मानवो भोजन करी शक्या अने पछीथी जोतां पांचसें मानव हजु जमे तेटलो खोराक वधी पड्यो हतो.

ॐ

अजमेर

ता. १६-१२-३६

जैन ध्वज पत्रना अंग्रेजी लखाण उपरथी गुजरातीमां ट्रांसलेशन

केटलाक अंग्रेज पत्रोमां जेवा के ईलस स्टेटस वीकलीमां डोक्टर जोसरोड्रीग्स पोर्टुगीझ तत्वज्ञानना शोधक छे तेओना

हस्ते श्रीगुरुदेव भगवान महान योगीराज आचार्य सम्राटना विषे नीचेनो लेख फोटा साथे छापवामा आव्यो छे
(डेली नवयुग दील्ही हीन्दीपत्र ता १२ जुलाई १९३५ नं.१९९)

महान योगीराज आचार्य सम्राट श्री विजयशातिसूरीश्वरजी महाराज योगविद्यामा सारामा सारा अभ्यासी छे योगीओ कुदरती कायदाने अनुसरी केटलाक बनावो बतावी शके छे जेने साधारण लोको चमत्कार माने छे परतु ते चमत्कार नथी. योगशक्तिथी अशक्य वस्तुओ पण शक्य बनी शके छे आगळ चालता ए पोर्टुगीझ गृहस्थ कहे छे केः—

आथी म्हारा जेवा शोधक तथा पर्यटन करनारा बधुओनु सहर्ष आ तरफ ध्यान खेंचु छु के तेमने सप्रेम सहृदय जोवाथी तथा तेमना आशीर्वाद मेळववाथी विश्व पर्यटननो उद्देश सफळ थशे.

ॐ

First of all my humble homage and salutation to His Holiness Jagat guru Acharya Samrat Shri Vijayashantisuriji Bhagvan, the greatest Yogiraj in the world to whose holy feet I present my soul for purification Rajyoga or natural yoga is the highest yoga of all the yogas By direct communion of the individual soul with the universal one Moksha or Salvation can be attained

By constant devotion or Bhakti to Sad-guru Bhagvan by obeying His orders implicity by loving Him with all your heart then little by little the grace of Sad-guru Bhagvan will be felt in us and the salvation will be realised.

Oh Bhagvan, it takes millions of lives of a soul to know you, through your kindness one can easily recognise you. Your words are the essence of all the Shastras! Universal love is your gospel. You welcome all, irrespective of castes, creeds, cr nationality.

I have personally seen the philosophers and cultured men of the west coming to pay their respect at the holy-feet of His Holiness, the greatest yogiraj in the world.

I therefore gladly draw the attention of all my dear friends, travellers and explores that by seeing with devotion and attaining the benevolence of Sad-guru Bhagvan; all their motto of travelling around the world will be served at this place only.

George Jutzelor.

मारुं प्रथम कर्तव्य ए छे के हुं महान जगत गुरु आचार्य सम्राट श्री विजय शांतीसूरीजी भगवान जे दुनीआना मोटामां

मोटा योगीराज छे तेना चर्णोमा मारा आत्माने स्वच्छ बना-
ववाने नम्र भक्ति अने नमस्कार पूर्वक धरुं छुं.

राजयोग अगर कुदरती योग ए मोटामा मोटो योग छे. माणसनो आत्मा जो पृथ्वीना आत्मा साथे सीधो सबध राखे तो ते मोक्ष अगर मुक्तिने पामे छे.

सदगुरु भगवानना उपर अस्खलीत भक्ति अने श्रद्धा राखवाथी अने एना हुकम सपूर्ण अने प्रेमपूर्वक मानवाथी सदगुरु भगवाननी कृपाने पामी शकाय छे अने मुक्ति प्राप्त थाय छे.

हे प्रभु ! तने ओळखवाने करोडो जीदगी लेवी पडे छे, परतु तारी दयाथी तने तुरत ओळखी शकाय छे. तारा वचनो दरेक शास्त्रनु तत्व छे. भ्रातृप्रेम ए तारु ध्येय छे तुं दरेकने न्यात, जात के प्रजानो भेदभाव विना मान आपे छे.

में जाते पाश्चिमात्य, मोटा मोटा तत्वज्ञानीओ तथा केळ-
वणीकारोने दुनियाना आ मोटा योगीराजना चर्णोमा नमस्कार करता जोया छे

आथी फरी हुं सफर करनारा मारा दरेक मित्रो, तथा शोधकोनुं आनदपूर्वक ध्यान खेंचु छु के सदगुरु भगवाननी भक्ति अने परोपकार वृत्तिने पामवाथी एमनो दुनीयामा सफर करवानो ध्येय परीपुर्ण थशे.

ज्योर्ज ज्युट जेलर

ॐ

अनन्य शरणना आपनार एवा श्री सदगुरु भगवानने
त्रिकाळ नमस्कार हो !

विश्वनी महान विभूतीओ
जीवननी आदर्श रुपरेखा

शार्दूलविक्रडीत छंद

जेने मनथी मोह मान मार्यां तेने सदाये नमु,
जेने मनथी काम क्रोध बाळ्यां तेने सदाये नमु;
जेने मनथी राग द्वेष काढ्या तेने सदाये नमु,
जेने मनथी सर्व एक जाण्या तेने सदाये नमु.

ॐ

भारत वर्षमां हजु पुन्यनो प्रकाष छवायो नथी, परंतु तेना चीरस्मरणीय ईतिहासने उज्वळ बनावे तेवा दिव्य पुरुषो हजु भारतना भाग्यवंत मीनारे यशस्वी छे.

"धन्य हो ! ए मरुधर देशने अने धन्य हो ! ए मरुधरेश्वरी देवीने"

"धन्य हो ! ए मणादर गामने अने धन्य हो ! ए आहिर कोमने"

" धन्य हो ! ए पुण्यवत वसुदेवी माताने अने "
" धन्य हो ! ए पुण्यात्मारायका श्री भीमतोलाजीने "

अहो ! मरुधर देशनी पवित्र भूमिमा आजे एक अलौकिक तान मची रह्यु छे. एना आंगणे आजे एक दिव्य प्रेमनो सागर उभरायो छे. विश्वना चारे खुणामा वसता मानवो ए सागरमा स्नान करवा आनंद मुग्ध बन्या छे केटलाक स्नान करी पोताना आत्माने पवित्र बनावे छे तो केटलाक लारा समयनी तृषा छीपावी हृदयने सतुष्ठ करे छे

अरे ! आवी अदभूतता वतावनार महान विभूती कोण छे ? एना नामथी भारत वर्षमा आजे कोईपण अजाण नथी

तेओश्रीनु शुभ नाम तिर्थरुप, महान योगीराज, परम कृपाळु, गुरुदेव श्रीमद् विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराज अने तेओश्रीना गुरु तपस्वी महात्माश्री तिर्थविजयजी महाराज अने तेओश्रीना गुरु योगेंद्र महात्मा गुरुदेव भगवंत श्रीमद् धर्मविजयजी महाराज.

जैन धर्म ए विश्वनो ज धर्म छे. भगवानश्री महावीरे जगतना कल्याणार्थेज आत्म रोशनी प्रगट करी हती. भगवानश्री महावीरना काळ धर्म वाद जैनेतर प्रजामाथी ज जन्मेल महात्माओए जैन धर्मनी विजय पताका वगाडी छे

जेवा के हरीवळ मच्छी ज्ञातीना चंडाळ हता, मेतारज मुनी ज्ञातीना ढेड हता, सिद्धसेन दिवाकर,

बपभट्टसूरीजी, कलीकाळ हेमचंद्राचार्य आदी अन्य ज्ञातिमांथी जन्मेल महात्माओए जैन धर्मने देदीप्यमान बनाव्यो छे.

प्रस्तुत कथन मुजब आ विभूतीओनी संस्कृति चाली आवे छे. गुरु–गुरुना गुरु–अने दादा गुरुए आहिर (क्षत्रिय) कोममां जन्म धारण कर्यो हतो. दादागुरु महान प्रभावशाळी अने समर्थ आत्मज्ञानी हता. तेओश्रीनी जीवन कथा अति अदभूत छे तेनो टुंक ईतिहास हुं आ स्थळे मुद्रित करुं छुं.

योगेंद्र महात्मा गुरुदेव भगवंत श्रीमद् धर्मविजयजीनो उज्वळ जीवन परिचय

आजथी एक सैका पहेलां जोधपुर प्रदेशमां जसवंतपुरा परगणामां आवेल। गाम मांडोलीमां एक रायकाश्री दरजोजी करीने वसता हता. मांडोली गाममां जैनदेरासर अने उपाश्रय विगेरे आवेलां छे. दरजोजीने प्रजामां एक कोळोजी करीने पुत्र हतो. पोताना कुटुंबमां आ पुत्रने जीवंत मुकी दरजोजी देहोत्सर्ग पाम्या हता. कोळोजीनो जन्म संवत १८४८ ना असाड सुद १५ ने रोज थयो हतो. कोळोजीने बाल्यवयथीज ईश्वरभजन अने प्रभु भक्ति उपर महान श्रद्धा हती. ज्ञातीना आहिर होई जीवननिर्वाहनुं साधन ढोरोना पालण पोषण उपर ज हतुं. कोई कोई समय जंगलमां ढोर चरतां मुकी ईश्वर-भजन थतुं श्रवण करवामां आवे तो तुरतज तेओ ते तरफ

चाल्या जता. भजननी पुर्णाहुती ना थाय त्यां सुधी त्याथी पाछा फरता नहि तेमज ढोरोनी जरापण चींता करता नहि परतु प्रभुभक्तिमा ज शुद्ध हृदये तलीन बनता.

एक समय मारवाडमा एवो सख्त दुकाळ पडयो के अन्न-पाणी अने ढोरोने घास आदी मळवु मुश्केल हतु तेवा समये तेओ उचाळो करी देशाटन करवा निकळी गया, साथमा केट-लाक ढोर हता ते खतम थई गया अने प्रजामा एक बे वर्षनो पुत्र जेनु नाम वेलराज हतुं ते जीवत रह्यो फरता, फरतां, तेओ पुना पासे आवेला चोक गाममा आवी पहोंच्या ते गाममा मारवाड प्रदेशमा आवेल मूळ गामना रहीश एक जैन गृहस्थ जसाजी करीने रहेता हता तेओने त्या ढारोनुं पालन-पोषण करवा कोळोजी पुत्र साथे नोकर तरीके रह्या. तेओनी अपूर्व प्रभुभक्ति निहाळी शेठे कोळोजीने नवकार मत्र शीखव्या हता. कोळोजी हरेक समय ते ध्यानमा तलीन रहेता. नोक-रीना त्रण वर्ष पुरा थतां दरम्यान एक समय पोताना पुत्र वेल-राजने जगलमा सर्प करडयो, करडतानी साथेज पुत्र मरणने शरण थयो कोळोजी ए पुत्रने खोळामा लईने एक वृक्ष नीचे बेसी गया अने अतरमा एवी प्रतिज्ञा करीके आ पुत्र सजीवन थाय तोज मारे अन्नपाणी ग्रहण करवा, नहितर नवकार मत्रना ध्यानमा लय थई मारा देहनो मारे पण त्याग करवो

आ प्रतिज्ञाथी उठवाने माटे घणा घणा लोकोए तेओने

समजाव्या, अने एम करतां त्रण दिवस पुरा थवा आव्या. त्रीजा दिवसना उपवासे पोताना ध्यानना प्रबळ प्रतापे कोई देव महात्मानुं रुप धारण करी प्रत्यक्ष आवी उभा, तेओए पुण कोळोजीने पोतानी प्रतिज्ञा छोडवा बाबत हरेक कसोटी कर्या बाद पुत्रने हाथ फेरवी सजीवन बनाव्यो. तुरत ज कोळोजीए पोताना पुत्रने महात्माजीना खोळे मूक्यो अने कह्युं के आप एना जीवन पाळक बन्या माटे आप एने साथे लई जाओ. नवकारमंत्रना ध्यान मात्रथी ज्यारे मारो पुत्र सजीवन बन्यो तो ते मार्ग मने आप बतावो के जेथी साधु जीवन प्राप्त करी हुं मारा आत्मानुं श्रेय करुं.

महात्माश्रीए प्रत्युत्तर आप्यो के आ पुत्रने तमो कोई साधु अगर यतीने वोरावी देजो अने तमो पण अमुक समय बाद जैन दीक्षा अंगीकार करशो अने आ जगतमां एक ईश्वरी अवतार तरीके पूजाशो एवो मारो तमने आशीर्वाद छे.

तुरतज महात्माश्री अद्रश्य थईगया बाद कोळोजीए त्रण उपवासनुं पारणुं कर्युं. चारेक मास पछी पुत्र वेलराजने मुंबाईमां एक यतीजीने वोरावी दीधो. जेओ वेलजी यतीना नामथी पालणपुर पासे आवेल गाम मंडारमां मशहुर हता. वेलजी यती आजथी चारेक वर्ष उपरज गाम मंडारमां काळ धर्म पामी गया छे. पुत्र वेलराजने वोराव्या बाद कोळोजी साधु जीवन प्राप्त करवानी धगशमां खंडालाना घाटमां फरता हता.

एक समय तेओए एक वृक्ष नीचे आसन स्थिर बनी एवी प्रतिज्ञा करी के कोई मने साधु बनावे तोज मारे आ स्थान छोडवु त्रण दिवसना उपवास पुर्ण थता पोतानी प्रतिज्ञाने फळीभुत करवा एक मणीविजयजी नामना साधु मळी आव्या तेओनी पासे कोळोजीए संवत १८७२ ना महा शुद पाचमने रोज जैन दीक्षा अंगीकार करी अने त्यारथी तेओनुं नाम मुनी महाराज श्री धर्मविजयजी स्थापित थयु. महाराज श्री मणी-विजयजी मळया तेमा पण कुदरतनो ज संबंध हतो.

खंडालाना घाटमा अमुक समय व्यतीत कर्या बाद महाराज श्री धर्मविजयजी पोताना जन्म स्थान गाम माडोलीमा पधार्या. अज्ञान अवस्था होवा छता तेओश्रीने कुदरती ज्ञान संपादन थयु. तेओश्री एटला बधा शक्तिशाळी पुरुष हता के एक स्थान पर बिराजमान होवा छता एकज समये जुदा जुदा स्थानोमा दर्शन आपी शकता हता. जेठ मासना सख्त तापमा पहाडमा टेकरीनी टोच उपर धीख धीखती शील्ला उपर आसन स्थिर बनी बपोरना बारथी चार सुधी ध्यानस्थ दशामा खुल्ला नयनो राखी सूर्यना कीरणो चक्षु द्वारा ग्रहण करता हता. सख्तमां सख्त ठंडीमा नदी भाठा बिगेरे स्थळोमा रात्रीनी रात्रीओ ध्यानस्थ दशामा पसार करता हता. एक समय एवो अभीग्रह कर्यो हतो के हस्ति गोचरी वोरावे तोज आहार करवो, बे मासना उपवास पूर्ण थया बाद पोताना अद्भूत आत्मबळथी जयपुरना बजारमा जई चढया. एक हलवईनी दुकान पासे

गांडो हस्ति सामेथी आवतो हतो, तेने हलवईनी दुकानमां सूंढ नांखी मोदक लीधो के तुरत ज गुरुश्रीए सन्मुख पातरुं धर्युं अने हस्तिए मोदक वहोराव्यो, बाद तेओश्रीए पारणुं कर्युं.

एक समय रामसीणगामथी विहार करी आगळ विचरता हता, जेठ मासनो समय हतो, साथे घणां ज माणसो हतां रस्तामां सख्त गरमी होवाथी साथे आवेल माणसो तृषातुर बन्यां आसपास पहाड अने जंगल होई पाणी मेळववानुं कंई पण साधन हतुं नहि जेथी माणसो गभरावा मांड्यां. जमीनमां एक वावडो करावी गुरुश्रीए पोतानी पासे तरपणीमां थोडुं पाणी हतुं तेमांथी थोडुं वावडामां पाणी नांख्युं अने ते उपर कपडुं ढंकावरायुं, तुरत ज जलाशय लब्धीना प्रभावथी वावडामां पाणी भरायुं ने हरेक माणसो पोतानी आंतर तृषा छीपावी शांत बन्यां.

नवकारमंत्रना ध्यानथी ज तेओश्रीए सर्व सिद्धिओ प्राप्त करी हती.

नवकार केरा मंत्रथी ए सर्व सिद्धि पामीया
नवकार केरा मंत्रथी ए आत्मरसमां जामीया
नवकार केरा मंत्रथी ए वीर थईने म्हालीया
नवकार केरा मंत्रथी ए परम पदने पामीया

एक समय गुरुश्री रामसीणमां विराजता हता, चैत्र सुदि पूर्णिमानो दिवस हतो, सवारना दश वाग्या बाद जंगलमां

ध्यानमा पधारी गया हता, अने साजना चार वागता गाममां पाछा फर्या हता तेज दिवसे रामसीण गामना केटलाक श्रावको पालीताणा यात्रार्थे गया हता. तेओए डुंगर उपर आदीनाथ भगवानना दर्शन करी वहार निकळता वृक्ष नीचे गुरुश्रीने जोई वदन करी प्रश्न कर्यो के वावजी आप क्यारे पधार्या.

तेना पत्युत्तरमां ॐ शांतीनो जवाव मळयो. तेज दिवसे ते श्रावकोए रामसीण पत्र लखी दर्शाव्यु के आजरोज अत्रे डुगर उपर गुरुश्रीना दर्शन थया छे तो गुरुश्री रामसीणमा छे के विहार करी गया छे तेनो जवाव एवो मळ्यो के चैत्र सुद पूर्णिमाना रोज गुरुश्री सवारना दश वाग्या वाद जगलमा ध्यानमा पधारी गया हता, ते साजना चार वागे गाममा पाछा फर्या हता अने हाल अत्रे विराजमान छे. आवी रीते तेओश्री पोताना आत्मवळ द्वारा अनेक स्थानोमां जई शकता हता. मृत्युना विछाने सूतेला मानवो तथा असख्य मुगा पाणीओने अभयदान आपी वचावता. मात्र आशीर्वादथी असख्य मानवोने पावन वनाव्या छे तेओश्रीना जीवन सवंधमा घणा ज अद्भूत अने अलौकिक दाखलाओ छे के जेनो लखवाथी पार आवी शके तेम नथी.

मृत्युनो समय पण एक मास अगाउथी जाहेर कर्यो हतो, अने दर्शाव्यु हतुं के मारा मृतदेहने जे जगाए अग्निसस्कार

करो ते जगाए पालखीनी आजुबाजु चार लीमडाना सुका खूंटा दाटजो, अग्नि प्रगटाववानी जरुर नहि पडे, शरीर उपरनां उपकरणो, ओघो, मुहपत्ती, कपडां विगेरे तथा पालखीनी धजा अखंड रहेशे. मात्र आ शरीरे जेवी रीते जन्म धारण कर्यो छे, ते शरीर ज बळीने भष्म थशे.

चार लीमना जे खूंटा दाटशो ते पण बळशे नहि, परन्तु अखंड रही भविष्यमां चार लीमडानां वृक्ष थशे.

म्हारा काळधर्म बाद भविष्यमां कोई महान आत्मा मारी पाछळ थशे त्यारे एक लीमडानुं वृक्ष अद्रष्य थई जशे.

प्रस्तुत हकीकत मुजब संवत १९४९ ना श्रावण वद छठने रोज प्रभातमां तेओश्री काळधर्म पामी गया. सहस्त्रगण्य मानवो जातिना भेदभाव वगर तेओश्रीनी पालखीने अग्निसंस्कार माटे जंगलमां लई गया. चार लीमडाना खूंटा दाटी वचमां गुरुश्रीना मृतदेहनी पालखी बिराजमान करवामां आवी अने पालखीनी आसपास चंदननां लाकडां गोठववामां आव्यां. ईन्द्रमहाराजाए पण ते समये अतिवृष्टि करी के जळनो पार रह्यो नहि. अग्नि आपोआप जमणा अंगुठामांथी प्रगट थई, शरीर उपरनां उपकरणो पालखीनी धजा अने जमीनमां दाटेला चार लीमना खूंटा विगेरे अखंड रह्यु. मात्र शरीरज बळीने खाख थयुं. उपकरणो अने धजा लोको प्रसादी रुपे लई गया. चार लीमना सूका खूंटानां भविष्यमां लीमडानां वृक्ष थयां.

गुरुश्रीना देवलोक पाम्या बाद जे जगाए अग्निसंस्कार करवामा आव्यो हतो त्या दाटेला चार लीमडाना खूटाना चार वृक्षा थया. गुरुश्रीनी देरी माडोली गामना पाळे करवामां आवेली छे जे देरीमा गुरुश्रीना चरण पधरावेला छे. ज्यारे गुरुश्रीनी देवलोक पाम्यानी तिथि आवे छे त्यारे त्या मोटो मेळो भराय छे, ज्या सहस्त्रगण्य मानवो दर्शनार्थे उलटे छे दर्शन करवा आवनार हरेकने माडोली गाम तरफथी दर साल जमण अपाय छे. ते दिवसे प्रभातमा गुरुदेवना चरणमाथी अमूक समय गंगाजळ वहे छे अने ते दिवसे तेओश्रीना शिष्यना शिष्य गुरुदेवश्री विजयशातिसूरीश्वरजी ज्या विराजमान होय त्याथी आखा दिवसमा कोईकने दर्शन आपे छे.

माडोली गाम तथा तेनी आसपासना गामना मानवो गुरुदेव भगवानना चरणने महान देव तरीके पूजे छे कोईक समय गुरुदेवश्रीए देवलोक पाम्या बाद तेओश्रीना परमभक्तोने दर्शन पण आप्या छे.

उपरनी तमाम वस्तु स्थिति हाल मोजुद छे. मात्र एक लीम हाल अदृश्य थइ गयो छे अहो! पारसमणी पोतानी पूर्ण ज्योत आ भूमिमा प्रकापी रही छे. तेओश्रीना अगाध गुणोनुं वर्णन तथा दिव्यताने पार पामी शकाय तेम नथी. गुरुदेव भगवान् श्रीमद् धर्मविजयजीना शिष्य तरीके महान तपस्वी महात्माश्री तिर्थविजयजी थया. तेओश्री पण ज्ञातीना

आहिर हता. जन्मस्थान गाम मणादर हतुं. तेओश्रीए आखुए जीवन तपश्चर्यामां ज पूर्ण कर्युं हतुं. संवत १९८४ ना फागण सुद आठमना रोज मारवाडमां आवेल गाम मूडोतरामां तेओश्री काळधर्म पामी गया छे. तेओना शिष्य तरीके गुरुदेव श्रीमद् विजयशांतिसूरिश्वरजी पोतानो दिव्य प्रकाष आजे विश्वनी चोतरफ फेलावी रह्या छे.

ॐ

गुरुदेव भगवंत श्रीमदविजयशांतिसूरीश्वरजीनो

झळकतो जीवन दिपक

जन्म स्थान अने समय

जन्म समय संवत १९४५ना माघ शुद ५ ए वसंत पंचमीनो शुभ दिवस हतो. वसंतनी दिव्य प्रभाते आ वीरात्माए जन्म धारण कर्यो छे.

जन्म स्थान गाम मणादर

उषानी मंदमंद शितळ लहेरो अने झरमर झरमर प्रवाह रेली हती. मोर अने बपैयां तेना हृदयभेदक सूरोथी मधुरा टहुकार करी रह्यां हतां. मुरघो प्रभातना छेल्ला रणकारथी मानवने जाग्रत करतो हतो. सन्नारीओ पोतपोतानी सखीओ साथे जळ भरवा कुवा तरफ सीधावती हती. वसंतनो तहेवार होवाथी आसपासना मानव समूहमां आनंदनां स्मित उभरायां हतां.

आहिरना वास तरफ नयनो फेरवीए

आहिर एटले क्षत्रिय कोम गणाती पूर्व समयना ईतिहासो विचारीए अने हिंदुस्ताननी प्राचीन अने अर्वाचीन स्थितिनो ख्याल करीए तो श्री कृष्णना समयमा क्षत्रियोज गौमातानु पालन करता हता अने तेओ राजवंशी कहाता. लावा समये परीवर्तन थवाथी रुढवाद पकडायो अने आजे ए क्षत्रिय कोमना ज वंशवारसो रायका अने आहिरना नामथी ओळखावा लाग्या. दीर्घ अवलोकन करनामा आवे तो ए क्षत्रिय कोमना ज वंशवारसो छे.

आहिरना वासमा प्रभातनो समय होवाथी स्त्रीओ छाणवासीदु साफ करी रही हती, त्यारे केटलाक गौमाता अने भेंशोने दोई दूध सकेलवाना कार्यमा गुथाया हता.

सूर्यनारायण पण पोतानो प्रकाप फेलाववा मधरा मधरा किरणो फेंकी रह्यो हतो पो फाटवाना समयमा रायकाश्री भीमतोलाजीना आगणे धीमी धीमी गरबड शरु थई. आसपासना घरमाथी स्त्रीओ एकत्र थई गई अने टुक समयमा ज वधामणी फरी के वसुदेवीनी कुक्षीए एक पुत्र रत्ने जन्म सापड्यो छे. साधारण रीते विचारवामा आवे तो युगनो एवो प्रभाव छे के हरकोई ज्ञातना मानवने त्या पुत्र जन्मे तो आनंदनी वृष्टि थाय छे तेवी ज रीते आहिरना वासमा आजे आनदनी सीमा न हती ए पुत्रनी अदभूत क्राती, चकोर

नयनो, अने शूरातन तेनी साथे ज जन्म्यां होय तेवी तेनी बालचेष्टा हती. पुत्रनां आवां उत्तम लक्षणो अने सौन्दर्यता नीरखी माता पीतानो प्रेम ए पुत्र उपर अवधि हतो. माता तेना आत्माने घडीभर ककळावतां नहि, परंतु तेनी रडवानी चीस श्रवण करवामां आवे तो वेबाकळां बनी जतां अने अति लाड भाव साथे साचो मातृप्रेम वहावतां. मातापीताना अगाध प्रेम साथे बाल्य वय खीलतां ए पुत्रनुं नाम शुभ दीने सगतोजी पाडवामां आव्युं. तेओनुं नाम सगतोजी होवा छतां घणाज मानवो तेओने संतोकीयाना नामथी संबोधता.

ज्यारे सूर्यनारायण प्रकाप फेंके छे त्यारे तेनी भव्यता अजायब भासे छे. चंपाना वृक्षने फुल आवे छे त्यारे तेनी उत्तम म्हेंक नाशीकाने वासमुग्ध बनावे छे. तेवीज रीते सगतोजीनो जीवन दिपक झळकवा मांड्यो.

सगतोजीनी अपूर्व क्रांती, जीवननी अजायब चकोरता, हास्यवदन अने दिव्य नेत्रांजनो अजाण्या मानवीना अंतरने हर्ष मुग्ध बनावतां.

पांच वर्षनी वय सुधी अती लाडभाव अने अगाध मातृप्रेममां उछरतां मातापीतानी साथे जंगल अने वनवृक्षोनी घनघोर घटामां ज जीवन पसार थयुं. मातापीताना उदरनिर्वाहनुं साधन गौमाताना पालण पोषण उपरज हतुं.

वनवृक्षोनी अपूर्व रमणियता अने आबोहवामा कलोल करता सगतोजीनुं गभरु बाल्यजीवन धीमे धीमे .खीलतुं गयु. एक युवान वये पहोचेला मानव जेटली बुद्धिमता तेओमां खीली उठी.

पुत्रना लक्षण पारणामा ज हाय तेमज हीरो कदापि पोताना तेजथी चलायमान रहे नहि तेवी रीते सगतोजीनुं आत्मकमळ खीलवा माडयु

" सगतोजी भावीमा कोई विरात्मा थशे तेनी कल्पना पण ते समये केम घडी शकाय ? "

" आहिरने त्या जन्म धारण करनार पुत्र माटे आभावना पण केम रखाय ? "

ससारना परीतापमां, कई मानवी पटकई मुआ,
ससारना परीतापमां, कई मानवी झकडई मुआ;
ससार खारो झेर छे, माया तणो ए महेल छे,
ए सर्वमांथी छुटवु, ए वीर नरने स्हेल छे.

भावीना भणकारा

आठ वर्षनी वये पवित्र वनवृक्षनी छायामा घूरता घूरता पहाडो अने गीरीगुफाओ सामे सगतोजी पोताना चकोर नयनो तलसावी रह्या हता, बुद्धिमता तेनु पूर्णबळ अजमावी रही हती, वीरबळ जीवनने हचमचावी रह्यु हतु, भावीना भणकारा मंद-

मंद लहेरो प्रसरावता हता, अने भावीमां वनवाना वीर पुरुषनी झांखी भास आपती हती.

वनवृक्षोनी घनघोर घटा अने गीरी गुफाओ साथे नयनो घूरावतां सगतोजीना आत्मामां कोई अनेरु भान थयुं. हुं कोण छुं? ए विचारो आत्म मंदिरमां प्रवेश्या अने आ असार संसारनी नाशवंत मायानो त्याग करी आत्म ध्यान तरफ जीवननी ज्योत प्रकापवा मांडी.

पूर्वना प्रबळ संयोगे महात्माश्री निर्थविजयजीनो संसर्ग थयो. तेओश्री संसारीकपणाना सगा काका थता हता. महात्माश्री आ गभरु युवान बाळना दिव्य विचारो अने बुद्धिमता निहाळी चकित बन्या अने घडीभरने माटे विचारमां पड्या.

सगतोजीए पोतानो आत्म निश्चय नियत कर्यो के येन केन प्रकारे आ फानी दुनिआनो त्याग करी आत्मज्योत झळकावी आत्मानुं श्रेय करवुं, ए विचारश्रेणीमां जीवनने प्रवेश्युं अने मातापीताने पोताना विचारोथी वाकेफ कर्या.

मातापीता सगतोजीना आवा उदगारो श्रवण करी वेवाकळां बनी गयां. नयनोए अश्रुनी रेली करी, अने पुत्रनी मोहांधताए जीवनने स्तब्ध बनाव्युं. घणी रीते पुत्रने समजाववा प्रयत्नशील बन्यां, परंतु जेना माटे भावी प्रबळ शक्ति अजमावी रह्युं होय त्यां मानवनुं शुं चाले?

आ प्रेमनी धारा छुटे, आजे नयनमांथी प्रभो,
आ हेतनां हैयां धूजे, आजे हृदयमांथी प्रभो;
ओ! पुत्र त्हारा स्नेहना, सागर हवे खाली थशे,
ओ! पुत्र त्हारा मोहना, माळा हवे भागी जशे,
ओ! पुत्र त्हारी घेलछा, माता पीता नव सही शके,
ओ! पुत्र त्हारी बाल्यातानांओजसो उभरई जशे.

अहो! कीरतार मायाना बधननी पाछळ जगतना सर्व मानवो मोहाध बन्या छे के ए मोहनी धारा मानवना मनोमदिरने अश्रुपात करावे तेमा शु नवाई? माता पुत्रनो मोह केम तजी शके?

चक्रवर्ती होय के वासुदेव होय, राजा होय के राणो होय, श्रीमंत होय, के निर्धन होय, परंतु मातानो प्रेम पुत्र उपर तो एकज सरखो होय

सगतोजीना मातापीता अती अश्रुनी धारा रेली रह्या छे. पुत्रनी भावीनी विचारश्रेणी श्रवण करी मोहनीमा बेबाकळां बन्या छे अने रडता हृदये प्रभुने प्रार्थना करे छे के:-

ओ प्रभु! आ पुत्रनी वियोगता केम सहन थशे!
ओ प्रभु!-आ गभरु बाळनी लाडभावना केम वीसराशे!
ओ प्रभु! आ लाडका पुत्रनी अमीरतां केम भूलाशे!
ओ प्रभु! आ पुत्रना अतरने आप जरा पण कुमळुं नहि बनावो?

આવા ભાવભીના હૃદયે માતાપીતાનાં અંતર કલ્પાંત કરી રહ્યાં છે.

ભાવી લખેલા લેખથી, માનવ કદી છુટતા નથી,
કર્મના સિદ્ધાંતથી, નરવીર પણ છુટતા નથી;
સંસાર તરવો દોહીલો, એ વીરનરનું કામ છે,
એ વિકટ પંથે ચાલવું, એ વીરનરનું ધામ છે;
તલસાવ નહિ ઓ ! માત તું, ત્યાગી થવું નિશ્ચય ખરે,
કર્મો હણી મુજ આત્મને, ઝળકાવવો નિશ્ચય ખરે.

કહેવત છે કે બાળહઠ, રાજહઠ, યોગહઠ, અને સ્ત્રીહઠ એ ચાર હઠો દુનિઆમાં સખ્ત મનાય છે કે એને ફેરવવી એ સર્વ અસંભવિત નિવડે છે. સગતાજીએ પોતાની બાળહઠ અને નિશ્ચયને નહિ તજતાં મહાત્માશ્રી તિર્થવિજયજી સાથે પ્રયાણ કર્યું આઠ વરસની વયથી સોળ વર્ષની યુવાન વય સુધી સાધુ જીવન અને આત્મજ્યોતને પીછાણવા સારુ ગુરુશ્રી તિર્થવિજયજીની સાથે જીવન વીતાવ્યું.

સાધુ જીવનની તૈયારીઓ

જોધપુર ઈલાકામાં આવેલા ગામ રામસીણમાં મહાત્માશ્રી તિર્થવિજયજી બીરાજતા હતા. સગતોજીની ઉંમર પણ સોળ વર્ષની પૂર્ણ થતી હતી. સાધુ જીવન પ્રાપ્ત કરવા ભાગવતી દીક્ષા આપવાનું મહુરત નક્કી કરવામાં આવ્યું.

रामसीणनी आसपास चोवीस गाम आवेला छे, जेमां रामसीण मशहुर गणाय छे रामसीणमा पाचसें वीशा ओशवाल जैन श्वेतांबरोना घरो आवेला छे. देरासर अने उपाश्रय आदीनी सगवड छे

श्री संघना अति उत्साह अने अपूर्व प्रेम साथे दीक्षा महोत्सव उजववानी भावभीनी तैयारीओ नक्की थई, जेमा शेठ नोपाजी डाह्याजी वाळानो मुख्य हीस्सो हतो अट्ठाई महोत्सव, वरघोडो, स्वामी वात्सल्य आदीना क्रमनी गोठवण नक्की थई गई आहिर कोमनो एक युवान जैन दीक्षा अगीकार करे तेना माटे आनदनी अवधि हाय तेमा शु नवाई ?

दीक्षाना एकवीस दीन अगाउथी सगतोजीने वायणे नोतरवानी तैयारीओ शरु थई. वायणा एटले जे मानवने त्या जमवानु नोतरु होय त्या वाजते गाजते जमवा जवानुं. एटले के संसारीक भावनाओ पूर्ण करवानी आ एक अभिलापाओ कहीए तो चाली शके.

आ समये रामसीण गामना ठाकोर श्री जोरावरसिंहजी करीने हता जेओमा "यथा नामो तथा गुणो" के नाम प्रमाणे ज गुणो हता. चोवीस गामना ठाकोरोमा तेओनी कीर्ती श्रेष्ठ हती. मुखाकृती पण एक वीर मानवनी झाखी पूरती

हती, अने तेओश्रीने लई रामसीण गामनी प्रतिभा सारी वखणाती.

ठाकोरश्री जोरावरसिंहजीने पोताने बेसवानो एक मुख्य घोडो हतो ते घोडा उपर बेसवानी सगतोजीनी खास मांगणी हती. गामना पंचोए ठाकोर साहेबने प्रस्तुत हकीकत भाव-भीना अंतरे दर्शावी. ठाकोर साहेबे पण एक आहिरना पुत्रनी साधु अवस्था गृहण करवानी तालावेली अने उच्च भावना निहाळी पोताना हृदयना भावथी पंचोने जणाव्युं के घणी खुशीथी आप ए घोडाने लई जाओ.

ठाकोर जोरावरसिंहजीनो घोडो आव्या बाद सगतोजीना वायणानी शरुआत थई. घोडा उपर अती हर्ष साथे खेलतां खेलतां वायणाना दीननी पूर्णाहुती थतां एकवीस दीवस सुधीनी वायणानी कार्यवाही उत्साहनी अवधि साथे पूर्ण थई.

भागवती दीक्षा

रामसीणगामनी अंदर आ शुं थई रह्युं छे ?
आ भव्य तैयारीओ शाने माटे थई रही छे ?

बहारथी आवतो हरेक मुसाफीर आ भव्यता सामे नयनो तलसावी रह्यो हतो. एटलुं ज श्रवण करवामां आवतुं के एक आहिर कोममां जन्मेल गभरु युवान भागवती दीक्षा गृहण करवाना छे तेनी आ अपूर्व तैयारीओ चाली रही छे.

विश्वनी महान विभूती

परमकृपालु, महानयोगीराज, गुरुदेव

श्रीमद् विजयशातिसूरीश्वरजी महाराज

रामसीण गामना पण पुरां पुन्य कहेवाय के आहिरनो एक गभरु युवान एना आगणे भागवती दीक्षा अंगीकार करे.

मानवनी भरती

रामसीण गामनी पाधरे आजुबाजुना गामोमाथी असंख्य स्त्रीपुरषोनी मानवमेदनी उल्टी पडी. हरेकना मुखेथी एकज अवाज नीकळतो के अहो ! केवो पुन्यवान आत्मा हशे के आहिर कोममा जन्मेल युवान दीक्षा अंगीकार करशे ! आवा भाव भीना उदगारो साथे असंख्य मानव रामसीणमा प्रवेशवा माडया.

अट्ठाई महोत्सव स्वामी वात्सल्यना जमण वीवीध प्रकारनी पुजाओ भणावता दीक्षानो दिवस आवी गयो.

दीक्षा समय

सवत १९६१ ना माघ सुद ५ वसंत पंचमीनी प्रभात थई. रामसीण गाममा आजे उत्साहनो धोध छुट्यो हतो. सूर्यनारायण पण पूर्ण स्वरुपे प्रकाशवा माड्यो, स्त्रीपुरुषो रगबेरगी आभूषणोथी सजीत थयां नाना बाळकोने द्रव्यालकार अने सुशोभीत वस्त्रोथी शणगारवामां आव्या, वृद्ध मातापीताओ पण पोत पोताना वेपमां तैयार थई चूक्यां, वाजींत्रो अने ढोलना गगन भेदी रणनादो गाजी उठया, गामनी चोतरफ घोषणा करी वळी के वरघोडो नीकळवानी हवे तैयारीओ छे सगतोजीने पण कीमती आभूषणो अने अल्कारोथी सजवामां

आव्या, कारण के संसारीक भावना पूर्ण करवानो आ छेवटनो ज प्रसंग हतो. सगतोजीना ललाटे कुमारीकाना शुभ हस्ते तिलक करावी अक्षत दाववामां आव्या, कंठे भव्य पुष्पोथी गुंथेल पुष्पहार सुहाववामां आव्यो अने बंन्ने हस्तनी हथेलीओ वच्चे श्रीफळ अने चांदीनाणुं मूकी पासे सजीत करेल भव्य शीवीकामां वीराजमान करवामां आव्या. खोळा पासे चांदीनाणुं अने बदामोनो ढग करवामां आव्यो अने श्री जीनशासन देवनी जयना गगन भेदी जयनादो साथे वरघोडो शरु थयो. मानवमेदनी एटली बधी उभराई हती के सूर्यनारायणनो प्रकाश पण मंद दीसतो हतो. सगतोजी चांदीनाणुं अने वदामोनी वृष्टी करतां हास्यवदने मानवसमूहना पुर सामे पवित्र नयनो फेंकी रह्या हता. गामनी चोतरफ फरी वरघोडो उपाश्रय नजीक आवी गयो. शीवीकामांथी उतरी सगतोजी देरासरमां दर्शन करी उपाश्रयमां आवी गया.

वांचक महाशय! घडीभर विचारजो! हुं प्रथम लखी चूक्यो छुं के पुत्रनां लक्षण पारणामांथी ज होय तेमज हीरो कदापी तेना तेजथी चलायमान थाय नाह, ए कथन अनुसार एक समयना रायका श्री भीम तोलाजीना पुत्र आठ वर्ष सुधी वनवृक्षोमां ढोर साथे फरता हता ते पुत्र सगतोजी आजे सोळ वर्षनी युवान वये भागवती दीक्षा अंगीकार.करे छे. जन्मदीन पण वसंत पंचमी हतो अने दिक्षा पण तेज वसंत पंचमीना

चडता पहोरे गृहण करे छे. जन्म अने दीक्षानो एकज दीन नीरखवामा आवे ए पुन्यनी नीशानी नहि तो बीजु शुं मनाय?

गुरुश्री तिर्थविजयजी पासे सगतोजी आव्या अने जीनेश्वर भगवाननी प्रतिमाने प्रदक्षीणा फरता भागवती दीक्षानी वीधी शरु थई अमुक समय बाद वीधी पुरी थता सगतोजीने स्नान अने पंचमुष्टी लोच करवा लई जवामा आव्या

शीबीका परथी भूमी पर उतरे,
मदमाया मोह मने विसरे,
शुभ वस्त्र सज्यां नीज देह परे,
अलकार तजी सहु दूर करे १

हु कोण? अने क्यांथी उपन्यो,
ए भान पळेपळ याद करे,
मुज ज्ञात नथी मुज तात नथी,
मुज मात नथी हु एक खरे २

गुरु चर्ण पडी वीधी सर्व करी,
शीर लोच चूटी शुभ वेष धरे,
सहु माफ करो सहु माफ करो,
नहि वेर अने नहि खेद अरे ३

सभी जीव क्षमा आपो मुजने,
हु सर्व जीवोने खमावु अरे,

शुभ वेष सजी प्रभु वीर तणो,
हुं वीर पणुं राखीश खरे. ४

कदी कष्ट पडे मृत शीर परे,
पण शांती कदी न तजीश अरे;
निर्जर वनवस्ती प्रदेश महीं,
मुज आत्मतणुं साधीश खरे. ५

हुं संत बनुं हुं संत बनुं,
संयम व्रत भार वहीश हवे;
दृढ निश्चय भीष्म करुं मनथी,
दुःखथी नहि पीछे करीश हवे. ६

शार्दूल विक्रीडीत छंद

अंगे वस्त्र सजेल सर्व मूक्यां, आभूषणो अंगथी,
मायाने ममता बधी मन तजी, साधुत्वना रंगथी;
मानवपुर उभयाँ अती नीरखतां, अश्रु नयनथी वहे,
क्यां ए आहिर पुत्र आज साधु, संन्यास पदने वरे;
संयम भार उठाववो कठीन छे, खांडा तणी धार छे,
कायर नरनुं काम नहि अरेरे, वीरला तणी पार छे;
आशीष आपे वृद्धजन मुखेथी, कल्याणकारी थजो,
वीर बळनी हाकल करी जगतना, कल्याणकारी हजो.

सगतोजी ए पहेरेला वस्त्रो आभूषणो उतारी स्नान पच-मुष्टी लोच आदी करी गुरुश्री तिर्थविजयजीना शिष्य तरीके भागवती दीक्षा अगीकार करी साधुवेष गृहण कर्यो अने गुरुए शिष्य तरीकेनी वासक्षेप शीर उपर नाखी तेओश्रीनुं नाम मुनी महाराज श्री शांतिविजयजी स्थापित कर्यु.

एकत्र थएल मानव समूहे घडी भर प्रेमना अश्रु वहाव्या अने वृद्ध स्त्रीपुरुषोए आशीषनो नाद कर्यो के

" हे ! पुत्र तमो कल्याणकारी थाओ ! "
" हे ! पुत्र तमो साचा वीर थाओ ! "

अहो ! कीरतार त्हारी माया आवा अमोला रत्नोमा ज प्रगट थाय छे के क्याए सगतोजी अने आजना मुनी महाराज श्री शांतिविजयजी

दीक्षा अगीकार करी ए वीरात्मा श्री माडोली नगरे वीचर्या. माडोली नगर ए दाद गुरुनु जन्मस्थान अने काळस्थान हतु के जेओश्रीनी प्रतीभाशाळा अति अदभूत अने अद्वैत छे. जेओना जीवननु टुक अवलोकन हु आगळ करी गयो छु

आ वीरात्माश्री माडोली नगरथी पाछा रामसीण पधारी गया, रामसीण गाममा दीक्षा महोत्सवना कार्यमा मुख्य भाग लेनार शेठ नोपाजी डाह्याजीनु एक मकान हतु जेमा कोईपण मानव रही शकतु नहतु ते मकानमा पोते त्रण दिवस वास कर्यो अने त्यार बाद सर्व कुटुंब त्या अति आनंदथी रहेवा लाग्युं.

बाद रामसीण गामथी एवीरात्माए गुरुश्रीथी अलख वीचरवा शरु कर्युं.

वसंत पंचमीना रोज जन्मेल आवीरात्माए वसंतनी माफक आत्माने सचेत बनाववा आत्ममस्तिना तानमां गानमां अने ध्यानमां ॐकार मंत्रने स्थापन कर्यो.

"ॐकार आ विश्वनो अमोलो मंत्र छे."
"ॐकार आ विश्वमां कल्याणकारी छे."
"ॐकार सर्व मंगलमां प्रथम मंगल छे."
"ॐकार ए सर्व मंत्रोनो राजा छे."
"ॐकारमां विश्नु, ब्रह्मा, महेश्वर छे."
"ॐकारमां पंचपरमेष्ठी छे."
"ॐकार सर्व सिद्धिनो दायक छे."
"ॐकार कर्म समूहने भष्म करनार छे.
" ॐकार शांतीनो साचो मीनारो छे."
"ॐकार आत्मानो साचो मार्गदर्शक छे."

योगमार्ग अने आत्म मस्तीनी धूनमां आगळ वधी पूर्व समयमां थएल महान आत्माओना पंथे जीवननो विकास करवो एज आ वीरात्मानो दृढ निश्चय हतो. योगमार्गने पीछाणवा घणा लांबा समय सुधी मौन साथे रात्री अने दिवस सतत ध्यान कर्यां छे.

पींडवाराथी एक माईल दूर अजारी गाम आवेलुं छे ज्यां कुमारपाळ राजानुं बंधावेल बावन जीनालयनुं मंदिर छे.

अजारी गामथी अडधा माईल दूर जगलमा एक मारकड रुपीनु आश्रम अने अत्यंत पुराणु सरस्वती देवीनुं मंदिर आवेलुं छे. मारकड रुपी लाबा समय दरम्यान थई गया जेओने अन्य धर्मवाळा अमर माने छे जेवी रीते गोपीचद, भ्रातृहरी आदीने मानवामा आवे छे तेवां ज रीते तेओने पण माने छे. मारकंड रुपीना आश्रमनी लगोलग सरस्वती देवीनुं पुराणु स्थान छे. ज्या मथमना पूर्वाचार्योए ध्यान करी जीवन-नौका आत्ममार्गे दीपावी छे

जेवा के वसीष्ट रुपी, विश्वामित्र, भोज राजा, पडीत काळीदास, बपभट्ट सूरी, हेमचद्राचार्य, सिद्धसेन दिवाकर, अभयदेवसूरी, आदी अनेक महात्माओए आ पवित्र स्थानमा ध्यान करी आत्म मार्ग दीपाव्यो छे. तेवीज रीते आ वीरात्माए पण आ पवित्र स्थानमा घणा लाबा समय सुधी मौन व्रत आदरी रात्रि अने दिवस सतत ध्यान करी पोतानी मनोकामना सिद्ध करी छे. जे समये केवरली गामना रहीश एक ब्राह्मण लक्ष्मीशकर आ वीरात्मानी साथे भक्तिमा रहेता हता तेओने कुदरती सस्कृतनुं ज्ञान सपादन थयु अने गीताना ८४००० श्लोक आठ दिवसमा कठ स्वरे थई गया. जेओ हाल विद्यमान छे अने भक्तिनी नीजानद मस्तीमा ज जीवन वीतावे छे

पहाडोनी भेखडो अने घनघोर वनदृक्षोनी घटा अने पांचस्रें खजुराना वृक्षथी भरचक भूमीनी वचमा ए स्थान आवेलु छे के

जेनो देखाव एटलो बधो रमणीय अने शांती स्वरुप छे के महा-
त्माओना माटे तो ए एक असीम शांतीनुं पवित्र स्थान छे.

नीकळ्या अरे ए वन विषे, मृत्यु तणो भय छोडीने,
माया अने ममता तणां, सहु बंधनोने तोडीने.

मारकंड रुषीना आश्रममांथी वीचरी आ वीरात्मा पवीत्र आबू गीरीराजमां आव्या. आबूना पहाडमां पूर्व समयमां अ-संख्य रुषी मुनीओए ध्यान करी मुक्तता प्राप्त करी छे ए पवीत्र आबूगीरीमां आवेलां भयानक स्थानो के ज्यां हिंसक पशु सिवाय मानव भाग्ये ज मळी आवे. जेवां के वसी-ष्ठाश्रम, पाटनारायण रुषीकेष, गुरुशीखर आदी निर्जर भयानक स्थानोमां आ वीरात्माए रात्री अने दिवस मौन व्रत अने तप-श्चर्या साथे मृत्युने हथेलीमां राखी ध्यान कर्या, मीठा वगरना अडदना बाकुळा उपर छ छ मास सुधी रही रसेन्द्रीयनो निग्रह कर्यो, अने अडोल आसने ध्यानस्थ दशामां रही जीवन ज्योतने झूकावी मृत्युनी सामे झझुम्या.

साधु संयम वेलडी, तीक्ष्णधार कहेवाय;
ए धारे जे नाचता, ए नरवीर कहाय.

आ वीरात्माए घोर अभीग्रहो अने मरणांत उपसर्गो सहन कर्या छे के जेनो एकज दाखलो हुं आ स्थळे मुद्रीत करुं छुं.

पींडवाराथी बेकोस आगळ वामणवाडजी तिर्थ आवेलुं छे के ज्यां भगवान श्री महावीरना कानमां खीला ठोकवामां

आव्या हता जे तिर्थमा वावनजीनालयनु भगवानश्री महावीरनुं भव्य अने अलौकीक मदिर छे ते पवीत्र स्थानमा आ वीरात्मा वीराजता हता. एक समय दरवाजाना उपरना मेडे रात्रीना ध्यानस्थदशामा हता ते मेडो जमीनथी लगभग पदर फुट उंचो हशे, जेनी नीचेनी जमीनमा पत्थर शिवाय कई ज न हतुं उपरोक्त मेडानी वारी पासे वेसी आ वीरात्मा ध्यान करता हता त्या अचानक उपसर्ग थवाथी नीचे पत्थरोमा पटकाया, जे समये मस्तकमाथी लोहीनी धारा वही हती परतु तेओश्री तो ध्यान मुग्धज हता अमुक समय वाद कारखानाना माणसोने खबर पडी, वाद योग्य सेवा करी उपरना मेडे वीराजमान करवामा आव्या. आवो भयानक उपसर्ग होवा छता तेओश्रीए पोतानी शाती जरा पण गुमावी नहोती ! आवा अनेक उपसर्गो सहन करी तेओश्री आत्म मार्गमा आगळ वध्या छे.

भगवान श्री महावीरे जेवी रीते एकीका जगलो, पहाडो अने वस्ती वगरना निर्जर स्थानोमा वीचरी आत्म ज्योतने दिपावी छे तेवी ज रीते आ वीरात्माए वर्षो सुधी ध्यान करी तेज पथे आत्मज्योतने प्रकाशी छे

अहींसा अने सत्य ए तेओश्रीना मुख्य सिद्धात छे. भगवानश्री महावीरनो महामत्र क्षमावीरस्य भूषणम्ने आ वीरात्माए पोताना रोमेरोममा स्थापन कर्यो छे

एक समय संवत १९७३नी सालना अरसामां आ वीरात्मा जोधपुर प्रदेशमां आवेल जसवंतपुरा परगणामां सुदानो पहाड आवेलो छे त्यां वीराजता हता. सुदाना पहाड उपर एक जगमशहुर चामुंडादेवीनुं मंदिर आवेलुं छे. ज्यां सहस्रगण्य मानवो दर्शनार्थे आवे छे. जोधपुर ईलाकामां आ मंदिरनी प्रतिभा सारी गणाय छे. दशेरा अने नवरात्रीना तहेवारमां धर्मना व्हाने पशु वधनो त्यां भोग अपातो हतो. नवरात्री अने दशेराना तहेवारमां घणाज मुगा पशुओनी त्यां हिंसा थती जे समये ते पहाड उपर सुदा नामनुं एक सरोवर आवेलुं छे जेनुं पाणी लोही समु बनी जतुं. आ कटर जीवहिंसा बंध कराववाने आ वीरात्माए पोताना आत्मबळ द्वारा घणी ज जहेमत उटावी अने मंदिरना पूजारी वर्गने सदुपदेश करी जोधपुर स्टेट द्वारा मंदिरमां थती जीवहिंसा बंध करावी.

धीमे धीमे आत्म कमळ खीलतुं गयुं अने आत्म मस्तीना अद्वैत प्रभावथी विश्वमां वसता असंख्य मानवो आ वीरात्माना चरणमां लोटता थया. जातीनो भेदभाव अगर कोईपण धर्मना मतमतांतर वगर विश्वप्रेमना अदभूत आत्मबळथी हरेक कोमना मानवो जेवा के पारसी, युरोपीअन, मोमेडन, भील, मेणा, हरगडा ईत्यादी मानवो तथा भारतना सेंकडो राजा महाराज़ाओ आ वीरात्माना चरणे झूकाया. जेम जेम तेओ संसर्गमां आवता थया तेम तेम जीवदयानां सूत्रो तेओश्री

हरेकने पढावता गया. असल्य मानवो भील, मेणा, हरगडा आदी अनेक जीवात्माओने दारु, मासाहार वध करावी पुन्य मार्गे प्रवेश्या. भील अने मेणानी ए तरफ एवी क्रूर जात वसे छे के कपडानी खातर धोळे दीवसे मानवना प्राण हरी ले छे. तेवी अज्ञात अने हिंसक कोममा आत्म प्रकाश फेलाव्यो अने हिंसाथी बचावी तेओना बाळकोना शिक्षण माटे अगाउ हुं लखी चूक्यो छु ते मारकड रुपीना आश्रममा आवेल सरस्वतीजीना स्थानमा अज्ञात कोमना छोकराओने विद्यादान आपवा विद्यामदिर खूल्लु मूक्युं छे

अहींसानो जयघोष

भगवानश्री महावीरे अहिंसा सूत्रनी रोमे रोममा भट्टी सळगावी हती. भगवानश्री महावीरे आखाए जीवनमा प्रथम अहिंसाने ज स्वीकारी हती अने जगतभरमा अहिंसा अने सत्यनो विजयध्वज फरकाव्यो हतो पोते गृहस्थाश्रममा एक राजवशी नबीरा होवा छता अढळक लक्ष्मी अने वैभवोने ठोकर पर मारी त्याग मार्गमा प्रवेशी घनघोर वनवृक्षो अने एकीका पहाडोमा फरी बार वर्ष सुधी घोर परीसहो अने मरणात उपसर्गो सहन करी कैवल्यज्ञानने पाम्या हता भगवानश्री महावीरे विश्वना कल्याणार्थेज जीवन ज्योत झूकावी हती. आखाए जीवननो विकास भगवाने वीरता अने क्षमा साथेज उद्भव्यो हतो.

पण करवुं नहि परंतु वेटरनरी हॉस्पिटलना खर्चे पोलीसे हॉस्पिटलमां मोकली आपवुं.

एक समय आ वीरात्मा आबूनी आसपास विचरता हता. शीवगंजनी पासे एक पोमावा करीने गाम आवेलुं छे त्यां फरता फरता आवी गया. आ वीरात्माना पधारवाथी गाम लोकोमां अति उत्साह थयो अने अति अति आग्रह साथे रोकावा प्रार्थना करी. गाम लोकोनो आग्रह अने उत्कृष्ट भाव नीरखी आ वीरात्मा त्यां वीराज्या. ते समये पोमावा गाममां एक मारवाडी गृहस्थ रतनचंद करीने हता जेओनां धर्मपत्नीने वीश स्थानकनी ओळीनुं व्रत उच्चरवानुं हतुं तेओने रात्रीना एकाएक विचार थयो के आ वीरात्मा समक्ष अति धामधूम साथे अट्ठाई महोत्सव आदरी व्रत उचरवुं अने मारी शक्तिनुसार द्रव्यनो सद्व्यय करवा. सवारना आ वीरात्मा समक्ष आवी रतनचंद शेठे पोतानी आंत्रिक जीज्ञासा दर्शावी. गाम लोको पण एकत्र थई गया अने अति धामधूम साथे अट्ठाई महोत्सव आदी शुभ कार्यनी गोठवण नक्की करवामां आवी. आजुबाजुना गाममांथी हजारोना प्रमाणमां मानवोने नोतरवामां आव्यां. अट्ठाई महोत्सव त्रिविध प्रकारनी पूजाओ भणावतां आठ दीवस सुधी नवकारशीनां जमण करवामां आव्यां. जेमां वीन गणतीनां हजारो मानवो जम्यां अने अति हर्ष साथे व्रत उचरवामां आव्युं. अने आ वीरात्माना शुभ प्रभावथी सर्व कार्य निर्वीघ्नपणे समाप्त थयुं. रतनचंद शेठे पण घणी ज सारी

लक्ष्मीनो सतप्रयोग कर्यो अने मनना मनोरथ सफळ कर्या गाम लोकोमा पण रतनचद शेठनी वाह वाह थई अने पोमावा गाममां जय जयकार वर्तायो. गाम लोको पण रतनचंद शेठनी उदारता निहाळी चकित बन्या महान पुरुषोनी गती अकळ होय छे के ए ज्या पधारे त्या न बनवानी लीलाओ बनी जाय अने जीवनमा निहाळ्यु ना होय ते प्रत्यक्ष नीरखाय.

मारवाडमां एक चामुन्डेरी करीने गाम आवेलु छे जे गामनी प्रतीभा घणी सारी छे. गाममा भव्य देरासर उपाश्रय आदी आवेला छे तेमज जैनोनी वस्ती पण सारा प्रमाणमां छे. चामुन्डेरी गाममा देरासरनी प्रतिष्ठा करवानी हती जेनु महुरत नक्की थयु हतु. महुरतनो टाईम नजीक आवता गाममा उपद्रव फाटी नीकळयो जेथी गामना मानवो गभराया अने विचारमा पड्या. ते समये आ वीरात्मा अजारी मुकामे वीराजता हता. आसपासना मानवोमा तेओश्रीनी पीछाण ते समये जाहेरमा न हती. कारण के पोतानी आत्ममस्ती अने निज्ञानदे ज जीवनने वीतावता चामुन्डेरीमा तेओश्रीना केटलाक परम भक्तो हता तेओए आ वीरात्मा पासे जई तेओश्रीने आग्रह करी आपणा गाममा पधरावी तेओश्रीना शुभहस्ते सर्व वीधी करवामा आवे तो जल्दी शाती थशे तेवा विचारो गामलोकमा दर्शाव्या. गामलोको तो गभराएला हता अने शाती माटे ज फाफा मारता हता तेओए आ सर्व हकीकत कबुल करी अने अमुक माणसो आ वीरात्माने विनती करवा अजारी मुकामे

आवी गया. आवेल श्रावकोनी हकीकत श्रवण करी तेमज खास आग्रह होवाथी अजारीथी विहार करी आ वीरात्मा चामुन्डेरी तरफ वीचरवा मांडया. चामुन्डेरी गाममां आ समाचार आवतां गाम लोको खुशी थया अने मुग्ध हृदये राह जोवा लाग्या. नियत समये आ वीरात्मा चामुन्डेरीथी दूर एक कोस उपर आवी गयानी खबर पडतां गाम लोको अनहद उछरंग साथे वाजते गाजते सामैयुं करवा आगळ वध्या. गाममां पण आजना प्रभातथी सर्वत्र शांती फेलाई हती एटले आनंदनी अवधि न हती.

चामुन्डेरीथी एक कोस उपर ज्यां आ वीरात्मा पधार्या हता त्यां चामुन्डेरी गामनी मानवमेदनी आवी पहोंची. अती हर्ष साथे वंदन कर्या बाद आ वीरात्माए प्रश्न कर्यो के गाममां हवे शांती थई छे के केम ? गाममां तो प्रभातथी ज शांतीए साम्राज्य स्थाप्युं हतुं के कहेवानुं होय ज शुं ? सर्व मानवोए जणाव्युं के आपनी दयाथी आनंद मंगल वर्ताय छे.

चामुन्डेरी गामना अती उत्साह साथे आ वीरात्मा चामुन्डेरी गाममां पधार्या. पधारतानी साथे ज आ वीरात्माए आदेश कर्यो के प्रतीष्ठा महुरत आदीनी उछामणीनी बोली बोलवा जाजम बिछावो. हालनो समय घणो ज सारो छे अने घणी ज सारी आवक मंदिरमां थई जशे. आ वीरात्माना आदेशने स्वीकारी जाजम बीछावी बोली बोलवानी शरु करी जेमां एकी

टाईमे अेंशी हजार जेत्री मोटी रकमनी आवक थई अने त्यार-वाद सर्व कार्यनी छुटक छुटक बोलीओ मळी एकदर एक लाख अने अेंशी हजार रुपैयानी चामुन्डेरी जेवा नाना गामडामा आवक थई, अने आ वीरात्माना शुभ हस्ते प्रतिष्ठा आदीनुं कार्य सवत १९८४ ना जेठ वद ५ ना रोज जय जयकार अने आनंदनी नोवतो गगडावता सपूर्ण थयु. चामुन्डेरीनी आसपासना गामोमा स्नेह करावी नोकारशीनुं जमण करवामा आव्यु जेमा धार्या करता वधु मानव थई जवाथी गामलोको गभराया परतु ए वीरात्मानी लब्धीना अद्-भूत प्रतापथी स्नेह स्वामी वात्सल्य सपूर्ण रीते समाप्त थयु अने आनदनो धोध वहायो. आ सर्व ए वीरात्मानी ज अकळ लीला हती.

आ विश्वमां प्रसरी गई छे, दिव्यता त्हारी प्रभो,
आ विश्वमां घर घर विषे, ज्योती झघी त्हारी प्रभो.

संवत १९८९ नी सालमा आ वीरात्मा अचळगढ मुकामे वीराजता हता. जे समये श्री वामणवाडजी मुकामे अखील भारतीय जैनश्वेतावर पोरवाल ज्ञातीनु समेलन एकत्र थवानुं हतुं ते संमेलनना अग्रगण्य कार्यकर्ताओ तथा श्री मारवाडना सघनी आ वीरात्माने वामणवाडजी मुकामे पधारवाने अती आग्रह भरी विनती हती जेनो स्वीकार करी श्री वामणवाडजी मुकामे पधारवा आ वीरात्माए आदेश कर्यो हतो.

पोरवाल संमेलन

संमेलन एकत्र थवाना कार्यक्रम चैत्र वद एकम बीज अने त्रीजनो हतो. आ वीरात्माए पण अचलगढथी विहार शरु कर्यो. रस्तामां हजारो मानवोने पोतानी दिव्य वाणीथी पावन बनावतां आगळ विचरता हरेक गामना लोको रस्ता वच्चे आडा पडता अने पोतपोताना गाममां लई जवा सख्त हठ पकडता. लोक समूहना मनने रंजन करता करता चैत्र सुद बारशना अरसामां आ वीरात्मा श्री बामणवाडजी मुकामे पधारी गया ज्यां तेओश्रीना सामैया माटे सातसें मणना आशरे घीनी बोलीनी आवक थई हती.

बामणवाडजीमां एक अलौकीक भगवान महावीरनुं बावनजीनालयनुं देरासर अने फक्त धर्मशाळा ज छे, तेनी आजुबाजुमां गाम आवेलां छे. आ समये बामणवाडजी एक विराट नगर बनी गयुं अने देशोदेशथी मानवनां जुथ तेना आंगणे उतरी पड्यां. आ समये हर्षनी सीमा न हती. पोरवाल संमेलननुं तमाम कार्य शांतीथी पूर्ण थतां चैत्र वदी त्रीजना दिवसे पोरवाल संमेलन तथा श्री संघ अने पधारेल असंख्य मानव मेदनी समक्ष पोरवाल संमेलन अने मारवाडना श्री चतुर्वीध संघे आ वीरात्माने, योगलब्धी संपन्न, राज राजेश्वर अने अनंत जीव प्रतिपाळ आदी बिरुद अर्पण कर्यां. जे समये मारवाडमां वपराता चुडा बंध करवा अनेक स्त्रीओने आ वीरात्माए प्रतिज्ञाओ करावी हती.

आ वीरात्माना दर्शन माटे एक मास सुधी बामणवाडजीमां

असंख्य मानवमेदनी चालु रही के रात्री अने दिवस मानवनां जुथ वीखराता ज नहि.

एक समय शिरोही ईलाकाना ८८ गामना वयोवृद्ध अढीसो रायकाओ आ वीरात्माना दर्शनार्थे पधार्या हता तेओने सदुपदेश करी शुद्धा चार पाळवा प्रतिज्ञाओ करावी अने हरेक गामे ते पाळवा माटे रायका ज्ञाती द्वारा नक्की करवामा आव्युं हतु. वामणवाडजी मुकामे आ वीरात्माना वीराजवाथी असंख्य मानवो पुन्य मार्गे प्रवेशया अने कुसंप, क्लेशो, आदी नाश थई आनदना झरणा वह्या. एक समय शिरोहीना देरासरमा ध्वज दड चढाववा घणा ज मानवो मथी रह्या हता परतु नहि चढवाथी आ वीरात्मा ते समये त्या होवाथी देरासरमा पधारी ध्वजदंड पर हस्त मूक्यो के तुरत ज ध्वजदड चढी गयो.

संवत १९९० ना कारतक सुद पुनमना रोज दुजाणा गाम नीवासी मारवाडी गृहस्थ तरफथी छररी पाळतो नान्ही पच तीर्थीनो सघ वामणवाडजीथी काढवामा आव्यो हतो जेमा पाचेक हजारना आशरे मानवमेदनी उलटी हती. गामोगाम फरी अती हर्ष वहावतो ए संघ श्री वीरवाडा मुकामे मागशर सुद बीजना रोज पधारी गयो ज्या गाम बहार एक वृक्ष नीचे आ वीरात्मा वीराज्या हता ते समये श्री सघे आ वीरात्माने जगतगुरु, सूरीसम्राटपद अर्पण कर्यु ते समये कलकत्ताना

सुप्रसिद्ध शेठ जगतसींहजी तथा बीजां घणां ज प्रतीष्टीत कुटुंबो त्यां हाजर हतां.

ईन्द्रतणी वृष्टी थई, झरमर आयो मेह,
महान पुरुष भावी तणा, थयो दिव्य संदेह.

सूरीसम्राटपद

सूरीपदनी क्रिया मागशर सुद त्रीजना रोज बामणवाड-जीमां करवामां आवी हती. आ दिव्य संदेश चोतरफ फरी वळतां शीरोही नरेश, बीकानेर नरेश, लींबडी नरेश, जामनगर नरेश, पालणपुर नवाब साहेब, बावळाकोर, राजपुतानाना ए. जी. जी साहेब तथा बीजा घणाज राजा महाराजाओ ठाकोरो, युरोपीअन गृहस्थो, पारसी सज्जनो, प्रोफेसरो आदीए आ वीरात्माने अर्पेल पदवीओने सहर्ष वधावी लीधी अने गोलवाड प्रांतीय कोन्फरन्से पण ठराव पास कर्यो. एटलुंज नहि परंतु विश्वनी चोतरफ वसता मानवोए आ पदवीने सहर्ष वधावी लीधी.

तरुवर सरोवर संतजन,
चाथा वरखा मेह;
प र मा र थ के का र णे,
चारे धरीया देह.

महान पुरुषो हंमेशां जगतना उपकार माटे ज जन्म धारण

करे छे अने ज्यारे ज्यारे आवा टाइटलोथी या पदवीओ अगर विरुदोथी वीभूपीत करवामा आवे छे त्यारे तेओ पोतपोतानी योग्यता प्रमाणे कईपण करी वतावे छे पूर्व समयमा एवा अनेक दाखलाओ वनी गया छे, जेवी रीते हीरविजयसूरीए शत्रुजय तिर्थ रक्षा माटे राजा अकबरने प्रतीवोध्या हता हेमाचार्य महाराजे गुजरातना छेल्ला राजा कुमारपाळने प्रतीवोधी जैन वनाव्या हता।

आ वीरात्माना उपकारो अने तेना सवधनी लीलाओ घणी ज अदभृत छे के ते सर्वने प्रसिद्ध करवानु आ स्थळे स्थान नहि होवाथी मुख्य मुख्य वावतो ज चर्चवामा आवी छे.

आ वीरात्माना अद्भूत प्रभावथी असख्य मानवो पुन्य मार्गे प्रवेश्या छे अने हद उपरातना मानवोए आ वीरात्माना दर्शन करी मानवदेहने पावन वनाव्या छे. आजे विश्वनी चोतरफ घरो घरमा तेओश्रीनो जयघट वागी रह्यो छे. अहींसा सूत्रने उज्वळ वनावी मुगा जानवरोने अभयदान आपी तेना किल-किलाटमा कलोल पूर्यो छे.

पूज्य वनवानो दावो नहि करता पूजक वनवानी साची अभीलापा, गुरु वनवानो दावो नहि करता शिष्य वनवानी साची मनोदशा, आत्मानी अनहद शाती अने जगत कल्याणनी आदर्शभावना आ वीरात्माना रोमेरोममा गुजार करी रही छे जे जगत आजे मुग्ध कठे श्रवण करी प्रत्यक्ष निहाळी रह्यु छे.

आ वीरात्मा ज्यां ज्यां विचरे छे त्यां त्यां चोथो आरोज वर्ताय छे. गाम मटीने शहेर बने छे अने जंगल मटीने विराट-नगर बनी जाय छे. जींदगीमां नीरखी शके नहि तेवां शुभ कार्यों बनी जाय छे अने केवळ आनंद, आनंद, आनंद ने आनंद ज वर्ताय छे.

मेवाड प्रदेशमां उदेपुर नजीक श्री केशरीयाजी तिर्थ करीने एक जैनोनुं महान् यात्रानुं स्थान आवेलुं छे. ते तिर्थमां पंडा लोको मंदिरमां पूजन तथा जजमानवृत्ति करी मंदिरना पूजारीओ तरीके त्यां रहे छे ते श्री केशरीयाजी तिर्थमां पूजन –प्रक्षाल आदिनी घीनी बोली बोलाय तेनी वार्षिक आवक रुपिया दश हजार उपरांतनी हती ते आवक मेळववा पंडा-ओए कोषिश करेली अने वधारामां ते जैनतिर्थने वैश्नवनुं बनाववानी तैयारीओ चाली रही हती. जैनोनो ए तिर्थमां स्वतंत्र हक्क नथी, तेवुं जाहेरनामुं पण मेवाड राज्य तरफथी प्रसिद्ध थइ चूक्युं हतुं अने घणीखरी वैश्नवरीतिनी शरुआत पण थइ हती. वर्षो थयां चढावेल ध्वजदंड ते वखतना दिवान पंडित सरसुखदेवप्रसादजीनी पूर्ण मदद अने स्टेटनी पोलिसना रक्षण द्वारा देरासरमां होम आदि करी पंडाए ध्वजदंड उतारी नांखी त्रिकोणी ध्वजा चढावी हती. मेवाड राज्य अने जैनो वच्चे आ एक महान क्लेशाग्नि उत्पन्न थयो हतो, तेने शांत करवा आ वीरात्माने जे पदवीओ अर्पण करवां आवी तेना बीजा दिव-

सेज वामणवाडजी मुकामे तेओश्रीए पोतानो अभिग्रह जाहेर कर्यो हतो के फागण सुद तेरश सुधीमा मेवाड राज्य अने जैनो वच्चे शाती स्थापन नहि थाय तो उदेपुरनी हदमां जई फागण सुद १४ थी हु उपवास आदरीश. आ सर्व घटना जाहेर पेपरोमां प्रसिद्ध थई चूकी हतो.

प्रस्तुत हकीकत मुजब फागण सुद आठमना अरसामा वामणवाडजी मुकामेथी तेओश्रीए उदेपुर तरफ विहार कर्यो. जे समये असख्य मानवमेदनी तेओश्रीने भावभीनी विदाय आपवा उलटी पडी हती. आ हकीकतनी मेवाड राज्यना दिवानने खबर पडता त्रण दिवस अगाउथी मेवाडनी हदमा तेओश्रीने दाखल नहि थवा देवा सारु रात्री अने दिवस मेवाडनी चोतरफ पोलिसपेरो गोठववामा आव्यो हतो.

आ वीरात्मा पोताना ध्याननना अद्भूत बळथी फागण सुद तेरशना रोज बपोरना उदेपुरथी सात–आठ माईल दूर आवेल गाम मदारमा पधारी गया. आ हकीकतनी खबर पडता पोलिस अमलदारो दिग्मूढ बनी गया अने आ वीरात्माना चरणमा शीर झुकाव्या.

पोताना अभिग्रह मुजब फागण सुद १४ थी ए वीरात्माए उपवासनी शरुआत करी दीधी. बे एक दिवस बाद स्टेटना केटलाक प्रतिष्टित ओफिसरो साथे दिवान पडित सर सुखदेव-प्रसादजी गाम मदारमां तेओश्रीना दर्शनार्थे पधार्या. जे समये

दिवानने आ वीरात्माए घणा ज कडक शब्दोमां कह्युं के मारा एक साधुने माटे त्रण-त्रण दिवस सुधी आपे महान तकलीफ उठावी पोलिस आदिने अति कष्ट आप्युं. आजे हुं आप समक्ष बेठो छुं." आप मने जेलमां पूरी शको छो.

"दिवानजी! हवे तो वाळ सफेद थई गया छे, डाचां मरी गयां छे, मृत्यु आपनी आसपास भमी रह्युं छे, मात्र टुंक समयना ज आ दुनियाना आप महेमान छो, माटे आत्मानो कंईक पण ख्याल करी सत्यने ओळखतां शीखो.

दिवानजीनुं मृत्यु टुंक समयमां छे ते हकीकत केशरीयाजीना अभिग्रह संबंधमां जाहेर पेपरोमां प्रसिद्ध थयुं ते साथे प्रसिद्ध थई हती.

दिवानजी तुम हृदयमां, करो हवे कंई ख्याल,
दिवान दिव्य दीपक करी, करते पर कल्याण.

मनुजन्म महापुन्यथी, नर भव मळीयो सार,
फेर फेर ए नहि मळे, घटमां करो विचार.

मृत्यु फरीयुं चोदिशे, त्राप करे जीम बाज,
मरण सपाटो आवतां, डूबी जशे आ झाझ.

सत्य धर्म विण कोई नहि, जूठी जगत जंजाळ,
टुंक समय छे जींदगी, करशे काळ शिकार.

वाळ सफेद थया हवे, नैयां डगमग थाय,
करवानुं बहुधा कर्युं, शांती नहि लेवाय
फना थशे आ जींदगी, कंई नच आवे साथ,
शरण एक ईश्वर तणु, साचा छे जगनाथ.
सत्ता सहु रहेशे अहीं, कुटुंब ने परिवार,
त्यां नहि चाले कोईनु, शरण एक कीरतार.
कीधां कर्म नहि छोडशे, न्याय थशे दरवार,
शातिसूरी योगी कहे, भजो तु कीरतार

आ वीरात्माना दर्शनार्थे आवेल ओफीसरोए मस्तुत वावतमा जल्दीथी शाती करवा पोताना आन्त्रिक विचारो दर्शाव्या अने तेओश्रीने त्या सुधी छाश वापरवा माटे अत्यंत आग्रह कर्यो. ओफीसरोना वचनने मान आपी तेओश्रीए छाश लेवा निश्चय कर्यो वे-एक दिवसमाज आ वावत उपर तेओ-श्रीने वजूद नहि जणावाथी छाश लेवानी वध करी.

त्रीस दिवस सुधी मदार गाममा आ वीरात्मा एक जैन-गृहस्थनी झुंपडीमा विराजमान थया हता एक नानी मेडीमा तेओश्री विराजता अने नीचेना भागमा आसपास ढोर वधाता. जरूर आ स्थळे मारे जणाववु जोईए के ए जैनगृहस्थना पण महद् धनभाग्य अने अनेक जन्मना पुन्य कहेवाय के आवी महान तपश्चर्या साथे आ वीरात्मा तेओनी झुपडीमा विराज-मान थया

मदार गाम जेमां सोएक घरांनी वस्ती भाग्ये ज हशे ते मदार गाम एक विराट नगर बनी गयुं, अने आखा मेवाडनो मुलक तेओश्रीना दर्शनार्थे उलट्यो. ज्यां असंख्य मानवोने दारु, मांसाहार बंध करावी पावन बनाव्या. उपवास चालु होवा छतां सवारथी सांज सुधीमां बीनगणतीनां मानव तेओ-श्रीना दर्शनार्थे आवतां ते तमामने दर्शन आपता अने सत्य पंथे दोरता.

आ वीरात्मा त्यां पधारवाथी सेंकडो अनाथ मानवोने रोजी मळी, तथा टांगावाळाओने छ छ मास सुधीनी पेदाश थई.

त्रीसमा उपवासना दिवसे ए वीरात्मा पोताना अद्भूत आत्मबळथी उदेपुरथी बे गाउ दूर आवेल गाम देवाली मुकामे प्रभातना पधारी गया. मदारथी देवाली गाम आशरे त्रण गाउ थतुं हशे. देवाली गाममां राज्यनो एक मोती महेल आवेलो छे जेने अगाउथी साफ करी तैयार राख्यो हतो. आ वीरात्मा देवाली नजीकमां थूरना वाड वच्चे बिराजमान थया हता त्यांथी असंख्य मानव मेदनीना जयनाद साथे मोती महेलमां पधार्या.

उदेपुरना महाराणा भोपालसिंहजीने पण कोई दिव्य संकेत थयो के तेओ पण ते ज दिवसे सवारना पोताना राज-महेलमांथी दूधनी खीर करावी साथे लई देवाली मुकामे मोती-महेलमां पधार्या अने आ वीरात्माना चरणमां शिर झुकाव्युं, अने शांती स्थापन करवा एक सूर्यवंशी महाराणा तरीके पोते

वचन आपी पोताना स्वहस्ते गुरुमहाराजने त्रीस उपवासनुं पारणुं कराव्यु अने हर्पना पुर उभराया

दिव्य भास अतर थयो,
भोपालसिंह महाराय
शांति प्रभो ! चरणे पडी,
अ त र मां ह र खा य.
वचन दीधु गुरु देवने,
सू र्य व शी म हा रा य.
मोती महेलमां पारणु,
म हा रा णा थी था य.
त्रीस उपवास पूरा कर्या,
आ न द त्यां व र्ता य
शां ति सू री गु रु दे व ना
सकळ लोक गुण गाय.

प्रस्तुत घटनामा जे जे दिव्य लीलाओ वनवा पामी छे तेनु कईपण दिग्दर्शन आ स्थळे करवु असंभवित छे.

जैनोना सेंकडो वर्षोना इतिहासमा एक जैन साधुने महाराणा पोताना स्वहस्ते पारणु करावे ते दृश्य आ चालु जमानानो अदर ता प्रथम ज छे.

मेवाड राज्य तरफथी एवु जाहेरनामु वहार पाडवामा

आव्युं के केशरीयाजी तिर्थमां जैन कोम शिवाय बीजा कोईनो स्वतंत्र हक नथी. मात्र श्वेतांबर अने दिगंबरना हक संबंधमां राज्य तरफथी कमीशन नीमवामां आव्युं.

नव भेद छे ज्ञाति तणो, नव भेद छे जाति तणो;
नहि भेद ज्यां उंचनीचनो, नहि भेद रंकश्रीमंतनो.
ज्यां विश्व आखुं एक छे, साचो प्रभुनो टेक छे;
नीज आत्मने पावन बनावो, ए ज अहीं संदेश छे.

संवत १९९१नी सालना वैशाख मासमां एरणपुर नजीक आवेला विसलपुर गाममां प्रतिष्ठामहोत्सव हतो. आजुबाजुना गामना मानव मळी वीस हजार उपरांत मानवमेदनी एकत्र थई हती. जे समये आ वीरात्मा विसलपुर पधार्या हता. वीस हजार उपरांत मानवमेदनीने पाणी पूरुं पाडवानुं कंईपण खास साधन न हतुं. मारवाड जेवो प्रदेश अने गरमीना दिवसमां पाणी केवी रीते पूरुं पडशे, ते बाबत गामलोकोने घणी ज मुझवण हती, परंतु आ वीरात्मानी अद्भूत आत्मशक्ति अने लब्धीना प्रतापे कुदरती पाणीनां झरणां फुटयां अने पाणीनी छोळो वही रही.

झरणां फुट्यां पाणी तणां
गुरुदेवना सुपसायथी
आनंद मंगळ थई रह्यां
गुरुदेवना सुपसायथी

जे कल्पना उरमां नती, ते सर्व शुभ हर्षे थयुं,
पासा बधा सवळा पडया, गुरुदेवनुं शरणुं फळयु.

आठ दीवस सुधी वीन गणत्रीनुं हजारो मानव जम्यु परंतु खोराकमा कोई पण दीवस टाच नही पडता ए वीरात्मानी लब्धीना प्रतापथी आनद मगळ वर्तोया. प्रतिष्ठा महोत्सवना शुभ दीवसे एकत्र थएल मारवाडनो श्री सत्र तथा कोन्फरन्स अने देश परदेशथी आवेल प्रतिष्ठीत मानवोए मळी आ वीरात्माने युग प्रधानपद अर्पण कर्युं. जेमा कलकत्ताना सुप्रसिद्ध जमीनदार "जेओना कुटुम्बने जगत शेठनो इल्काब वर्षो थया चाल्यो आवे छे ते शेठ जगतसिंह पण पोताना कुटुम्ब साथे ए शुभ अवसरे पधारेल हता. ते शीवाय केटलाक राजकुमारो तथा जोधपुर स्टेटना अग्रगण्य ओफीसरो साथे असख्य मानवमेदनी उलटी पडी हती ते समयनुं द्रष्य कोई अलौकीकज हतु के जेनी दिव्यतानो नजरे जोनारने ज ख्याल आवी शके.

जे समये आ वीरात्माने युग प्रधानपद अर्पण करवामां आव्यु ते शुभ प्रसगे केटलाके सोनामहोरो, अने केटलाके चांदी नाणानी ए वीरात्माना मस्तक उपर वृष्टि करी अने स्त्रीओए साचा मोतीनो स्वस्तीक कर्यो

अहो ! कीरतार तारी माया अति अद्भूत छे. आठ वर्षनी उमरमा दुनियादारीने ठोकर पर मारी त्याग वृत्ति अने साधु

जीवन प्राप्त करवा नीकळेल सगतोजी क्यां ? अने आजनो आ वीर पुरुष क्यां ?

उज्वळ बनावी आत्मने, ए वीर साचो नीवडयो;
जंगल अने पहाडो फरी, ए धीर साचो नीवडयो.
मृत्यु तणो भय छोडीने, मस्ती जगावी आत्ममां,
हींसकपशु नीज सम गणी, धूनी धखावी आत्ममां;
ॐकारना शुभ ध्यानथी, सिद्धी खरेखर पामीया,
वर्षो थकी तप आचरी, ए आत्मरसमां झामीया.

आ वीरात्मानी अद्भूत शक्ति अने अलौकिकतानुं वर्णन करवामां कोई विद्वान माणस तेओश्रीना विचारो लखवा विचारे तो पुस्तकोना थोकेथोक भराय तो पण पुरी रीते तो लखी शके ज नहि. तेओश्रीना अगाध गुणोनुं वर्णन करवुं अशक्य छे. तेओश्रीने ओळखवा ते ईश्वरने ओळखवा बराबर छे. तेओश्रीनी आत्म शक्तिनो जेओने अनुभव थयो छे तेओज केटलाक अंशे तेओश्रीने पीछाणी शके छे. उपरना शांतिविजयजी जुदा छे अने अंदरना शांतिविजयजी ते जुदा छे. जो अंदरना शांतिविजयजीने ओळखवामां आवे तोज साचा शांतिविजयजीने ओळखी शकाय.

"दुनिआनी सामे एने सत्यनी दीवालो खडी करी"
"विश्वंभरनो वारसो यशस्वी बनाव्यो"

" ॐकारनी अखंड ज्योतमां कर्म समूहने खाख करी शांतीनुं सिंहासन स्थाप्यु "

" असंख्य जीवात्माओने सत्य पथे दोरी पुन्य यज्ञमां प्रवेश्या "

" सेंकडो राजवीओने दारु मांसाहारनी बदीथी शुद्धि करी मुंगा पशुओना किलकिलाटमा हर्षनी नोबतो गगडावी "

" भारत मातानी गोदनो जयघोष करी विश्वनी चोतरफ सत्यनो संदेश पहोंचाडयो "

" युनीवर्सल लवना पवित्र सिद्धांतथी हरेक मानवोना मनने आनंद मुग्ध बनाव्या "

" आजे ज्यां निहाळो त्यां एना जयनादनो झणकार थई रह्यो छे "

वंदन हो ! वंदन हो ! ए वीरात्माने कोटानु कोटी वंदन हो !

लखनार
किंकर

परम कृपाळु श्रीमद गुरुदेवनां बोधवचनो

कंगालमां कंगाल मनुष्यमां पण दिव्यता गुप्तपणे बेठेली छे हुं अंदरने पूजनारो छुं.

वस्तुनुं पीछान करवानुं पुस्तकोद्वारा थई शके पण पुस्तकोनुं ध्येय तेज आत्मज्ञान, ज्ञाननी हद ते परमपद.

ॐ

तत्वने समज्यो नथी त्यां सुधी उपर उपरनी वधी एक-टींग छे.

ॐ

जे सत्य छे ते मारो धर्म छे. बहारनी तकलीफ शी वीसादमां? अंदरनी शांती वगर वधु नकामुं छे.

विवेकानंद ए पंडित हता अने स्वामी राम ए जबरजस्त आत्मार्थि हता.

ॐ

प्रवृत्तिमांथी निवृत्ति ल्यो एटले निवृत्तिमय प्रवृत्ति करो.

ॐ

बनी शके तो तमारा जीवनथी ने छेवटे तमारा विचा-रोथी बीजाने पवित्र करो.

महानुभाव! मारे जे जोईए छे ते तारी पासे नथी अने तुं कृपा करीने मने आपवा मागे छे, तेनी मने परवा नथी.

ॐ

विश्व मारुं मित्र छे ने हुं सौनो मित्र छुं.

ॐ

हु त्यागी छु ए भावनानो त्याग तेज साचो त्याग कही शकाय. शातीमय जीवन एज खरु जीवन छे एकान्तमा आनंद छे ॐ अर्हम्मा परम सुख छे

मनुष्यनु जीवन एवु होय के जेनी देवताओ पण यात्रा करवा आवे, एटलुं जीवन जीवजो

ॐ

भाग पीधेला मनुष्यने जेम छाश पीवा नीसो उतरे छे. तेम आ ससारमा संसारनी भावनाथी खरडाएला आत्माने शुद्ध करवा ॐकार मत्रना जापनी जरुर छे सहु आत्माने शुद्ध करवा मथजो.

लघुतासे प्रभुता मले, प्रभुतासे प्रभु दूर,
लघुता बीन प्रभुता नहि, लघुता घटमां पूर.
परम कृपाळु श्रीमद गुरुदेवने त्रिकाळवदन हो!

ॐ

आत्मभावना

श्री सद्गुरु भगवानना पवित्र चरण कमळमां

ओ ! प्रभो !

शुं लखुं ? शुं बोलुं ? शुं वदुं ?

लखतां कलम कंपाय छे, बोलतां जीभ धूजवाट करे छे अने वदतां विषयकषायमां मस्त बनेल आत्मा नशामंध दशामां गोथां खाई रह्यो छे.

ओ ! प्रभो !

तुं त्यागी अने हुं रागी ! तुं खाखी अने हुं स्वाखी ! तुं सद्गुणी अने हुं दुर्गुणी ! तुं परमात्मा अने हुं पापात्मा ! तुं निरंजन अने हुं रंजन ! तुं नीराकार अने हुं आकार !

आ जीवननो अंत केम आवे ? महासागरमां हींडोळे चडेलुं आ न्हाव पार केम पामे ?

ओ ! प्रभो !

आशा अने तृष्णाना गाढ बंधनमां घवायो छुं, संसार समुद्रमां झोलां खाउं छुं, मोह सैन्यमां झपाझपी करी रह्यो छुं, विषयनी अंध मस्तिमां क्षणे क्षणे कर्म बांधी रह्यो छुं, पळे पळे दोषीत बनतो जाउं छुं, नर्कनी नराधम वेदी उपर अनेक नृट-कांड भजवी रह्यो छुं, भव भ्रमणानी दुष्ट खाईमां पटकायो छुं, पुत्रमित्र अने कुटुंबमां पागल बन्यो छुं, मारुं मारुं करी बेल बनी रात अने दिन चक्की पीसी रह्यो छुं, नीजनुं भान भूल्यो छुं,

काळचक्रना पंजामा फसेलो होवा छत्तां नाशवंत मायानी पाछळ गेवी पासा खेली रह्यो छुं

हुं अती दुष्ट छु ! महा क्रूर छु ! कलंकी छु ! निष्ठुर छु ! नराधम छु ! निर्लज छु ! आ पापीनो उद्धार केवी रीते थाय ?

त्हारा शिवाय हवे कोई शरण नथी. तु अशरण शरणाधार, दीनपाळक, दीनदयाळ, दीनकृपाळ, दीनबधु, दीनदातार, दीनानाथ, कृपासिंधु, परब्रह्म परमात्मा छुं.

ओ ! प्रभो !

तुज माता तुज पीता तुज कुटुंब तुज लक्ष्मी अने तुज सर्वस्व छु

दयाकर ! दयाकर ! मारा अनंत दोषोने माफ करी त्हारो चरण स्पर्शी बनाव.

हवे क्या जाउ ? क्या पोकार करु ? क्या जईने रडुं ? त्हारा शिवाय मारा अश्रु कोण लूसे ? त्हारा शिवाय हवे नयनमां मार्ग नथी सूझतो ! कोई हवे शरणागत अने आश्रयदाता नथी त्हारा विना कोण तारे ? कोण पार उतारे ? हवे तो आ दीन दुःखी पामर नीराधार आश्रीत बाळकनो हाथ पकड, घणुं कह्युं थोडामां मानी सत्य पंथे दोर अने रहेम दीली दृपावी मने त्हारा शरणमा ज राख

ॐ शाती ॐ शाती ॐ शाती

त्हारो नीराधार दीन दुःखी बाळक

किंकरना त्रिकाल नमस्कार नमस्कार

श्री मांडोली नगर
अने
मंगल महोत्सव

अपूर्व उत्साह अने दैवी प्रतिभा

मारवाडना मध्य प्रांतमां जोधपुर प्रदेशमां आवेल मांडोली गाममां एक दिव्य महोत्सव थवाना भेदी गगननादो छवाया हता. गामनी चोतरफ वसता मानवसमूहमां आनंदनी अवधि न हती. विविध प्रकारनी कल्पनाओ अने भिन्न वातावरणो चर्चाई रह्यां हतां. लखलूट लक्ष्मीना खर्चे महोत्सव उजववानी जोसभेर तैयारीओ चाली रही हती. जेम बने तेम महोत्सवनी मनोरम शोभानो अनुपम चितार घडवा मांडोली गामना पंचो भेदी विचार श्रेणी गुंथी रह्या हता. दश दश वर्ष पूर्वनी आ अपूर्व सामग्रीओ हती. आजे एनो उदय थवाना मधरा, मधरा, सूरो गाजता हता. मनोहर भव्य मंडप, पंच पहाड़ोनी अद्‌भूत रचना, हस्ती, रथ, पालखी, घोडा, निशान, वाजींत्रो, तंबु, रावटीओ, कीटसनलाइटो आदि सज करवानी तमन्नामां मांडोली गामना मानवो कम्मर कसी पोतानो जाती भोग आपवा पोत-पोताना कार्यमां मशगुल बन्या हता.

सो घरोना मांडोली गामना महाडमां आजे शुं बनवानुं छे? अने शुं बनशे? तेनी कल्पना सरखी पण ते समये घडाती न हती. बस एकज धून अने एकज तानमां मांडोली गामनां

मानवो हर्षघेला वन्या हता. फळीए फळीए हर्षना पूर उभराया हता. गाममा वसतो प्रत्येक मानव आ अपूर्व अवसरनी घडीओ गणतोचकोर नयनो तलसावी रह्यो हतो. आनदनी उर्मीओ अने हर्षनी सीमा न हती.

एक रात्रि किंकरना आत्ममदिरमा आ दिव्य भणकाराए प्रवेश कर्यो अने घडीभरने माटे किंकरनो आत्मा विविध प्रकारना विचार समुद्रमा बेशुद्ध वन्यो. एना मानस अतरमां एक दैवी स्वप्न थयुं अनेक प्रकारनी कल्पनाओ अने भेदी विचारो साथे किंकरना आत्माए माडोली गाममा प्रवेश कर्यो आसपासना मानवसमूहमा चर्चातो वार्तालाप अने कल्पनाना सूरो श्रवण करता किंकरनो आत्मा हर्षघेलो वन्यो अने सर्व वार्तालापनुं मनन कर्या वाद किंकरे प्रश्न कर्यो !

"अरे! भाईश्री? आपना आ नाना गामना महाडमा चालतो वार्तालाप श्रवण करता मने तो आ वधु अलौकीक भासे छे. मारो आत्मा तो आ सर्व कल्पनाओ श्रवण करी चकित वन्यो छे.

"अरे! भाईश्री? आ शुभ कार्य कोना माटे थवानु छे?"

"साभळो—अमारा गाममा एक दिव्य महोत्सव उजववानी अपूर्व तैयारीओ चाली रही छे जे समये त्रण प्रसगो उजववाना छे."

" १ अमारा गाममा नवीन वधावेल भव्य जिनालयमा

पंचम तीर्थंकर भगवान श्री सुमतिनाथ स्वामीनी मूर्ति वीराजमान करवा सारु अंजनशलाका अने प्रतिष्ठा महोत्सव थवानो छे."

" २ त्रिकाळदर्शी महात्मा, गुरुदेव, भगवंत, श्रीमद् धर्मविजयजी तथा तेओश्रीना शिष्य महान तपस्वी, महात्मा, गुरुश्री तिर्थविजयजीनी मूर्तिओ बहारना शिखरबंधी भव्य गुरु-मंदिरमां वीराजमान करवानी छे तथा ध्वजदंड, कळश आदि चढाववानी शुभ क्रियाओ थवानी छे."

" ३ अमारा मारवाड देशना जैनोनी एक कोन्फरन्स एकत्र थवानी छे."

प्रस्तुत हकीकत श्रवण करी किंकरे फरी प्रश्न कर्यो. "अरे ! भाईश्री ? आ त्रिकाळदर्शी महात्मा, गुरुदेव, भगवंत श्रीमद् धर्मविजयजी ते कोण ?"

" सांभळो–अमारा मांडोली गाममां आजथी एक सैका पहेलां आहिर (क्षत्रिय) कोममां जन्मेल एक कोळोजी नामना मानवे जैन दीक्षा अंगीकार करी हती. तेओ महासमर्थ आत्म-ज्ञानी, त्रिकाळदर्शी पुरुष हता, तेओनुं जीवन अति अद्भूत हतुं, अने देवलोक पण अहींयां ज थया हता. जे जगाए तेओश्रीना देहने अग्निसंस्कार कर्यो हतो ते जगाए कुदरती लीला लींमनां वृक्ष उग्यां हतां. हाल त्रण लीमनां वृक्ष ते जगाए मोजुद छे. तेओनुं नाम श्रीमद् धर्मविजयजी महाराज अने तेओश्रीना शिष्यनुं नाम तपस्वी महात्मा श्री तिर्थविजयजी. तेओ मणादर

गामे आहिरज्ञातीमां जन्मेल हता अने मुडोतरा गामे देवलोक पाम्या हता. आ बन्ने गुरुनी मूर्तिओ अमारा गामना नाके जे जगाने अमे पेसकु कहीए छीए ए नजीक मनोहर, सुशोभीत, भव्य गुरुमदिर तैयार करेल छे तेमा गुरुमूर्तिओ विराजमान करवानी छे "

"अरे! भाईश्री? आ बधु कोना हस्ते थशे? ते शुभ क्रियाओ करावनार पण कोई महान पुरुषज होवा जोइए."

"साभळो–अगाउ आपने समजाव्यु ते त्रिकाळदर्शी महात्मा गुरुदेव भगवंत श्रीमद् धर्मविजयजीना शिष्यना शिष्य जेओश्री हाल माउन्ट आबू देलवारा मुकामे विराजे छे, तेओना नामथी भारतवर्षमा आजे भाग्ये ज कोई अजाण हशे। तेओश्रीनु शुभ नाम विश्वोपकारी, जगतवदनीय, महान योगीराज, गुरुदेव भगवत श्री विजयशातिसूरीश्वरजी. तेमना हस्ते आ शुभ क्रियाओ सिद्ध थवानी छे."

फिकरनो आत्मा आ घटना श्रवण करी आनंदसागरमां स्तब्ध बनी गयो एना आत्ममदिरमा हर्षनी सीमा न रही अने हर्षघेला अतरे बोली उठयो!

"अरे! भाईश्री? आपनी आ दिव्य वाणीए मारा आत्ममदिरमा कोई अनेरु तान मचाव्युं छे अने अपूर्व स्नेहमा तरबोळ बन्यो छु, के हवे शु बोलुं तेनु पण भान भूल्यो छु"

"अरे! भाईश्री! आपे जे महान पुरुषनु नाम मने श्रवण

कराव्युं तेओने तो हुं मारा आत्मोद्धारक प्रभु तरीकेज स्वीकारुं छुं. ए मारा हुं एनो. मारा मन तो एज पिता, एज माता, एज कुटुंब, एज धन, एज वैभव अने एज सर्वस्व. अहो ! ए दीनानाथ, दीनबंधु, दीनदयाळ, दीनरक्षक, शांतीना साचा उपासक, पर ब्रह्म परमात्म स्वरूप सदगुरु भगवान.

" अरे ! भाईश्री ? हवे तो कहेवानुं ज शुं होय ! आपना गामनां अति पुन्य कहेवाय के आवा दिव्यपुरुष आपना आंगणे पधारशे अने तेओश्रीना शुभ हस्ते सर्व कार्यनी सिद्धि थशे.

" वाह ! भाई वाह ! हवे तो आनंद आनंद ने आनंद ज मनावानो.

" अरे ! भाईश्री ! आनंदनी समृद्धि अने आपनी दिव्य कल्पनाओए मारा आत्माने बेशुद्ध बनावी मूक्यो. परंतु हवे मने कंईक ख्याल आवे छे के आपे मने प्रथम श्रवण कराव्युं ते त्रिकाळदर्शी महात्मा गुरुदेव भगवंत श्रीमद् धर्मविजयजी ते तो मारा आत्मोद्धारक गुरुदेव भगवंतना दादागुरु थाय. तेओना अद्भूत जीवन सबंधी केटलीक हकीकत मने पण अगाउ जाणवाने मळेली छे, जेनी में मारी नोंधपोथीमां अगाउ केटलीक नोंध करेली छे."

आटला संवाद बाद किंकरनुं स्वप्न पूर्ण थयुं.

संवत १९९४ना फागण सुद एकमनी सवारे श्री मांडोली गामथी कंकोत्री आवी पहोंची. अति लांबी अने पहोळी विशाळ

कङ्कोत्री, रंगबेरंगी शाही अने सोनेरी अक्षरोथी मुद्रित थएली मनन करी अति हर्षवंत बन्यो तेनी अंदरना लखाणनी लीटी लीटी वांचता मारा प्रत्येक रोममा विशुद्ध स्नेहनी सरिता वहेवा माडी अने ए दिव्य उत्साह साथे माडोली गाम तरफ प्रयाण करवानी तैयारीमा मशगुल बन्यो.

मारे आ स्थळे मारा आत्मप्रिय शेठजी वकील श्रीयुत हिंमतलाल प्रभाशंकरनो पुनः आभार मानवो जोईए के वखतोवखत आवा मांगलिक प्रसंगोमा अति उत्साहपूर्वक तेओ मने रजा आपे छे अने तेओना मारा परत्वेना अपूर्व प्रेमभावने लईने ज हु आवा अपूर्व अवसरोनो भोगी बनुं छु. आ सर्वमां ए मारा आत्मोद्धारक गुरुदेव भगवतनी कृपानो धोध छूपी रह्यो छे

आ समये गुरुदेव भगवत श्री विजयशांतिसूरीश्वरजी माउन्ट आबू देलवारा मुकामे बीराजता हता तेओश्रीना माडोली आगमन माटे माडोली गामना पंचो सख्त दोडधाम करी रह्या हता. तेनु कारण मात्र एटलुज हतु के प्रथम प्रतिष्ठा महोत्सवनु मुहूर्त संवत १९९४ना फागण सुद बीजनु निश्चित थयु हतु. परतु श्री गुरुदेवभगवते पाछळथी फागण सुद दशम जाहेर करवाथी पंचो अधीरा बन्या हता श्री गुरुदेवभगवते आगमननी चोक्स आगाही आप्या बाद सर्व पोतपोताना कार्यमा लागी गया.

माडोली गाममा आवनार मानव समूह माटे माडोली

गामना नाके एक विराट नगर रचवामां आव्युं, ज्यां पाल, तंबु अने रावटी आदिनी सुंदर सगवडो नियत थई चुकी. रात्रिमां भव्य प्रकाशने फेलाववा गाम अने नवा रचेल नगरनी आसपास कीटसन लाईटोनी हार गोठववामां आवी. एक माइल दूरथी आवनार मानवने नीरखतांनी साथेज कोई अनुपम दृश्य भासे एवी योजनाओ साथे हरेक पाल अने तंबु उपर त्रीरंगी ध्वजो मनोहर सौन्दर्यता साथे ऊडवा लाग्या. गाममां प्रवेश करवाना तमाम रस्ताओ उपर कलामय, रंगीन, अति मनोहर अने शोभानुं अंजन करावता आकर्षक दरवाजा गोठवाई चूक्या, दरवाजे दरवाजे चोघडियां माटे नानी मढुलीओ शणगारवामां आवी अने आखुंए गाम ध्वजापताकाथी सुशोभित बनी गयुं.

महोत्सवना समारंभमां नियत थएल वरघोडाने शोभाववा मनोहर पालखी, रथ, घोडां, हस्ती अने अमदावादनुं जाणीतुं बुलंद अवाज पोकारतुं शीख–बेन्ड आदि आवी पहोंच्युं.

आ अपूर्व महोत्सवना समारंभना अंगे वधु आकर्षक तो एकज हतुं के एक मनोहर भव्य मंडपमां पंच पहाडोनी रचना करवामां आवी हती, जेनी शोभा अने रचना मानवसमूहनां मनने रंजन करे तेवी हती. गामना नाके भव्य गुरुमंदिर अने गामनी वचमां भव्य जिनालय अपूर्व शोभा दिपावी रह्यां हतां.

आजुबाजुना गाम अने देशोदेशमां आ अपूर्व महोत्सवनो

संदेश पहोंची वळ्यो संवत १९९४ना फागण सुद त्रीजना प्रभातथी महोत्सवनी शरुआत हती.

संवत १९९४ना फागण सुद त्रीजनुं प्रभात थयु. आजे महोत्सवनो प्रथम दिवस हतो. कुंभस्थापना आदि विधिनुं शुभ मुहूर्त पण आजे हतुं. जेम जेम सूर्यनारायणे पोतानो प्रकाश फेंकवा माड्यो तेम तेम माडोली गामनी प्रतिभा खीलवा माडी चोघडिया अने बुलद वार्जीत्रोए गगनचुंबी घोषणाथी मानवसमूहना अंतरने आनंदमुग्ध बनावी दीधा. आजना प्रभातथी माडोली गाम एक विराट नगर बनवा माड्युं. एना आगणे मानवना पूर उभरावा माड्या अने व्यवस्थापको पण पोतानी हर्षभरी मुराद पार पाडवा आवनार मानवसमूहनी सगवड करवा पोतपोताना कार्यमा लागी गया. असख्य मानवसमूहना भोजनने माटे नवकारशीना जमण तथा पाणीनी घणीज सुदर योजनाओ करवामा आवी हती. विविध प्रकारनी पूजाओ भणाववा सारु याचक मडळीओ पण आवी गई हती. घोडा, उट, गाडा, मोटर आदि वाहनोए गामनी आजुबाजुना मार्गने घेरी लीधो अने ए दिव्य आनदना सस्मरणो गामनी चोतरफ फरी वळ्या. आजुबाजुना गाममाथी वोलॅंटयरोनी सेंकडोना प्रमाणमा टुकडीओ आवी गई. तेओ पण सेवाभावनाना आदर्शने शिरोमान्य करी पोतपोताना कार्यमा लागी गया.

गुरुदेव भगवत श्री विजयशांतिसूरीश्वरजीए पण

आबू माउन्ट देलवाराथी फागण सुद त्रीजना रोज विहार शरु करी दीधो अने फागण सुद छठनी बपोरे मांडोली गामथी एक कोस दूर आवेल गाम रामसीणमां पधारी गया. आ शुभ समाचार फेलातां असंख्य मानव मेदनी रामसीण मुकामे गुरु-दर्शनार्थे पहोंची वळी. रामसीण अने मांडोली गाम वच्चेनो मार्ग मानवसमूहथी एटलो बधो भरचक रह्यो के फागण सुद सातमनी सवार सुधी आ सर्व घटना विद्यमान रही.

फागण सुद सातमना रोज सवारमां श्री गुरुदेव भगवंत मांडोली गाममां प्रवेश करवाना हता. सातमना प्रभाते तेओ-श्रीना सामैया माटे दबदबाभर्यो भव्य वरघोडो नीकळवानो हतो. आ हकीकत पंचोए प्रथमथी नक्की करी हती.

सातमना प्रभातथी मानवसमूहमां कोई अनेरो आनंद फेलायो अने मांडोली गामना पंचो जे अधीरा बनी कार्य करी रह्या हता ते पगभर बन्या अने वरघोडानी सामग्रीओनो शरु-आत थई. प्रथम घोडा उपर सुशोभित वस्त्रोथी सज्ज थएल मानव निशान डंकाना भेदी पडघा पाडतो निशान डंका साथे खडो थयो, तेनी पाछळ वोलींटयरोनी टुकडीओ अने तेनी पाछळ मनोहर अंबाडीथी सुशोभित हस्ती अने तेनी पाछळ बुलंद अवाज पोकारतुं अमदावादनुं शीख-बेन्ड पोताना भव्य ड्रेसोथी सज्जित थई खडुं थई चूक्युं अने तेनी पाछळ ए दिव्यपुरुष, गुरुदेव भगवंत श्री विजयशांति-सूरीश्वरजी पोताना दिव्य प्रकाश द्वारा मानवसमूहनां मन

हरी रह्या हता. आसपास एक माईलना घेरावा सुधी मानव-सेना अपूर्व उत्साह साथे 'जगदगुरुदेवनी जयना भेदी गगन नादोनो गुंजार करी रही हती आ दिव्य पुरुषना अपूर्व सामैयानो आनंद लूटवा दरेक मानव पोतानी शक्ति अनुसार आ दिव्य पुरुषना शीर उपर नाणानी वृष्टि करी रह्यां हता वदामो अने नाणानी वृष्टि साथे तथा जयजयना गान अने वाजीत्रोनी गगनचुंवी घोषणाओ साथे आ दैव वरघोडाए माडोली नगरमा प्रवेश करवा माड्यो मानवसमूहनी असख्य मेदनीने लई लावो टाईम पसार करी माडोली नगरमा आ दिव्य वरघोडो प्रवेशी गयो मानवसमूह एटलो बधो उलटयो हतो के सूर्यनारायणनो प्रकाश पण मद दीसतो हतो

असख्य मानव मेदनीए गुरुदेव भगवंतना निवास स्थानने घेरी लीधु के रात्री अने दिवस मानव मेदनीना जुथ त्याथी विखराता ज नहि

फागण सुद त्रीजथी सुद नोम सुधीमा विविध प्रकारनी पूजाओ साथे अजनशलाकानी विधि पूर्ण थई. फागण सुद दशमनो दिन ए आखाए महोत्सवना माटे मुख्य हतो, कारण के ते दिवसे प्रतिष्ठा आदि कार्य सिद्ध थवानु हतु. फागण सुद दशमनुं प्रभात थता माडोली गाम एक विराट नगर बनी गयु. आजनी प्रतिभा अपूर्व हती सो घरनी वस्ती-वाळु माडोली गाम कल्पनामात्र न आकी शकाय तेवु आजे एक भव्य विराट नगर बन्युं अने चढता पहोरे ए प्रभाव-

शाळी दिव्य पुरुष, गुरुदेव भगवंत श्री विजयशांतिसूरीश्वरजीना शुभ हस्ते पंचम तीर्थंकर भगवान श्री सुमतिनाथस्वामी तथा गुरुदेव भगवंत श्रीमद् धर्मविजयजी तथा तपस्वी गुरु श्री तिर्थविजयजीनी मूर्तिओ, ध्वजदंड, कळश आदि स्थापन करवामां आव्यां अने जय जयकारना भेदी गगननादो साथे एकत्र थएल असंख्य मानव मेदनीए अपूर्व महोत्सवने हर्षभर्या उद्गारो साथे वधावी लीधो. आ शुभ दिवसे जोधपुर स्टेट तरफथी विमान आववानुं हतुं परंतु तेना आगला दिवसथी हवानुं वधु प्रमाणमां जोर होवाथी विमानमांथी पुष्पनी वृष्टि करवानी हती ते कार्य बंध करवुं पडेलुं.

फागण सुद अगियारशना रोज शांतिस्नात्र भणावी महोत्सव विसर्जन करवामां आव्यो. सर्व कार्य ए दिव्य पुरुष, विश्वोपकारी, जगतवंदनीय, महान योगीराज, गुरुदेव, भगवंत, श्री विजयशांतिसूरीश्वरजीना दिव्य प्रभावथी आनंद मंगल साथे समाप्त थयुं.

भारतवर्षमां हजु आवा दिव्य पुरुषो जीवंत छे तोज आवा मांगलीक प्रसंगो उद्भवी शकाय छे, जेनो आ एकज अलौकीक दाखलो छे, के एक सो घरना नाना गामडामां एक भव्य विराट नगर वस्युं अने नजरथी नहि नीहाळेल अद्भूत प्रसंगो अने दिव्य घटनाओ नीरखवा मळी. अने ए दिव्य पुरुषे पोताना स्वमुखे जयघोष कर्यो के मांडोली गाम

भविष्यमा एक नगरी वनी जशे अने आवो अपूर्व महोत्सव माडोली गाम अने एनी आसपास अद्यापि सुधी थयो नथी अने थशे नहि.

माडोली गामना सो घरनी वस्तीवाळा मानवसमूहे पोताना तन, मन अने धनना अपूर्व भोगे रात्री अने दिवसना सतत परिश्रमो सहन करी एक लाख जेवी मोटी रकमना द्रव्यनो सन्मार्गे व्यय करवानी शुभेश उठावी पोतानी मनोकामना सिद्ध करी छे. अने असख्य मानवमेदनी तेना आगणे उलटी पडी तेओने माटे अति अने श्रेष्ठ भावनाथी नवकारशीना जमण-उतरवाने माटे सुंदर सगवड आदि अनेक प्रकारनी श्रीसंघे जे अपूर्व भक्तिथी सेवा बजावी छे, ते बदल तेओ सर्वने आ स्थळे पुनः पुनः धन्यवाद घटे छे अने तेओनी आ अपूर्व धर्मभावनाने माटे तेओनो जेटलो आभार मानवामा आवे तेटलो ओछो छे.

आ उपरात जेओश्रीनो अंतकरणथी उपकार अने गुणानुवाद गावाना छे ते दिव्यपुरुष, विश्वोपकारी, जगत्वंदनीय, महान् योगीराज, अनाथोनाथ, दीनबंधुभगवान, परब्रह्म, परमात्म स्वरुप, शातीना साचा उपासक, प्रभावशाळी, कृपानिधान, प्रातःस्मरणीय, अध्यात्मज्ञान दीवाकर, सर्व जीवोने समभावथी नीरखनार, तिर्थरुप, गुरुदेव श्री विजयशातिसूरीश्वरजीनो आ नानकडा माडोली गाम उपर दिव्य प्रभाव न होत तो आ सर्व घटना बनवी असंभवित हती. तेओश्रीना

अद्भूत प्रभावने लईनेज असंख्य मानवमेदनी मांडोली गामना आंगणे उलटी पडी.

आ सर्वमां अंतःकरणथी उपकार तो श्री गुरुदेव भगवंत श्री विजयशांतिसूरीश्वरजीनो ज मानवानो छे के हजु भारत-वर्षमां आपणा महद् पुन्य प्रतापे ज आवा दिव्य पुरुषो जन्म धारण करी अंधकारमां डूबता जगतने सन्मार्गे प्रेरवा पोतानी अलौकीक शक्ति अने अद्भूततांथी अनेक जीवात्माओने तारी पोतानो जीवनविकास शुभ मार्गे दिपावी रह्या छे.

दादागुरुनी जन्मभूमि पण मांडोली गाममां हती अने स्वर्गवास पण त्यां ज पाम्या हता.

अंतमां मारी एटली ज प्रार्थना छे के श्री गुरुदेव भगवंतनी कृपाथी मांडोली गाम अने तेमां वसता प्रत्येक मानवसमूहनी दिनप्रतिदिन वृद्धि थाओ अने आवा मांगलिक प्रसंगो तेना आंगणे वधु अने वधु उजवाओ तथा श्री गुरुमंदिरनी ज्योत सदाने माटे तेजस्वी रहो.

दुहा

मंगल महोत्सव उजव्यो, धन्य माडोली गाम;
सघतणी सेवा कीधी, रह्यु अविचळ नाम. १

गाम मटी नगरी बनी, मानवनो नहि पार;
देश देशथी आवीया, वीन गणतीनी हार २

पचम तीर्थंकर प्रभु, सुमतिनाथ कहाय;
धर्म, तिर्थ, गुरुवर तणा, जिन रूडा देखाय. ३

पच पहाड रचना करी, शोभानो नहि पार;
हस्ती रथ ने पालखी, पूजा विविध प्रकार. ४

अजनशलाका उजवी, शातिसूरीश्वर राय;
शुभहस्ते सर्वे कर्यु, जय जयकार गवाय. ५

ओगणीसस्हें चोराणुने, फागण शुक्ल वदाय;
दशमीने चडते दिने, मूर्ति स्थापन थाय. ६

अहो ! प्रभो आ शु बन्यु, दिव्य लीला देखाय,
बन्यु नहि बनशे नहि, आनद अवधि थाय. ७

संघ जमण दवला थयां, लब्धि जळ उभराय,
शातिसूरी गुरुदेवना, सकळ लोक गुण गाय. ८

देशमहीं डंको थयो, दीनानाथ कहेवाय,
अनधूत योगीश्वर प्रभो, घरघर नाम पूजाय. ९

आहिर कुळमां उपन्या, जन्म मणादर गाम;
पिता भीमतोला अने, मात वसु छे नाम. १०

जननी कुक्षी दिपावीने, कुळ तार्युं गुरुराय;
आठ वरसमां निसर्या, संयम भार वहाय. ११

सोळ वरसे दीक्षा लीधी, गाम रामसीणमांय;
विश्व तणा साधु वन्या, तिर्थविजय गुरुराय. १२

धर्म तिर्थ गुरु पाटना, पटधर ए कहेवाय;
आत्मज्ञान घटमां वर्युं, अर्हं जाप जपाय. १३

महान पुरुप पूर्वे थया, एह पंथ लेवाय;
एकीका पहाडो फर्या, भक्ति सुधा उभराय. १४

घोर घटा वन वृक्षनी, गुफा खीणो गुरुराज;
रात दिवस लय ध्यानमां, साध्युं आतम काज. १५

मृत्यु भय अळगो कर्यो, सोहं सोहं ध्यान;
विश्व बधुं एकी दीसे, समता रसनुं पान. १६

शांती सरोवर नित्य वहे, करे कंईक जन स्नान;
रोग शोग भय भागीने, वरे भक्तिनुं तान. १७

सूत्र अहिंसा आदर्युं, बुझव्या कंई राजन;
भवसिंधुथी तारीया, पतित कर्या पावन. १८

अभयदान आप्यां अति, बच्या पशुना प्राण;
असंख्य जन उद्धारता, तज्यां मोह ने मान. १९

विश्व हमारुं मित्र छे, विश्व तणो हु मित्र,
क्षाम्य करो आपु क्षमा, एज जीवननी प्रीत २०

लक्ष चोराशी योनीमा, नथी कोईथी वेर,
पूर्व सवधे सांपडे, प्रभुभक्तिनी लहेर. २१

गुणो अति गुरुदेवना, लखे न आवे पार,
भाग्यवान नर पामशे, सफळ करे अवतार. २२

धन्य माडोळी गामना, अति पुन्य कहेवाय.
सो घर केरा म्हाडमा, उत्सव भारे थाय २३

लक्ष रूपैयो वापर्यो, भक्ति तणो नहि पार;
पच मळी सघळु कर्युं, पुरण कर्यो नीरधार. २४

तन मनथी सेवा करी, हर्ष तणो नहि पार;
गुरुभक्तिना तानमा, वर्त्यो जय जयकार. २५

अनुपम रचना आदरी, शोभा दिव्य अपार;
मानवपूर उभर्या अहीं, भाग्यवत नर नार. २६

दिव्य दीपक झळकयो अहीं, मणीमय रूप देखाय,
रवि शशि रळीयामणो, पूर्ण रूपे प्रगटाय. २७

मनवांछित फळ पामीया, पूरा मनोरथ थाय;
नगर माडोली गाममा, अमृत जळ वरसाय. २८

रात दिवस श्रम सेवीने, सहन कीधो परिताप;
क्षमा धैर्य हृदये धरी, भक्ति करी अमाप. २९

पंच मांडोळी गामना, चरणे करुं प्रणाम;
मानव जन्म सफळ कर्यो, कर्युं संघसन्मान. ३०

वृद्धि होजो गामनी, रहो सर्व आल्हाद;
महेर थजो गुरुदेवनी, वर्तो जय जयनाद. ३१

अनेक भवना पुन्यथी, मल्यो गुरुनो योग;
नमन करी पावन बन्या, नाश थयो सहु रोग. ३२

किंकर कहे आ शुं वन्युं, मुखे न वर्णन थाय;
कृपा पुरण गुरुदेवनी, पार कदी न पमाय. ३३

ॐ शांती ॐ शांती ॐ शांती

ॐ

अनुक्रमणिका

द्वीतीय गुरु काव्य तरंग

तृतीय श्रीशांतिसूरीश्वर काव्य तरंग

॥ ॐ श्री सदगुरुभ्यो नमोनम ॥

॥ प्रथम वैराग्य पद तरंग ॥

ॐ

वसंततिलकावृत

ओ ! विश्वनाथअभ्युदय आप लावो,
ओ ! सृष्टिना सृजनहारो कइ बचावो,
ओ ! विश्वना रुपीवरो कइ आपध्यावो,
योगेश्वरो मुनीवरो पथे चढावो.

१

आरती

जय त्रिभुवन स्वामी.

अजर, अमर, अविनाशी, शीवपुरना गामी. जय. १

आप अखंड अरुपी, अक्षय सुख पामी;
चर्णपडुं शीरनामी, दीनपाळकस्वामी. जय. २

भीन्नरुपे भजवाता, घटघटमां स्वामी;
आखर एक स्वरुप छो, अकळकळा गामी. जय. ३

आप विना जगमांहे, शरण नहि स्वामी;
रोग, शोग, भयनाशक, छो अंतर्यामी. जय. ४

ओ! जगत्राता दाता, विश्वेश्वर ज्ञानी;
बाळक अर्ज स्वीकारो, अंतरमां आणी. जय. ५

विश्वमहीं वसीया छो, जग वंदन स्वामी;
शुद्ध मने भजवाथी, तरशे सहु प्राणी. जय. ६

किंकर कहे प्रभु विण नहि, जग तारक स्वामी;
शांति! प्रभो दील वसीया, छे आतमरामी. जय. ७

२

कवाली

हवे आ जिंदगीमां हे, निराशाने निसासा शा;
समर्प्युं सर्व भावीने, पछी खोटा दिलासा शा. १

जगत वैभव भले सारा, थवाना ए नथी त्हारा;
छता ए अल्प मायामा, विवादोने विलापो शा २

ललाटे लेख अकाया, बुरा सारा निभावाना,
पछी आ जिंदगीमाहे, कडापाने वळापा शा. ३

जीवन जे चर्णमा मृत्यु, जरुर ए पार करवाना;
तने जे माहरो जाणे, पछी अहींआ विसामा शा ४

हृदय धीखतुं सदा त्हारु, नथी शाती पलकमा हे,
छता आ जिंदगीमा हे, अमाराने त्हमारा शा. ५

नथी आशा जणाती तो, करे छे आश शा माटे;
सफळ आशा जडी छे तो, जगतना भ्रम खोटा शा ६

त्हमारु मानशो जेने, कदापि ए थवानुं नहि;
छता ए छेलबाजीमा, प्रपचोने तमासा शा. ७

कर्यो निरधार अंतरमा जीहा निजनु तमे भासो,
पछी आ विश्वनी माहे, परायाना भरोंसा शा ८

मरे जीवे रहे कुटे, जवाना सर्व ए पये;
छता व्यवहारना फदे, जीवनना मोह खोटा शा. ९

फना ये जिंदगानी छे, जुदा छे जगतना पाशा,
परार्थे अर्पवा काजे, पछीथी वायदा शा शा १०

त्हमारा प्राणने श्वासो, पराधिन पींजरे पूर्या,
पछी आ जिंदगीमां हे, दिवाळीने दिवासा शा. ११

शरण जेनुं स्वीकार्युं छे, पुरो विश्वास निरधार्यो;
प्रीतम ए एक जीवनना, पछीथी व्यर्थ फांफां शां. १२

त्हमे क्षण एक नहि भूलो, पछी ए केम विसारे;
तफडतां ने फफडतां पण, प्रभोनी एक छे आशा. १३

फकिरीमां अमिरी छे, अमिरी एज छे साची;
फकिरी जिंदगी मांहे, खुशाली ने दशेरा शा. १४

त्हमे पण एक दिन फिकर, जवाना जिंदगी त्यागी;
पछीथी आ जीवनमां हे, निराशाने निसासा शा? १५

*

३

गझल

सरिता नीरना जेवुं, जीवन मानवतणुं एवुं;
पलकमां सर्व सुकातुं, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. १

भले धनवान के राजा, कदापी होय महाराजा;
प्रभुनां बाळ सर्वे छे, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. २

भले सत्ता तणा मदमां, अनाथोने रीबावे तुं;
समय पण आवशे त्हारो, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. ३

भले हो! योगी के भोगी, करे सहु डोळ डाह्यानो;
कदापी एह पण भूलता, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. ४

रुपीवरने मुनीवर सहु, गणाता सृष्टीना दाता;
चढेला ते कदी पडता, जुठु संसारनु स्वप्नु. ५

कुकर्मो घोर आचरता, डर्यो नहि तु अरे! भाई;
रडे छे तुं पछी शाने, जुठु ससारनु स्वप्नु ६

दुःखो ज्यारे तने घेरे, पछी तु इष्ट समारे;
बुरु करता न विचारे, जुठुं संसारनु स्वप्नु ७

अरे? लक्ष्मी तणा मदमा, कर्यां अपमान तें कइना,
थशे इन्साफ दरबारे, जुठुं ससारनु स्वप्नुं. ८

मर्या तु कइ नजर भासे, तीहा तु अश्रु सारे छे,
पलकमा सर्व तु भूलतो, जुठु ससारनु स्वप्नुं. ९

नथी कंइ साथ लाव्यो तु, नथी कइ लइ जवानो तु;
छता तु मोहमा भटके, जुठु ससारनुं स्वप्नु १०

करी ले कार्य उपकारी, जीवन म्हारु सफळ करवा;
कहे शाति चरण किंकर, जुठु ससारनु स्वप्नु ११

४

गझल

जगतना खेल छे खोटा, फुटे जळ माहे परपोटा;
छता मानव नहि समजे, वधो संसार बुरो छे १

मळी आ जिंदगी मोघी, जीवन मानव अमोलु छे,
समय तु व्यर्थ ना गणतो, वधो ससार बुरो छे २

सूतो शेय्या महीं ज्यारे, सगां सहु मन विषे धारे,
अमारुं शुं थशे त्यारे, वधो संसार बुरो छे. ३
अहो ! आ जिंदगी पाणी, अरेरे ! शुं कर्युं एने;
विचारे कोई नहि एवुं, वधो संसार बुरो छे. ४
रडे सहु स्वार्थने माटे, दुःखो एनां विचारे नहि;
पछी पोको मूके मोटी, वधो संसार बुरो छे. ५
जगतनी कारमी बाजी, जीने वीरला भमो कोई;
सजे छे आत्मनुं घोडा, वधो संसार बुरो छे. ६
करी आ विश्वनी सेवा, भलाई कर अरे ! भाई;
भरी ले आत्मनुं भातुं, वधो संसार बुरो छे. ७
अरे ! आ सर्व बंधनथी, जीवनने मुक्त करवाने;
शरण गुरु देवनुं साचुं, वधो संसार बुरो छे. ८
हजुं तुं चेत कंइ भाई, जीवन त्हारुं सफळ करवा;
भजी ले सदगुरुवरने, वधो संसार बुरो छे. ९
कमाणी कर अरे ! एवी, वनेलां पाप धोवाने;
कहे शांति चरण किंकर, वधो संसार बुरो छे. १०.

५

गझल

दशानां चक्र उंधां त्यां, सूझे साचुं नहि भाई;
लखाया लेख भावीमां, टळे नहि कोईथी भाई. १

दशा उचे चढावे छे, दशा पळमा गीरावे छे;
दशाना दुःख भोगवता, वचावे कोई नहि भाई. २

दशाथी कई वने डाह्या, दशाथी कई वने राया;
दशाथी कईक दुनीआमा, दीवाना थई फरे भाई ३

दशा सारी अने बुरी, नडे छे सर्व मानवने;
फसाता नव छुटे कोई, दशाना चक्रथी भाई. ४

सुखी वननार गुण गावे, दुःखी जन अश्रु उभरावे,
दशा त्या भान भूलावे, रडावे कईकने भाई ५

दशाना चक्र दुनीआमा, फरे छे चोदीशा माही;
छुटया नहि कोई एनाथी, भजीलो ईष्टने भाई. ६

हकीमो डोक्टरो ज्ञानी, छुटया नहि कोई विज्ञानी,
श्रीमतो रायने राणी, घणा पळमा वन्या फानी ७

अजव ! मस्ति जगावीने, धूनी घटमा धखावे छे,
रुपीवर एह पण कोई, दशाथी नहि छुटया भाई ८

महा मुनीजन रडावे ए, फना पळमा वनावे छे,
वीराओ सत्य समजीने, भजे छे ईष्टने भाई. ९

पूकारे धर्मना ज्ञाता, सदा ज्ञानी वीरो गाता;
दशाना दुःखथी वचवा, भजीलो ईष्टने भाई. १०

निरतर ईष्टने भजलो, नथी एना विना काई,
कहे शातिचरण किंकर, भजीलो ईष्टने भाई. ११

६

गझल

अमारा ने त्हमारामां, बधो वहेवार जुदो छे;
त्हमारुं जो तमे समजो, पछीथी पंथ सीधो छे. १

त्हमाराने अमारामां, रडे छे विश्वना प्राणी;
नहि समजे अरे निजनुं, तीहां वहेवार जुदो छे. २

समजदारो नहि समजे, मरे छे सर्व मायामां;
भींतर निजनुं पीछाणे तो, पछीथी पंथ सीधो छे. ३

जगतना नाश सुखोमां, लडे छे भाईने भांडुं;
अरे ! ए सत्य समजे तो, पछीथी पंथ सीधो छे. ४

लडावे स्वार्थ सर्वेने, मरावे स्वार्थ सर्वेने;
हृदयनो स्वार्थ समजे तो, पछीथी पंथ सीधो छे. ५

श्रीमंतो सज्जनो राया, नवीरा सर्व दुनीआना;
मरे छे मोहमां सर्वे, तीहां वहेवार जुदो छे. ६

हकीमो डोक्टरो ज्ञानी, जगतना वैद्य विज्ञानी;
बने अंतर नहि ज्ञानी, तीहां वहेवार जुदो छे. ७

भण्याथी नव मळे भाई, नथी इल्कावथी कांई;
हृदय निजनुं भणे त्यारे, पछीथी पंथ सीधो छे. ८

जगतनी छे अजब ! माया, अरेरे कंईक सपडाया;
भजीलो सद्गुरु राया, पछीथी पंथ सीधो छे. ९

हृदय धोया विना भाई, नहि समजाय निज केरुं,
कहे किंकर करो भक्ति, पछीथी पथ सीधो छे. १०

ॐ

७

गझल

मल्यु मानवजीवन मोंघु, अरेरे ! कंईक करतोजा,
प्रभुना पंथ जावाने, सडक तुं साफ करतो जा. १
चोराशीलाख फेरामा, अनंति वार तु भमीयो;
थवाने मुक्त एमाथी, सडक तु साफ करतो जा २
धूनी भक्ति तणी साची, मूकी तु क्या भुडा भटके.
जीवनने पार करवाने, सडक तु साफ करतो जा ३
जगतनी चोतरफ जोता, घटा घनघोर भासे छे,
नथी कई मार्ग देखातो, सडक तु साफ करतो जा. ४
मायाने मोहना बधन, नयनमा तें कर्यु अजन,
मूरख ए सर्व छोडीने, सडकतुं साफ करतो जा ५
फस्या सौ मोह मायामा, प्रभो ! आ विश्वना प्राणी,
भजी जगदीशने भाई, सडकतु साफ करतो जा. ६
मदीरा पान पी नाचे, अभागी त्या पुरो राचे,
नरकनी खाण ए साचे, सडकतु साफ करतो जा ७
तर्या नहि कोई मायामा, नहि तरशे अरे ! भाई;
मूरख ए सर्व मिथ्या छे, सडक तुं साफ करतो जा. ८

जीवन मृत्यु नहि आवे, अमर आनंद ज्यां पावे;
अरे! ए शोध करवाने, सडक तुं साफ करतो जा. ९

रडे तुं जेहना माटे, नथी त्हारुं थवानुं ए;
कहे शांति चरण किङ्कर, सडक तुं साफ करतो जा. १०

ॐ

८

गझल

अजब! मस्ति जीवन केरी, अखंडानंद साचो छे;
नथी त्यां कोईनी परवा, अरेरे कंईक करतो जा. १

झूकावे आत्म मस्तिमां, वीरो एवा घणा थोडा;
मरणनो भय विचारीने, अरेरे! कंईक करतो जा. २

जगत जंजाळने छोडी, जीवनने जे समर्पे छे;
धरावी धून अंतरमां, अरेरे! कंईक करतो जा. ३

निशानी स्वर्गनी साधे, प्रभुनो मार्ग ए वाधे;
जीवनथी सर्व आराधी, अरेरे! कंईक करतो जा. ४

मथ्या जे मुक्तीना माटे, जवाना एह जन नक्की;
जीवन उज्वळ बनाववाने, अरेरे! कंईक करतो जा. ५

नथी ज्यां डाघ अंतरमां, कलेजां साफ जेनां छे;
करीने आत्ममां शुद्धी, अरेरे! कंईक करतो जा. ६

फर्यो तुं बेल चक्कीमां, सगांने स्नेहीओ माटे;
विचार्युं नहि कदी त्हारुं, अरेरे! कंईक करतो जा. ७

जवानुं पथ लांबा छे, विकट छे मार्ग ए भाई;
जीवन रक्षक इहा शोधी, अरेरे! कईक करतो जा. ८

जीवन निर्दोष जेनुं छे, नथी ज्या भेद अंतरमां;
शरण एनु स्वीकारीने, अरेरे! कईक करतो जा. ९

कहे शांति चरण किंकर, भजी ले सद्गुरुवरने;
नथी एना विना साचु, अरेरे! कईक करतो जा. १०

ॐ

९

गझल

सळगती आग कर्मोनी, वसे त्या मानवी भाई,
बुझावी शात करवाने, शरण गुरु देवनुं साचु १

जगतनी चोतरफ भाळो, भभकती कर्मनी ज्वाळा,
अरे! ए नाश करवाने, शरण गुरु देवनुं साचु. २

करेला कर्म भोगवता, वचावे कोई नहि भाई,
हृदयमा हाम भरवाने, शरण गुरु देवनुं साचु. ३

भले हो रंक के राजा, कदापी होय महाराजा;
छुटया नहि कोई कर्मोथी, शरण गुरु देवनु साचु. ४

अजब! छे कर्मनी माया, हजारोने नचावे छे,
उगरवा एहथी भाई, शरण गुरु देवनु साचु. ५

रुषीवरने मुनीवर सहु, छुटया नहि कोई कर्मोथी,
वदे छे एह अतरमा, शरण गुरु देवनु साचु. ६

वने छे जेह जन मोटा, नमे छे कंईक चरणोमां;
अरे ! ए सर्व जुठुं छे, शरण गुरु देवनुं साचुं. ७
भिखारी भीख मागे छे, नयनमां अश्रुसारीने;
पूकारे एह अंतरमां, शरण गुरु देवनुं साचुं. ८
उंडा उतरी निहाळोतो, वधो संसार धुरो छे;
कहे शांति चरण किंकर, शरण गुरु देवनुं साचुं. ९

१०

गझल

अजव ! दुनीआतणी वाजी, गजव करनार माया छे;
वने सहु कर्मने आधीन, अजव ! छे कर्मनी माया. १
वने छे कर्मथी सर्वे, श्रीमानो रंक के राजा;
वधी ए कर्मनी वाजी, अजव ! छे कर्मनी माया. २
पलकमां शेठ वननारा, घडीकमां भीख मागे छे;
नचावे कर्म सर्वेने, अजव ! छे कर्मनी माया. ३
ग्रहो ज्यारे नडे त्यारे, विचारो कर्म संभारे;
रडे त्यां अश्रु सारीने, अजव ! छे कर्मनी माया. ४
मोटरमां म्हालतो त्यारे, गरीवनुं त्यां नहि हाले;
वधुमां गाळ वे आले, अजव ! छे कर्मनी माया. ५
नीशो लक्ष्मीतणो चडतां, मरे मदमां पुरो मानव;
मूरख त्यां भान भूले छे, अजव ! छे कर्मनी माया. ६

पूकारे आगणे आवी, अनाथो चर्णमा पडता,
दया अतर नहि आवे, अजव ! छे कर्मनी माया ७
करे सदेश आवीने, जीवननुं श्रेय करवाने,
अघोरी नींदमा ऊघे, अजव ! छे कर्मनी माया. ८
समय पलटाय छे ज्यारे, पछी अतर विचारे छे,
कहे शाति चरण किंकर, अजव ! छे कर्मनी माया ९

ॐ

११

गझल

अति तें पुन्य कीधा तो, मल्यु मानवजीवन भाइ;
अमालु रत्न समजीने, जीवन नौका तरी ले तु १
चोराशी लाख फेरामा, जीवन मानव अति दुलहु;
भूल्यो तो हाथ नहि आवे, जीवन नौका तरी ले तु. २
उतारी केफ अतरथी, भजी ले इष्ट तु भाइ;
करी भक्ति हृदय साची, जावन नौका तरी ले तु. ३
चड्युं छे वहाण चटोळे, अरे ! ससार सागरमा,
सुकानी शोधीने साचो, जीवन नौका तरी ले तु ४
भम्यो भवसागरे बहुधा, छता कइ पार नव आयो;
टीकीट जल्दी खरीदीने, जीवन नौका तरी ले तु ५
करे तु श्रम हवे शानो, चड्यु छे नाव तोफाने,
डूब्यु तो सौ व्यथा जाशे, जीवन नौका तरी ले तुं ६

हजु छे हाथमां बाजी, सुकानी शोध तुं जल्दी;
मदद जगदीशनी मागी, जीवन नौका तरी ले तुं. ७

मुसाफीर सर्व दुनीआना, अमरपद कोइ नहि लाव्युं;
जवानुं एक दीन नक्की, जीवन नौका तरी ले तुं. ८

अरे ! तुं एकलो आव्यो, जवानो एकलो भाइ;
नहि त्यां साथ कंइ आवे, जीवन नौका तरी ले तुं. ९

तजी तुं मोहने माया, भजी ले सद्गुरु राया;
कहे शांति चरण किंकर, जीवन नौका तरी ले तुं. १०

ॐ

१२

गझल

मीला नर भव महा पुन्ये, जीवन तुं पार करतो जा;
पीछेसे हाथ नहि आवे, मुसाफीर ख्याल करतो जा. १

बनी अंधा फीरा जगमे, विषयकी नींदमें सोता;
विचारा नहि कभी तेरा, मुसाफीर ख्याल करतो जा. २

मर्यो तुं इश्कबाजीमें, अरेरे ! रोझ सम भटके;
जीवन तेरा पीछाना नहि, मुसाफीर ख्याल करतो जा. ३

मूरख नीज भानको छोडी, फसायो नर्क बारेमें;
पीधी विष्टा मुखोसे त्हें, मुसाफीर ख्याल करतो जा. ४

बुरी हे ईश्ककी बाजी, पूकारे सज्जनो भाई;
सूनाते धर्म के ज्ञाता, मुसाफीर ख्याल करतो जा. ५

अधेरा चोतरफ घेरा, गगन वादळ चडा भारी;
फसाया जनबीचो में तुं, मुसाफीर ख्याल करतो जा. ६
तजी दइ इश्कका खेलो, भींतरमें भक्ति रस रेडो;
सफळ मानवजीवन तेरा, मुसाफीर ख्याल करतो जा ७
कहे शांति चरण किंकर, वीना भक्ति नहि जगमें;
सहारा कोइ भी सच्चा, मुसाफीर ख्याल करतो जा ८

१२

गझल

विषयनी अंध मस्तीमा, मुसाफीर कंइ फसाया छे;
बनी ए केफमा पागल, अरेरे मानवी भटके. १
विषयनी वास छे झेरी, बनावे ए कदी व्हेरी;
छता पागल भमे छे त्या, अरेरे मानवी भटके २
मळी जो एक समये तो, कदी छोडी नहि छूटे,
अजब ! ए मोहनी मानी, अरेरे मानवी भटके. ३
विषयमा कइ बने अंधा, भूलीने भान भटकाता,
विषय रस चाखवा माटे, अरेरे मानवी भटके. ४
समज दारो नहि समजे, महामुनीओ फसे छे त्या,
बुरी ! छे इश्कनी माया, अरेरे मानवी भटके. ५
चडेला उंच्च कोटीमा, तपस्वी ए गीरावे छे,
करे पळमा फना सर्वे, अरेरे मानवी भटके. ६

पत्नीव्रत छोडीने भाइ, अरेरे कंइक रखडे छे;
पतीव्रत पाळवुं दुल्हुं, अरेरे मानवी भटके. ७

फसावे मस्त त्यागी तो, छुटे क्यांथी अरे! मानव;
पूकारे ज्ञानीओ विष्टा, अरेरे मानवी भटके. ८

कहे शांति चरण किंकर, वीराओए तजे भाइ;
गजब छे इश्कनी माया, अरेरे मानवी भटके. ९

१४

कवाली

बतादो यह प्रभो! मुजको, मेरा उद्धार कैसे हो;
दीखादो यह प्रभो! मुजको, मेरा उद्धार कैसे हो. १

भयानक युद्ध कर्मोका, चला भवसिंधु में भारी;
मरा संसार सागरमे, मेरा उद्धार कैसे हो. २

जुठी माया जगतकेरी, फसाया जाण हो कर में;
कुकर्मो घोरही कीधां, मेरा उद्धार कैसे हो. ३

वनिता पुत्रके कारन, बनी पागल ढुंडा जगमे;
पडा में मोह कीचडमें, मेरा उद्धार कैसे हो. ४

अतीशय जुल्म हे मेरा, कीया सब शेरसम होके;
सताया रंक मानवको, मेरा उद्धार कैसे हो. ५

बुरी ये जिंदगानी हे, गुन्हा अगणीत प्रभो मेरा;
मूरख में क्या करुं वर्णन, मेरा उद्धार कैसे हो. ६

अमोला आप के वचनो, भूली मे नीदमें सोता;
नहि शोचा कभी घटमें, मेरा उद्धार कैसे हो. ७

बीना भक्ति नहि जगमे, सहारा कोइ भी सच्चा,
गुजारू नाथ चरणोमे, मेरा उद्धार कैसे हो. ८

दयाकर ओ दयासिंधु, शरण सच्चा तुमारा हे,
कृपाळु नाथ वतलादो, मेरा उद्धार कैसे हो. ९

पीडा हरते त्रिभुवनकी, यहा पर तुच्छ में तो हुं,
वता दो अब क्षमाकरके, मेरा उद्धार कैसे हो. १०

प्रभो ! शाति वीना जगमे, नयन भासे नहि मुजको;
पूकारे वाळ दीनकिंकर, मेरा उद्धार कैसे हो ११

ॐ

१५

हरिगीत छंद

कीरतारना दरवारमा, जावु वधाने छे खरे;
भाख्यु हशे भावी महीं, ए तो कदापि ना फरे १

दुनिआ तणा किचड महीं, तें मोज मन मानी पुरी,
भातु हशे नहि संग तो, भमवु थशे निश्चय खरे २

जाना पडेगा एक दीन, अपना मुसाफीर देशमें;
खर्ची हशे नहि साथ तो, साचो मुकानी नहि मळे. ३

इश्वर तणा दरवारमा, इन्साफ छे साचो अरे;
करणी करे तेवुं मळे, ए वात तो निश्चय खरे. ४

थेली हशे जो पापनी, तो सुख साचुं क्यां मळे;
करतां विचारे नहि पछी, रोया करेथी शुं वळे. ५

परमार्थ कार्य कर्युं हशे तो, कंइक साचुं सांपडे;
बाकी बधुं सहु जुठ छे, रोया करेथी शुं वळे. ६

भक्ति सुधा घटमां भरो, परमार्थ सहु प्रीते करो;
किंकर कहे छे शांतिनो, तो आत्मनुं सार्थक खरे. ७

ॐ

१६

हरिगीत छंद

संसारना अवधि दुःखोमां, सुख साचुं क्यां मळे;
ज्यां युद्ध चाल्यां कर्मनां, त्यां मानवीनुं शुं वळे,
अंगार सळग्या रोममां, ए आगमां सर्वे वळे;
सद्गुरु साचा मळे तो, कंइक पण शांती वळे. १

माया धुतारी मानवीने, मोहमां पटके खरे;
माया तणी महा जाळमां, मानव फसाया छे अरे,
माया महा विकराळ छे, माया अधम करनार छे;
माया छुटे ए नर तणो, जगमां ऊंचो अवतार छे. २

मोह सैन्य फरी वळ्युं, त्यां मार्ग साचो क्यां जडे;
आंधी चढी चारे दिशामां, पंथ साचो ना जडे,
मारा अनें त्हारा महीं, झकडइ मुवा मानव खरे;
ए मोहनीमां मुग्ध थइने, विश्वमां भटक्या करे. ३

माया तणा घा वागता, पोकार सहु मोटा करे;
निज कर्म भोगवता अरे, अश्रु नयनमाथी खरे,
प्रभु भक्तिमा लय थाय तो, शाती अहो ! साची मळे,
किंकर कहे निज आत्मनुं, ए कइक पण साधे खरे. ४

ॐ

१७

हरिगीत छंद

दुःखो तणा डुंगर पडे, सुख साहीबी कदी सापडे;
तो पण अरे ! आ देहथी, प्रभुने कदी भूलशो नहि. १
वैभव मळे लक्ष्मी मळे, माया तणा महेलो जडे,
ए बे घडीनी मोज छे, प्रभुने कदी भूलशो नहि. २
मगळ अमगळ गृह तूठे, कर्मो कदी निज पर वूठे,
ज्वाळा उठे तो पण अरे, प्रभुने कदी भूलशो नहि. ३
झोला हिंचोळा खाटमा, म्हाल्या करे आनंदथी,
ए बे घडीनी साहीबी, प्रभुने कदी भूलशो नहि.
वागो बगीचा पुष्पना, मुखमा सुवास लीधा करो;
ए वासना स्वप्ना समी, प्रभुने कदी भूलशो नहि. ५
मोटर अने गाडी महीं, आरामथी फरता फरो;
ए पळ महीं फानी थशे, प्रभुने कदी भूलशो नहि. ६
राज्य रिद्धिवत नर, पळमा भूजावे कइकने;
ए पण घणा फानी थया, प्रभुने कदी भूलशो नहि. ७

भीख मागवी जगमां पडे, अपवाद लोको बहु करे;
तो पण अरे आ देहथी, प्रभुने कदी भूलशो नहि. ८

जगसुख साचुं दुःख छे, सुख सत्य न्यारुं छे खरे;
ए सत्य सुखने शोधवा, प्रभुने कदी भूलशो नहि. ९

साची कृपा कीरतारनी, तृणने तजी मेरु करे;
किंकर कहे पळ मात्र पण, प्रभुने तमे भूलशो नहि. १०

ॐ

१८

हरिगीत छंद

प्राण जावे तोय गुरुनुं, हुं भजन छोडीश नहि;
जगत जड व्यवहारने हुं, जीवनमां जोडीश नहि. प्रा० १

आफत पडे कदी शीर परे, अन्नपान खावा नव रहे;
लोको भले नींदा करे, पण भक्ति हुं मुकीश नहि. प्रा० २

जगत साथे भगतने, बनतुं नथी ए जाणजो;
ए जगत मुजने शुं करे, ए हृदयमां आणीश नहि. प्रा० ३

शूरवीर सद्‌गुरु ओळखे, पागल विचारो शुं करे;
परवा करे नहि प्राणनी, ए वीरता चूकीश नहि. प्रा० ४

आशा नथी आ हृदयमां, धनमाल के दोलत तणी;
जरुर छे जे अखूट धननी, जगतमां शोधीश नहि. प्रा० ५

परमार्थ तो प्रीते करी, मुज आत्मनुं भातु भरीः
सद्‌गुरु संगत करी, सेवा कदी भूलीश नहि. प्रा० ६

आशीष मागु छु प्रभो, भक्ति अने नीती तणी;
किंकर कहे छे हर्षथी, हिंमत कदी हारीश नहि. प्रा० ७

ॐ

१९

हरिगीत छंद

एक दिन चाल्या जवानुं, मोतना पथे खरे;
मृत्यु न छोडे कोइने, ए वात तो निश्चय खरे. १

राजा गया चक्री गया, कोइ जगमा ना रह्या;
लाखो गया दुनिया तजीने, मोतना पथे खरे. २

वैदो हकीमो डोक्टरो, विज्ञानीओ मोटा भले;
ए पण जवाना ए दशामा, मोतना पथे खरे ३

धनवान हो के रंक हो, विद्वान के पंडित हो,
ए पण अरे! चाल्या जवाना, मोतना पथे खरे. ४

सत्ताधीशो न्यायाधीशो, सत्तातणा मदमा मरे;
सत्ता तजी ए पण जवाना, मोतना पथे खरे. ५

लाखो लूंटावे पळ महीं, जीववा तणी आशा ग्रही;
ए पण बधा चाल्या गया छे, मोतना पथे खरे. ६

डोक्टरो जग ना मळे, उपचार त्या बहुधा करे,
आखरे रडता गया छे, मोतना पथे खरे ७

त्रिकाळ ज्ञान धरावनारा, ज्ञानीओ मोटा भले;
ए पण कहे एक दीन जवु छे, मोतना पथे खरे. ८

परमार्थ कार्य कर्युं हशे तो, कंइक साथे आवशे;
पाप पुन्य भरी जवानुं, मोतना पंथे खरे. ९
लक्ष्मी अने वैभव हशे, ते सर्व अहींआं रही जशे;
जनम्या हता तेवा जवानुं, मोतना पंथे खरे. १०
परिवार सहु रडतो रहे, अश्रु नयनमांथी वहे;
काळ हरण करी जवानो, मोतना पंथे खरे. ११
परमार्थ सहु प्रीते करो, निज आत्मनुं भातु भरो;
किंकर कहे निश्चय जवानुं, मोतना पंथे खरे. १२

२०

हरिगीत छंद

लक्ष्मी अने वैभव तजीने, कंइक जन चाल्या गया;
नारी अने परिवार सहु, पोको मूकी रोता रह्या. १
मुछो परे लींबु ठरे, फक्कड बनी जगमां फरे;
परवा न करता कोईनी, ए पण अरे! चाल्या गया. २
मारा अने ह्हारा महीं, मगरूर थइ म्हाल्या करे;
ए पण अरे! माया मूकीने, एकदीन चाल्या गया. ३
जे शीरपरे चमर ढळे, खमा, खमा, सेवक करे;
ए पण बधा वैभव तजीने, एकदीन चाल्या गया. ४
नोबत गगडती गृहपरे, पहेरेगीरो पहेरो भरे;
ए महेल ने मोटर मूकीने, एकदीन चाल्या गया. ५

गरमी पडे हील पर जता, सुख साह्यबीमा फालता;
ए मोजने आराम छोडी, एकदीन चाल्या गया ६
हाकल थतां जी जी करे, मानव घणा चरणे पडे,
ए शेठ, शेठ, कहावनारा, एकदीन चाल्या गया ७
हाथ नहि कपडे पडे, अगे सदा अकड रहे,
ए शरीरने सभाळनारा, एकदीन चाल्या गया ८
आ जिंदगी फानी थशे, शुभ कृत्य साथे आवशे;
आत्मनुं साध्या विनाना, मानवी रोता रह्या ९
भक्ति सुधा अंतर भरो, निज आत्मनु सार्थक करो;
भक्ति विनाना मानवी, दुनिआ तजी रोता रह्या १०
माया तणा आ महेल छे, भक्ति जीवननी व्हेल छे;
ए व्हेलमा वीरला सजीने, मुक्तिमा चाल्या गया. ११
चेतो मुसाफीर जग्तना, हरदम भजो कीरतारने;
किंकर कहे एना विना, भवसागरे भमता रह्या. १२

ॐ

२१

चंदन तो कर रहा हु चाह्य तारो या न तारो-ए राग

एसी दशा ही आवे, कबही मीलेगा भगवत;
जब आत्म शुद्ध थावे, तबही मीलेगा भगवत. १
निज देह भान छोडा, मायासे मीत जोडी;
डूबने लगी है होडी, कबही मीलेगा भगवत २

भगवंत नाम भारी, प्रभु मोक्ष के घिकारी;
पडो चर्ण वारी वारी, तवही मीलेगा भगवंत. ३

भगवंत नाम अपना, वाकी सवी हे सपना;
हरदम हृदयमें जपना, तवही मीलेगा भगवंत. ४

भगवंत ज्योत जागे, मद मोह मान भागे;
घटमांहे घंट वागे, तवही मीलेगा भगवंत. ५

निश्चय कभी न छोडो, चीत्त एक मांहे जोडो;
मृत्यु पडे न छोडो, तवही मीलेगा भगवंत. ७

सव विश्व एक जाणो, उरमां न भेद आणो;
समभाव को पीछाणो, तवही मीलेगा भगवंत. ८

लघुता महीं प्रभुता, लघुता प्रभु वतावे;
घट मेल साफ थावे, तवही मीलेगा भगवंत. ६

किंकर कहे में राचुं, गुरुतान मांहे नाचुं;
शांति प्रभो! कुं याचुं, मुजको मीला ए भगवंत. ९

ॐ

२२

राग-वंदन तो कर रहा हुं

अब तो दया दृषा के, करुणा करो ए भगवंत;
प्रभो! आप महेर करके, करुणा करो ए भगवंत. १

महा घोर कर्म कीधां, दुःखीआ को दुःख दीधां;
सब आप ही पीछाणो, करुणा करो ए भगवंत. २

मुख को दीखा शकु नहि, औसा जीवन हमेरा;
सब आप माफ कर के, करुणा करो ए भगवत ३

भमीयो हुं अंध हो के, नयनो बनाये कातील;
सब जान के फसा हु, करुणा करो ए भगवत. ४

मुसे न बोल शक्ता, हस्तोंमे लीख शकु नहि;
कुछ आपसे न छाना, करुणा करो ए भगवत. ५

कपटों की जाळ रच के, निर्दोष जन फसाया,
सब स्वार्थ से कीया है, करुणा करो ए भगवत. ६

कादव की खाड दीसता, कीडा अति पडा है,
उन्होका एक में हु, करुणा करो ए भगवत ७

में नीच घोर कर्मी, सबमे बडा अधर्मी,
अब है शरण तुमारा, करुणा करो ए भगवंत ८

वचनो तुमारा भूल के, में क्रूर हो के भमीया;
सोचा नहि जीवनमें, करुणा करो ए भगवत. ९

सुन्दर प्रभो! कृपाळु, दीन पर बडे दयाळु;
तुम बीन सहु भकार, करुणा करो ए भगवंत. १०

सुरजांनि बीन जगतमें, नयनोमें घोर पासे;
फिरर पूकार करते, करुणा करो ए भगवत. ११

२३

राग—चंदन तो कर रहा हुं

मानव वधा जगतमां, माया महीं मरे छे;
जाण्या छतां विचारा, भमरा थइ फरे छे. १

माया हसावे सहुने, माया रडावे सहुने;
माया लडावे सहुने, माया गजब करे छे. २

माया अति बुरी छे, माया अजब छुरी छे;
कर्मो महीं वींधावा, माया खरे शूळी छे. ३

माया ए कंइक मार्या, मायाथी कंइक हार्या;
मायाथी कंइक जगमां, बेहाल थइ फरे छे. ४

माया तजीने वीरला, कंइ आत्म धून धरावे;
कहे शांति चर्ण किंकर, ए नर पुरा तरे छे. ५

ॐ

२४

वंदन तो कर रहा हुं—ए राग

लक्ष्मी विना जगतमां, कींमत नथी गणाती;
लक्ष्मी वीना जगतमां, बुद्धि नथी मनाती. १

लक्ष्मी लीला वतावे, लक्ष्मी सूता जगावे;
लक्ष्मी वीना जगतमां, हीकमत नथी मनाती. २

लक्ष्मी तणा नीशामां, कंइने अरे! रडावे;
लक्ष्मीमां अंध थइने, आंखो नथी खुलाती. ३

लक्ष्मीमा मोज माने, प्रभु रुप पोते जाणे,
परवा न कोइनी छे, ए वात त्या वदाती. ४
अडबोथ भोट होवे, बुद्धि न होय तोये;
लक्ष्मी वडे जगतमा, कीर्ती पुरी मनाती. ५
लक्ष्मीनी सर्व माया, लक्ष्मीनी सर्व छाया,
पळमा बने भिखारी, त्यारे नजर कराती. ६
बहु लोभ थाय त्यारे, पळमा हे नाश वाळे;
पछी हाय लागे त्यारे, पोको घणी मूकाती. ७
लक्ष्मीथी पुन्य करवा, महा ज्ञानीओ पूकारे,
कइ पुन्यशाळी नरनी, परमार्थमा लूटाती. ८
लक्ष्मी चपळ कहाती, पळमा फना ए थाती,
कहे दास जाय त्यारे, नव कोइथी रखाती ९

ॐ

२५

राग-गुरु शांतिसूरीश्वर स्वामी रे गुण गाउ आपना

हु भान भूली अथडायो, जगमा हवे थशे शु नाथ!
में हसते हसते कीधा, दुःखीआने दुःख बहु दीधा,
विषपान मुखेथी पीधा, मारु हवे थशे शु नाथ! हु-१
मायामा खेल गुमायो, महाक्रूर वनी भटकायो,
जुल्मी नर हु कहेवायो, मारु हवे थशे शु नाथ! हु-२

प्रभु नाम हृदय नहि आयुं, निजकेरुं भान भूलायुं;
आत्मीक हीत नहि समजायुं, मारुं हवे थशे शुं नाथ ! हुं-३

करतां नहि कोइ विचारे, भोगवतां त्राय पूकारे;
पछी प्रभु, प्रभु, संभारे, रडतां मूके मस्तके हाथ. हुं-४

सुत मात पिताने यारी, जुठी सहु दुनीआदारी;
प्रभु नित्य भजो भयहारी, साचा अनाथना ए नाथ. हुं-५

आ अरजी नाथ स्वीकारो, तुम अनाथ बाळ उगारो;
किंकर कहे डूबता तारो, झालो हवे अमारो हाथ. हुं-६

६

राग-हे रंगभीना नेमनगीना

अंध बनी आथडीया जगमां, मळे अरे क्यांथी भगवान.

प्रभु पंथ भाई जगथी न्यारो, अलख वासमां ए वसनार;
दिव्य चक्षु प्रगटे साचां तो, पछी मळे स्हेजे भगवान. अंध-१

प्रभु पंथ भाई अति विकट छे, कायर नरनुं त्यां नहि काम;
मृत्यु तणा भयने विसरे तो, पछी मळे स्हेजे भगवान. अंध-२

टीलां करता माळा जपता, मुखे करे प्रभुनां गुणगान;
तप करवाथी जप करवाथी, कदी नथी मळता भगवान. अंध-३

भस्म लगावे धून धखावे, राम रामनुं करता तान;
नदी तटे जइ स्नान करे छे, छतां नथी मळता भगवान. अंध-४

रुपी वने कई सत वने छे, फकिर वनी करता गुलतान;
घट मंदिर जोसाफ वने तो, पछी मळे स्हेजे भगवान. अथ-५

आत्म पीछाणे जोतु त्हारो, सदा करे समता रस पान,
विश्व बधु निज समझाने तो, मळे पछी स्हेजे भगवान. अथ-६

किंकर कहे प्रगटी अतरमा, ज्योत प्रभुनुं साचु तान;
मस्ति मही लखतो हु सर्वे, मळ्या प्रभो शाति गुणवान. अथ-७

२७

राग-छे रंगभीना नेमनगीना

नाथ निरजन भवभय भजन, नित्य हृदयमा ध्यावो रे;
भव दुःख भंजन पाप निकंदन, दुःखडा दूर भगावो रे. नाथ-१

अकळ अरुपी ब्रह्म स्वरुपी, झगमग ज्योत जगावो रे;
दिव्य स्वरुप ओ ! नाथ त्हमारु, बाळकने बतळावो रे. नाथ-२

दुःखडा टाळो नाथ निहाळो, तुम वीन नहि आधारो रे;
मार्ग भूलेला दीन बाळकने, रस्ते आप चढावो रे. नाथ-३

अमृत जळ अमपर वरसावो, साचो स्नेह वहावो रे;
भक्त तणी भीड दूर करीने, ज्योतिसे ज्योत मीलावो रे. नाथ-४

अकळ कळाओ ! नाथ तुमारी, मूर्ति मुज मन प्यारी रे;
त्रिलोक केरानाथ प्रभुश्री, दीन दातार कहावो रे. नाथ-५

पाय पडु हु नाथ तुमारा, अर्ज हृदयमा ध्यावो रे;
किंकर कहे आ दीन बाळकने, डूवतो आप बचावो रे- नाथ-६

२८

राग–धन्य भाग्य अमारां आज पधार्या मोंघेरा महेमान

कृपा करी ओ ! नाथ अमारा अंतरमां वसजो.
सदा हुं जाप जपुं त्हारा, प्रभो मुज प्राणथकी प्यारा;
घट घटनी सहु आप पीछाणो, अंतरमां वसजो. कृपा–१

मने आधार पुरो त्हारो, भूलोथी नाथ सदा वारो;
नाथ निरंजन भवदुःख भंजन, अंतरमां वसजो. कृपा–२

नयनमां नाथ तने भाळुं, दीसे नहि कोइ हवे बारुं;
परम कृपाळु आप दयाळु, अंतरमां वसजो. कृपा–३

प्रभो हुं दीन बाळक त्हारो, दीसे नहि कोइ हवे आरो;
त्रिभुवन नायक नाथ अमारा, अंतरमां वसजो. कृपा–४

वस्या छो विश्वमहीं स्वामी, धूनी तुम भक्ति तणी झामी;
बाळक किंकरदास तणा, घटमंदिरमां वसजो. कृपा–५

२९

राग–में बनकी चीडीयां बनमे बनबन बोलुं रे

ओ ! नाथ तुमारो बाळ गणीने तारो रे;
भान भूली भटकातो आप उगारो रे. ओ ! १

रडवडीयो मानवसंसारे, जन्ममरणनां दुःख बहु भारे;
तुम वीनकोन उगारे मुजने तारो रे. ओ ! २

चोराशी चक्करमां भमीयो, मानव भव बहु दुलहो मळीयो;
अंध बनी आथडीयो मुजने तारो रे. ओ ! ३

घोर घटा नयनोमां भासे, जीवन दुःखोथी मानव त्रासे;
तुम वीन शाती न थाशे मुजने तारो रे. ओ! नाथ ४

वाळक आ निरधार तुमारो,तुम वीन नाथ दीसे नहि आरो;
डूबतो आप उगारो मुजने तारो रे. ओ! ५

नाथ निरजन घटमा प्यारो, प्रभु वीन कोई नहि आधारो;
किंकरदास कहे छे जन्म सुधारो रे. ओ! ६

ॐ

३०

राग-मेटे झुले छे तरवार

त्रिभुवन तारण हार, नाथ आप हैडे वस्या छो;
नाथ केरा दर्शन भविक जन पावे,
पुन्यवान नरथी पमाय. नाथ १

नाथ नाम म्हारु अधिकगुण वाळुं,
विश्व मही सघळे गवाय. नाथ २

मुक्तिपुरीमा नाथ आसन जमावो,
विश्व मही ज्योती जघाय. नाथ ३

नाथ आप त्यागी ने बाळ हु अभागी,
केम करी पारे पमाय. नाथ ४

विश्व गुण गावे आनद उभरावे,
ध्यान म्हारु साचुं कहेवाय. नाथ ५

काम क्र ध त्याग्यां ने भवदुःख भाग्यां,
अष्टकर्म तोडयां कहेवाय. नाथ ६

नाथ आप साधीने शीवसुख पाम्या,
मोक्ष सुख वाध्युं कहेवाय. नाथ ७

अजर, अमर पद आप धरावो,
नाथ नाम सघळे पूजाय. नाथ ८

मोहमान त्यागे तो भव दुःख भागे,
ज्ञान कंईक अंतरमां थाय. नाथ ९

नाथ गुण गावो आनंद उलटावो,
प्रेम तणी छोळो वहाय. नाथ १०

जुठुं जगत बधुं चेतीने चालजो,
जुठ महीं सर्वे लूंटाय. नाथ ११

जुठ मही म्हालोने जुठ मही फालो,
भक्तिना अंतर वहाय. नाथ १२

माया खातर भाई सघळा रडे छे,
नाथ नाम कंईए ना थाय. नाथ १३

नाथ नाम खातर तुं साचो रडे तो,
नाथ तने अहींआं भेटाय. नाथ १४

नाथ नाम साचुं ए विण बधु काचुं,
भजवाथी भवदुःख जाय. नाथ १५

किंकर बाळनाथ चरणोमा विनवे,
नाथ त्हारी साची छे स्हाय नाथ १६

ॐ

३१

राग-नागरवेलीयो रोपाय

निरजन नाथ प्रभो भगवान, करो मन मदिरीयामा स्थान
त्रिलोक केरानाथ गवाया, त्रिभुवन तारण हार रे,
तृपावी अमृत रसनु पान, करो मन मदिरीयामा स्थान नि-१
आत्म अखंडानदना, झरण पीलावो आप रे,
मचावु अंतरमा हुं तान, करो मन मदिरीयामा स्थान. नि-२
आप अखड स्वरुप छो, अविनाशी पद धार रे;
करु हुं नित्य तमारु ध्यान, करो मन मदिरीयामा स्थान. नि-३
पीडा हरो त्रण लोकनी, विश्व तणा दुःख कापो रे;
त्हमारा सर्व करे गुणगान, करो मन मदिरीयामा स्थान नि-४
नाथ अनाथ सनाथ छो, साचा सर्जन हार रे,
प्रभो! मुज अतरना छो प्राण, करो मन मदिरीयामा स्थान. नि-५
दीन बाळक हु आपनो, किंकर उरमा धारो रे,
चरणमा शीर मूकु भगवान, करो मन मदिरीयामा स्थान नि-६

३२

राग–देश

राचो नाथ नगीना मुक्तिपुरीना वासमां रे.
मुक्तिपुरीमां तान मचावो, विश्व तणां मानव हरखावो;
रमण करो छो शीवसुख केरा वासमां रे. रा–१

छप्पन दीग कुमरी गुण गावे, इंद्र मळी हर्षे हुलरावे;
नाथ बिराजो आप सदा उल्लासमां रे. रा–२

आश्रय छे ओ ! नाथ तमारो, ए विण कोई नहि आधारो;
पुरण करो प्रभु आप अमारी आशने रे. रा–३

नाथ प्रभो दीन दुःख दातारी, विश्व तणा साचा हितकारी;
पर उपकारी शांत करो मुज प्यासने रे. रा–४

साचा सुखना भोगी बनावो, अरजी आप हृदयमां ध्यावो;
किंकर राखो आप चरण निवासमां रे. रा–५

३३

राग–सिद्धा चलके वासी जीनने क्रोडो प्रणाम

मुक्ति पुरीना वासी विभुवर कोटी नमन !
त्रिभुवन ज्योत प्रकाषी विभुवर कोटी नमन !
विश्व उद्धारक आप कहाया, अजर अमर पदवीने पाया;
दीन के नाथ कहाया विभुवर कोटी नमन ! मु–१

अविचळ भूमीमा आप वीराज्या, जन्म जराना भयने भाग्या;
वचना मृत तुम गाज्या विभुवर कोटी नमन ! मु–२

आप अनंत रुपे भजवाया, वाणीमा अमी रस वरसाया;
त्रिलोक नाथ कहाया विभुवर कोटी नमन ! मु–३

भव दुःख भंजन आप कहावो, भक्ति सुधा जगमा प्रगटावो;
घटघटमां पथरावो विभुवर कोटी नमन ! मु–४

अनाथनी आ अर्ज स्वीकारो, भव सागरथी डूबता तारो;
किंकर बाळ उगारो विभुवर कोटी नमन ! मु–५

३४

राग–कल्याण

नमन करो श्री प्राण प्रभुवर,
विश्व महीं साचा जगदीश्वर. नमन–१

त्रिभुवन तारक शीव सुखधारक,
अष्ट कर्म प्रभु आप निवारक;
शासन नायक धर्म धुरधर. नमन–२

तुही, तुही, त्राता विश्वविख्याता,
घटघट महीं प्रभु गुण गवाता,
विश्वतणा साचा परमेश्वर. नमन–३

अकळ अरुपी ब्रह्मस्वरुपी,
दिव्य दिपकनी ज्योत झळकती,
नाथ ! दयाळु दीन दानेश्वर. नमन–४

विश्व हसावो विश्व रीझावो,
विश्व महीं आनद वरसावो;
दीन दुःख भंजन जय जगदीश्वर. नमन–५

किंकर आ निरधार तुमारो,
तुम विण कोई नहि आधारो;
लळी लळी लागुं पाय प्रभुवर. नमन–६

३५

राग-कल्याण

नमन करो त्रिभुवन नायकने, विश्व उद्धारकने. नमन
आत्म उद्धारक कर्म निवारक, विश्व वीशारदने. नमन
बाळ उगारो भव भयटाळो, जग प्रतिपाळकने. नमन
शीवसुख वासी ज्योत प्रकाषी, शांत सुधारसने. नमन
भक्ति उल्लासे भवदुःख नासे, भव जळ तारकने. नमन
किंकर तारो पार उतारो, दीन दुःख वारकने. नमन

३६

राग-हार हीरानो हैये मढावजो

प्रभु नाथ ! निरंजनने ध्यावजो,
भक्तिरस उरमां वहावजो. प्रभु

दिव्य स्वरुपना दर्शन करावजो,
अति आनद उरमां भरावजो. प्रभु

आत्म ओजस तणा झरणा वहावजो,
नयन वाणोथी क्रोधने हणावजो प्रभु

प्रेम पुष्प थाळ भरी हर्षे वधावजो,
सहु मोतीडाना चोक पूरावजो. प्रभु

आत्म कल्याण केरी भावना दीपावजो,
सहु अतरमा ज्योती जगावजो. प्रभु

दर्शन करी सहु पापने पखाळजो,
नरनारी मळी गुणगावजो प्रभु

नाथ आप बाळकने डुबतो बचावजो,
दया दास परे वरसावजो. प्रभु

३७

राग-पहाडी

प्रभुजी मागु हुं ते आप;
गुरुजी मागुं हु ते आप

ना मागु धन माल खजानो, आप तणा गुणवाद;
शेवा करता नित्य तुमारी,
आवे नहि सताप. प्रभुजी-१

तुज भक्तिमां मस्त बनीने, सदा रहुं आबाद;
निश दीन घटमां नाम त्हमारुं,
सदा जपु हुं जाप. प्रभुजी-२

दुःखडां सर्वे दूर करीने, शांती वहावो नाथ;
तुज खातर हुं शीर समर्पुं,
हींमत धरुं अमाप. प्रभुजी-३

शब्द पडे आ रोमरोममां, त्रिलोक केरा नाथ;
सदा रहो मुज मन मंदिरमां,
मूर्ति त्हारी स्थाप. प्रभुजी-४

नयन उघाडुं चोदीश भाळुं, आप अखंड सनाथ;
किंकर कहे आ दीन बाळकना,
भवना दुःखने काप. प्रभुजी-५

३८

राग-पहाडी

प्रभुजी दोष करो सहु माफ;
गुरुजी दोष करो सहु माफ.

अंधारे अथडाया जगमां, मार्ग भूलीने आप;
अज्ञानी आश्रीत छुं त्हारो,
कीधां कर्म अमाप. प्रभुजी-१

धर्म ना जाण्यो मर्म ना जाण्यो, जाण्या नहि तुम नाद;
भक्ति सुधा प्रगटी नहि घटमा,
एळे गई सहु जात प्रभुजी-२

मानव भव मळीयो महापुन्ये, हृदय थयु नहि भान;
मायामा सहु खेल गुमायो,
करु हवे घूमराण प्रभुजी-३

अनाथने निरधार त्हमारो, बाळ उगारो नाथ;
आप विना प्रभु जग सहु जुठा,
महेर करो शीरताज. प्रभुजी-४

बाळक लाड करे पीतु पासे, तीम करु हु नाथ;
करगरतो किंकर तुम विनवे,
मागु हृदयथी माफ प्रभुजी-५

ॐ

३९

राग-पहाडी

मुसाफीर अब तु हो तैयार,
अब तु हो तैयार. मुसाफीर-१

दुनीआदारीमें बोत फीरापण, कीया नहि कुछ काम,
आतम पीछाणा नहि वे तेरा,
शोधा नहि विश्राम. मुसाफीर-२

एक दीन आना, एक दीन जाना, जगका खोटा प्यार;
देश मुसाफीर अपना न्यारा,
जुठा सब संसार. मुसाफीर–३

आज चले, कोई काल चलेगा, जाना हे निरधार;
आखर सबको एक ठीकाना,
प्रभु भज वारंवार. मुसाफीर–४

काया जुठी, माया जुठी, जुठा सब परीवार;
प्रभु भक्ति विण कोई नहि तेरा,
एही जीवनका सार. मुसाफीर–५

भजन करी ले जगदीश केरुं, ए बीन नहि आधार;
करगरता किंकर विनवे छे,
जावुं जरुर एक वार. मुसाफीर–६

ॐ

४०

राग–पहाडी

प्रभुजी वेडली मारी तार;
तुज विण नहि आधार. प्रभुजी–१

भवसिंधुमां भमीयो बहुधा, फर्यो अनंतिवार;
त्रिभुवन नायक शीव सुखदायक,
साचो तुं अधार. प्रभुजी–२

शरण एक छे साचु त्हारु, ज्ञानी परम कृपाळ;
दीन दुःख भंजन पाप निकंदन,
मुज हैयाना हार. प्रभुजी-३

आगणे आवी अर्ज पूकारु, सूणो सूणो ओ नाथ;
तान त्हमारु ध्यान त्हमारु,
अनाथना छो नाथ. प्रभुजी-४

नाथ निरंजन घटमा प्यारो, स्मरण करु वारवार;
तुज विण जगमा कोई नहि मारु,
दीन बंधु दातार. प्रभुजी-५

आप अरुपी, ब्रह्म स्वरुपी, ज्योत जगावणहार;
किंकर कहे आ दीन बाळकना,
भवभयना दुःखवार. प्रभुजी-६

४१

वैश्नव जन तो तेने कहीए-राग

मोत किनारे हसता जावु,
एह वीरोनी वाणी रे,
शूरा होय ते हसता भेटे,
प्रभुपद उरमा आणी रे. मोत-१
मृत्यु नव छोडे जगमाही,
मृत्यु चोदीश फरतुं रे;

प्रभु भक्ति विण कोई नरोनुं,
जन्ममरण नहि टळतुं रे. मोत-२

राय न छाडे, रंक न छोडे,
मद मानवनो तोडे रे;
अमर नथी रहेवातुं जगमां,
मृत्यु रणमां रोळे रे. मोत-३

जग बंधनने उर नव लावे,
हरदम गुरुगुण गावे रे;
पळ पळ एनी धून धरावे,
ए नर हसतां जावे रे. मोत-४

मरण तणो भय नाश करीने;
मस्त जीवनमां म्हाले रे;
एह वीराओ निजनुं साधी,
रोग शोग भय टाळे रे. मोत-५

बहीयातम सहु जुठ पीछाणो,
अंतर ज्योत जगाडो रे;
प्रभु मूर्तिने उरमां स्थापी,
घटमां घंट वगाडो रे. मोत-६

किंकर कहे ए सत्य वचन छे,
एक दीन सहुने जावुं रे;

नाथनिरंजन भवदुःखभंजन,
नित्य हृदयमा ध्यातु रे. मोत-७

४२

राग-वैष्नव जन तो तेने कहीये

जगमा नाम हरीनुं साचुं,
ए विण सर्वे काचु रे;
हरी नामविण सब जग जुठा,
हरदम घटमां याचुं रे. जगमां-१

परमातम पद एक जगतमा,
भिन्नरुपे भजवातु रे,
घट मंदिरमा वीधवीध रीतीए,
निशदीन स्मरण करातु रे. जगमा-२

अजर अविनाशी पद प्रभुनु,
नाम अमर पूजवातु रे;
विश्वमहीं साचो जगदीश्वर,
आखर एक कहातु रे. जगमा-३

राम भजे रहेमान भजे,
कोई कृष्ण तणा गुण गातु रे,
वीर भजे वेदांत भजे,
कोई अंतरमा हरखातु रे. जगमा-४

घटमंदिर जो साफ बने तो,
भिन्न नथी देखातुं रे;
परमातम पद भास करे तो,
सघळुं एक जणातुं रे. जगमां-५

आतम पीछाणे एह वीरोनुं,
अंतर निर्मळ थातुं रे;
भेद नहि भासे ए जगमां,
एकरुपे समजातुं रे. जगमां-६

किंकर कहे प्रभु एक जगतमां,
नित्य हृदयमां याचुं रे;
भजन करीलो शुद्ध हृदयथी,
एज जीवनमां साचुं रे. जगमां-७

ॐ

४३

राग-जाओ जाओ के मेरे साधु रहो गुरुका संग

भजलो भजलो, ओ! जगना प्राणी, भजो सदा कीरतार.
एह विना भाई कोई नहि जगमां, साचो परम दयाळ;
त्रिभुवन नायक शीव सुखदायक, प्रभु भज वारंवार. भजलो १
अनेक भवना पुन्ये पायो, मानव भव अति सार;
फेरफेर ए मळवो दुलहो, प्रभु भज वारंवार. भजलो २

जग सहु जुठा मतलब केरा, मतलब का ससार,
प्रभु भक्ति विण कोई नहि तेरा, प्रभु भज वारंवार. भजलो ३
पुत्र मित्र सहु पखी मेळो, उडी जशे एक वार,
नाथ निरजन भव दुःख भजन, साचो तारणहार भजलो ४
एक दीन हस जशे घटमाथी, रडतो रहे परीवार,
फ़िकर कहे अणधार्या जावु, मालीकना दरबार. भजलो ५

ॐ

४४

राग-नथी जगतमा साथ सबधी विना त्रिभुवननाथ

फोगट फाफा मार मूरखडा नथी जगतमा सार,
भजीले झट फीरतार प्रभु विण कोई नव तारणहार,
मूरखडा नथी जगतमा सार १
कुटुंब कबीलो कोई नहि तहारु, नारी अने परीवार,
स्वार्थ सबधे मळीया सर्वे, प्रभु भज वारवार,
मूरखडा नथी जगतमा सार २
काया जुठी, माया जुठी, जुठो जग व्यवहार,
दुनीआदारी सब हे जुठी, जुठा सब ससार,
मूरखडा नथी जगतमा सार ३
मायामा रहें खेल गुमायो, फर्यो अनतिवार,
शरण एक जगदीशनु साचु, ए विण नहि आधार;
मूरखडा नथी जगतमा सार ४

भमतां, भमतां, पुन्ये मळीयो, मानव भव अति सार,
भजन करी ले जगदीश केरुं, ए विण नहि तरनार;
मूरखडा नथी जगतमां सार. ५

त्रिभुवन नायक शीव सुखदायक, साचो छे कीरतार,
भवभय भंजन पाप निकंदन, भज तुं वारंवार;
मूरखडा नथी जगतमां सार. ६

किंकर कहे भवसागर तरवा, स्मरण करो वारंवार,
एह विना भाई कोई नहि जगमां, दीन बंधु दातार;
मूरखडा नथी जगतमां सार. ७

४५

राग–आशावरी

राखो अमारी लाज, प्रभुजी राखो अमारी लाज.—गुरु
भ्रमण कर्युं मे सब दुनीआमे, कोई न मळीयो साथ;
सब देवोकुं देख लीया पण, मीलो न कोई सनाथ. प्र. १

माता भमीयो, महादेव भमीयो, भमीयो सहु संसार;
गोमती तीरे स्नान कर्यां पण, मीलो न तारणहार. प्र. २

टेके फळे छे टेके मळे छे, निश्चय बळ हो अपार;
शीर जावे श्रद्धा नहि जावे, कबही न तूटे तार. प्र. ३

सब दोषोकुं आप निवारो, महेर करो शीरताज;
भूल चूक सघळी माफ करीने, उरमां आणो दाझ. प्र. ४

दीन बाळक आ नाथ त्हमारो, करगरतो वारंवार;
पाय पडीने किंकर विनवे, तारो अमारुं झाझ. म. ९

४६

राग–आशावरी

छोड विषयनी जाळ, मुसाफीर छोड विषयनी जाळ
विषय जाळ भाई अति बुरी छे, कदी चढावे आळ;
कदी बनावे कुत्ता जेवो, कदी बने विकराळ. मु. १
कंचन कामीना अवधि दुःखो, नर्कतणी ए खाण;
झेरी कीडानो चेप थशे तो, अति करीश बूमराण. मु. २
विषयवासना झेर समी छे, झेरतणो कर ख्याल,
पीता पहेला चेत मुसाफीर, पछी बनीश बेहाल. मु ३
पत्नीव्रत कोई भाग्ये पाळे, पतीव्रता रहेनार;
कळीयुगना आ विषम समयमा, जुज हशे नरनार. मु. ४
कंचन कामीनी त्याग करे तो, सदा रहे गुलतान;
किंकर कहे ए वीर नर त्यागे, करे प्रभुनु ध्यान. मु. ५

४७

राग काफी–ताल दीपचंदी

कोई नहि तारणहारा, गुरु विण कोई नहि तारणहारा.
तन धन जोबन सबही जुठा, जुठा जग का सहारा,
नाम प्रभु जगदीशनुं साचुं, ए विण नहि आधारा. कोई–१

नर भव मळीयो पुन्य प्रतापे, पुन्य तणा भरो भारा;
जन्म सफळ करवाने माटे, गुरु भजलो वारवारा. कोई–२
एक दीन रडना एक दीन हसना, जुठा जग व्यवहारा;
भवसिंधुथी पार थवाने, गुरु भज लो वारवारा. कोई–३
साथ जगतमां सदगुरु वरनो, सदगुरु प्रीतम प्यारा;
सदगुरु वरनी साची छाया, गुरु भज लो वारवारा. कोई–४
ध्यान निरंतर सदगुरु वरनुं, ए विण नहि तरनारा;
किंकर कहे घट साफ बने तो, मळशे प्रभुना सहारा. कोई–५

४८

राग काफी–ताल दीपचंदी

कर्मनकी गत न्यारी; चेतनजी कर्मनकी गत न्यारी.
श्रीमंत थई सुखमां बहु राच्यो, पर पीडा नहि जाणी;
मोह मदिरा पी मकलायो, कंइक दुभाव्यां प्राणी. कर्म–१
खानपान सुख भोगवता नर, पळमां बनता भिखारी,
कर्म तणी भाई अजब लीला छे, कर्म तणी बलीहारी. कर्म–२
सुत वनिता यौवनमां म्हाल्यो, अंतर भानने हारी;
दया तणो भाई धर्म ना जाण्यो, पर उपकार विसारी. कर्म–३
धन वैभव निरखी हरखायो, चढी हृदयमां खुमारी;
मोज मजामां खेल गुमायो, मायाने नव मारी. कर्म–४

किंकरदास कहे अतरथी, प्रभु भजलो भयहारी,
प्राणप्रभु गुरु शातिसूरीने, नमन करो वारवारी कर्म–५

ॐ

४९

राग काफी–ताल दीपचदी

कोई नहि तारणहारा, गुरु विण कोई नहि तारणहारा. कोई
जग सब जुठा मतलब केरा, मतलबका ससारा,
मतलब खातर सबजन मीलता, मतलबका परीवारा. कोई–१
मा मतलबकी, पीयु मतलबका, मतलबका भाइयारा;
मतलब वीन भाई कोई नहि तेरा, मतलबमें मरनारा. कोई–२
मोह वीचें मानव सपडाया, मूरख फीरा अधारा;
प्रपचकी बाजी रमनेमें, भटक्यो भवमें अपारा. कोई–३
सद्गुरु वीन भाई पार नहि पावे, गुरुका सच्चा सहारा;
गुरु मीलनेसे भवभय भागे, दुःखडा दूर करनारा कोई–४
करगरता गुरुवरको विनवो, चर्ण पडो वारवारा,
किंकर कहे ए निशदिन भजलो, गुरु वीन नहि आधारा. कोई–५

ॐ

५०

राग काफी–ताल दीपचदी

कोई नहि तारु, जगतमा कोई नहि तारु.
मात पीता सुत भगीनी सर्वे, स्वार्थ तणु अजवाळु;
पाप पुन्य दो साथे आवे, अवर थवानुं न्यारुं. कोई–१

दीन दीन घटतो जाय समजले, आयुष्य पुर्ण थनारुं;
काळ आवीने झडपी लेशे, कोई नहि उगारनारुं. कोई–२

देह धरमशाळा मानी ले, जेम मुसाफीरखानुं;
झाड उपर जेम पक्षी बेठुं, पळमां उडी जनारुं. कोई–३

एम मुसाफीर अंतर समजी, भज भयने हरनारुं;
किंकरदास कहे कर जोडी, गुरु वीन कोई नहि म्हारुं. कोई–४

५१

राग काफी-ताल दीपचंदी

एक दीन जावुं जग छोडीने.

राय रंक सज्जन नर चाल्या, खाली हाथ लईने;
कोडी एक नहि साथे आवे, सर्वे आंही मूकीने. एक–१

लोक कहे लखपती कहेवायो, पूर्वनुं पुन्य वरीने;
पर उपकार करी ले जीवडा, आतम शुद्ध करीने. एक–२

मात पीता सुत बंधव पत्नी, मळीयां स्वार्थ सहीने;
कुटुंब कबीलो भांडु भगीनी, चाल्यां स्वार्थ तजीने. एक–३

आतम उजळो करवा माटे, सदगुरु पंथ वरीले;
किंकरदास कहे कर जोडी, वारंवार भजीले. एक–४

५२

राग काफी–ताल दीपचंदी

गुरु गुण अजव कहावे; वीरल नरो गुण गावे. गुरु

अविचळमा गुरुनाद वजावे, अलखमा धून मचावे,
अहँ अहँ जाप जपीने, ज्योतीसे ज्योत मीलावे गुरु–१

जग मायाने दूर करीने, आतमने अपनावे;
ध्यान निरतर घटमा साधे, परमातम पद पावे. गुरु–२

सोह सोह ध्यान करीने, घटमा घट वजावे;
रोग शोग भय नाश करीने, अद्‌भूत वळ वतलावे. गुरु–३

गुरु गुणथी कोई पार नहि पावे, गुरु पदमा सहु आवे,
गुरु विण कोई नहि मार्ग वतावे, गुरुवर ब्रह्म कहावे. गुरु–४

शातिसूरी प्रभो अर्बुदगीरीनो, महिमा अजव सूणावे;
किंकर कहे ए दिव्य पुरुप छे, विश्व सहु गुण गावे गुरु–५

ॐ

५३

वंदो वदो गुरुश्री ज्ञानीने-ए राग

मेरी नैयाको पार उतार गुरु,
तुजविण कोई नहि पार करेगा,
भवसागरसे तार गुरु मेरी

सारा जगतको देखलीया जव,
मळीयो तु आधार गुरु. मेरी

जन्म जराका अवधि दुःखसे,
कोइ न तारणहार गुरु. मेरी
भमीयो भवसागरमें बहुधा,
तोय न आयो पार गुरु. मेरी
अब तुं साहेब साचो मळीओ,
पुरण कृपा दातार गुरु. मेरी
विश्व विशारद विपत निवारक,
शांत सुधा पानार गुरु. मेरी
सबजन जगके एक स्वरुपमें,
भेद न तुं धरनार गुरु. मेरी
अंतरध्यानी आतमरामी,
साचो जगदाधार गुरु. मेरी
अलख लगावे ब्रह्म जगावे,
ज्योति जगावणहार गुरु. मेरी
किंकरदास कहे अंतरथी,
सदगुरुवर दातार गुरु. मेरी

ॐ

५४

वंदो वंदो गुरुश्री ज्ञानीने-राग
भाइ गुरु बीन तारक कोई नहि.
भवसेतारक दुःखनिवारक,
पार उतारक कोई नहि. भाई

तन, धन, जोबन सबही जुठा,
जुठा सब संसार भई. भाई
मात, पीता, सुतस्नेही सबही,
कारमो सब परीवार भई. भाई
मानव जन्म मळ्यो महापुन्ये,
तो कई निजनु साध भई भाई
भव अंधेरा बीचमें घेरा,
शाम घटा चोमेर भई. भाई
भक्ति सुधा प्रगटे घटमा तो,
नैया थशे तारी पार भई भाई
किंकरदास कहे अंतरथी,
गुरुवरनो आधार भई भाई

ॐ

५५

मोहे लागी लटक गुरु चरणनकी-राग

भाई गुरु बीन कोन उगारे,
भव समुद्रमें डुबता प्राणी,
कोई नहि तारे. भाई
सागर बीचमें नाव फसाया,
मोजा जोर अति भारे भाई

हांकनेवाला वोत मुंझाया,
कोई नहि गुरुवीन तारे. भाई
मानव देहका डगता पाया,
मोह माया सवको मारे. भाई
दुनियादारी दुःखनी क्यारी,
आशा तृष्णा मन भारे. भाई
आशा से सव जग होमाया,
आशा सव जनको मारे. भाई
वीरलनरो आशाको तजके,
घट मंदिरने शणगारे. भाई
किंकरदास कहे अंतरथी,
सदगुरुवर मुज मन प्यारे. भाई

५६

राग-थई प्रेमवश पातळीया

जगनाथ साचा मळीया.

भवभयनां बंधन टळीयां रे, जगनाथ साचा मळीया. १
प्रभुनाथ निरंजन स्वामी, शीवसुख पदवी ने पामी;
बन्या मुक्ति पुरीना गामी रे, जगनाथ साचा मळीया. २
त्रण भुवन महीं भजवाया, प्रभु जग पाळक कहेवाया;
आनंद आनंद वर्ताया रे, जगनाथ साचा मळीया. ३

नयनोमा मूर्ती त्हारी, मुज प्राण थकी ए प्यारी,
प्रभु अक्षय सुख दातारी रे, जगनाथ साचा मळीया ४
त्रिभुवन पति आप कहावो, डूबता ओ । नाथ बचावो,
दया दास परे दर्शावो रे, जगनाथ साचा मळीया ५
प्रभु अजर अमर कहेवाया, परमातम रुपधराया,
घटघटमा आप पूजाया रे, जगनाथ साचा मळीया ६
प्रीते हाथग्रहो प्रभु मारो, तुमदीन बाळकने तारो;
किंकर कहे भव दुःख वारो रे, जगनाथ साचा मळीया. ७

५७

राग-माढ

छे नाथ निराळा, ताहरणहारा, ए विण नहि आधार.
दुनीआना सुख दुःखसमा छे, एमा नथी कई सार,
दरीया वचे न्हाव पडयु छे, कोण उतारे पार रे छे. १
अत पळे भाई सूतो त्यारे, नारी कहे भरथार;
सांभळजो कई नाथ अमारु, कोण हवे आधार रे. छे २
रहारु विचारे कोई नहि त्या, स्वार्थ करे पोकार,
पुत्र कहे छे कईक बतावो, विनवे सहु परीवार रे छे ३
बेल बनी चकीमा फरीयो, कष्ट सह्या तें अपार;
अत समय भाई कोई नहि त्हारु, साचो छे कीरतार रे छे ४

लक्ष्मी तणा लोभे सहु करशे, त्हारी अति सारवार;
स्वार्थ तणी आ दुनीआदारी, कोई न तारणहार रे. छे. ५
अर्ज सूणी आ दीन बाळकनी, उरमां कंईक विचार;
करगर ता किंकर वीनवे छे, नाथ जपो वारंवाररे. छे. ६

ॐ

५८

राग-माढ

ओ ! नाथ अमारा, प्राणथी प्यारा, महेर करो कीरतार.
आप विना प्रभु कोण अमारो, अलवेलो आधार;
भमतां भमतां पुन्ये पायो, छोडुं हवे नहि तार रे. ओ! १
भव नगरीमां बहु भटकाणो, फेरा फर्यो वारंवार;
रोझ मृदंग पेरे अथडायो, तोय न आयो पाररे. ओ! २
बाळक आ निरधार त्हमारो, चर्ण पडे वारंवार;
हर्ष थकी प्रभु पाय पडुं छुं, मुज हैयाना हार रे. ओ! ३
मधपुडाने मांख वसावे, फरती रहे वारंवार;
पारधी आवी सर्व भगावे, तीम फरुं संसार रे. ओ! ४
कर्म कर्यां छे क्रूर प्रभु में, सळग्या छे अंगार;
रोम रोम महीं आग धीखी छे, एहथी नाथ उगाररे. ओ! ५
आप विना पोकार हमारो, कोण सूणे कीरतार;
नाथ विना सहु साथ अकारो, आप अनाथ सनाथ रे. ओ! ६

लळी लळी लागु पाय तुमारा, करगरतो निरधार,
किंकर कहे आ दीन बाळकने, भवना दुःखथी तार रे ओ। ७

५९

राग-माढ

भाई अर्ज स्वीकारो, उरमा धारो, नाथ जपो वारवार.
नाथ विना कोई तात नथी भाई, साचो छे ए साथ;
अधारे भामा भमवाना, ए विण सर्व अनाथ रे. भाई
सरोवरतीरे जाळ वीछावे, पारधी माछीमार,
गुळीतणा लोभे सपडावे, प्राण हरे ततकाळ रे. भाई
मानव भटके मोत कीनारे, मध लेवाने काज;
काळ आवी ने झडपी ले छे, त्राप मारे जीम बाझ रे. भाई
मात पीता सुत बंधु सर्वे, नारी अने परिवार;
मधपुडा जीम सर्वगणीले, जुठो छे ससार रे. भाई
खेडुत खेती करे निज हर्षे, बीज रोपे अति सार,
कोप फाटे जो कुदरतनो तो, हीमकरे सहार रे. भाई
एणी रीते सहु दुनीआदारी, नारी अने परिवार;
किंकर कहे आ दीन बाळकने, शाति प्रभो आधार रे भाई

६०

राग-माढ

दीनानाथ उगारो, आश्रय त्हारो, साचो तुं कीरतार.

दीनपणुं पाम्यो मुज कर्मे, दुःख तणो नहि पार;
आ दुःखमांथी कोण उगारे, साचो तारणहार रे. दी.

मोह तणुं तोफान मचाणुं, सपडाया निरधार;
कर्म राजानो कोप थयो त्यां, कोण बचावणहार रे. दी.

करजोडी कहुं क्रूर बन्युं छे, कीधां कर्म अपार;
नाथ तणुं भाई नाम जप्युं नहि, पीछे करुं पोकार रे. दी.

फक्कड थई फरतो तो त्यारे, नती तने दरकार;
सानसामां सपडायो त्यारे, अर्ज करे वारंवार रे. दी.

करोळीओ जीम चढतो भींते, पाछळनुं नहि भान;
किंकर कहे ईमभव अटवीमां, सर्व भूल्या छे भान रे. दी.

ॐ

६१

राग-माढ

जगनाथ विचारो, अर्ज स्वीकारो, पाय पडुं वारंवार.

परनींदा करी पेट भरीने, कीधो कदी न विचार;
निज तणा दोषो नहि जोया, एळे गयो अवतार रे. १

वहाणवडुं वेपारी खेडे, लोभ तणो नहि पार;
लाख मटी बे लाख थवाने, आश करे छे अपार रे. २

पाघडी पहेरी देश वीदेशे, फेरी फरे वारवार;
पुन्य विना भाई कंई नहि पामे, पुन्य थकी मळनार रे. ३
सज्जन नरनो संग करे तो, कंईक पामे भाई सार;
तेम प्रभुनी भक्ति करे तो, नर भव पामे पार रे. ४
काळ चक्रथी बचवा माटे, पुन्य तणो भरोभार,
किंकर कहे आ दीन बाळकना, नाथ तुमे आधार रे ५

६२

राग-अध वनी आथडीया जगमा

नाथ तणा दर्शन करवाने, खूब मचावो उरमा तान.
नाथ खातर तु सर्व तजी दे, मायाने ममतानु पान,
बंधन सर्वे नाश करीने, खूब मचावो उरमा तान. १
नाथ विचारो, उरमा ध्यावो, हसो कूदो गावो गुणगान,
रोम रोमने खूब रडावो, भींतरथी बनजो बळवान. २
हींमतथी कदी पीछ नव करजो, जीवन मूको चरणे भगवान,
शुद्ध हृदयथी भक्ति वहावो, रहो सदा एमा गुलतान. ३
ओरत माटे अश्रु वहावे, सुत माटे भाईं भूलतो भान,
प्रभु माटे तु कंई नहि करतो, पछी मळे क्याथी भगवान. ४
किंकर कहे प्रभु ईम नथी मळना, जेह करे सर्वे कुरबान,
एह वीरल नर दर्शन पावे, आत्म तणु करशे कल्याण ५

६३

राग–अध वनी आथडीया जगमां

नाथ तणी भाई अद्भुतमाया, वीरलनरो दर्शन पावे.
नाथ तणो भाई धून मचावे, पळे पळे उरमां ध्यावे;
घडी पलक विसरे नहि मनथी, एह वीरो दर्शन पावे. १
नाथ निराळा जगथी न्यारा, संसारी नरकीम पावे;
मोह मायानां बंधन बहुधा, याद हृदयमां नहि आवे. २
नाथ नगीना छे रंग भीना, दिव्य लीला ए बतलावे,
वीर पुरुष सहु घटमां निरखे, कायर नर कंई नहि पावे. ३
मोत कीनारे हसतां जावुं, कीम करी हींमत थावे;
मरण तणो भाई भय नहि जेने, एह प्रभु दर्शन पावे. ४
भक्ति वहावो तान मचावो, ए विण साथ नहि आवे;
किंकर कहे ए पंथ विकट छे, वीरल नरो दर्शन पावे. ५

६४

राग–अंध वनी आथडीया जगमां

भाग्य विना भाई कंई नहि पावे, भाग्य तणी अदभूत कहाणी;
भाग्य विनानी बाजी सघळो, आखर मळशे धूळधाणी. १
भाग्य थकी कंई राय बने छे, रंक भरे घरघर पाणी;
पेट खातर कंई घरघर भटके, गाळ उपरथी सूणतानी. २

शेठ बनी मोटरमा म्हाले, स्वर्गपुरी मनमा मानी;
पुन्य विना भाई कंई नहि पामे, पुन्य करो साचु जाणी. ३
भाग्य रुठे त्या कंई नहि चाले, पळमा सर्व बने फानी;
हाय ! जीवनमा कंई नव करीयुं, पछी रडे पोको ताणी. ४
परमारथकर मीत धरीने, एह विना सहु धूळधाणी;
परने शांत करीश तो तुजने, साची शांती मळवानी. ५
सारु नरसु कर्म करे छे, कर्म नचावे सहु प्राणी;
किंकर कहे सुख दुःख भोगवचा, कर्म तणी ए निशानी. ६

६१

[मूळ उपर वधारा साथे]

राग-अंध बनी आथडीया जगमा

लक्ष्मी विण लक्षणवंतानी, किंमत नहि अंकावानी,
भाग्य विनानी लक्ष्मी घरमा, आवी ते वही जावानी १
लक्ष्मी तुं छे मूळ दुःखनु, ज्या त्यां कलेश जगावानी,
चंचळ थई तु घरघर फरती, सारा कर्म तजावानी. २
एकनु लई बीजाने आपे, तु पण छे मोटी क्यानी;
हीकमत छे बस एकज त्हारी, हसताने ज रडावानी ३
लक्ष्मी रडावे लक्ष्मी मरावे, लक्ष्मी कफन कढावानी;
लक्ष्मीदेवीनी अजब ! लीला छे, पळमा भीख मगावानी. ४

व्हेर करावे झेर करावे, आखर शरीर गळावानी;
लक्ष्मी, लक्ष्मीनी माळा जपतां, कंईक सूता सोडो ताणी. ५

प्रभु भक्ति विण कोई नहि साचुं, सदा भजो प्रभुनी वाणी;
एज जीवननी साची लक्ष्मी, नैया पार करावानी. ६

वीरल नरो मीट्टी समजीने, रहे सदा अंतर ध्यानी;
किंकर दीन बाळकनी विनती, भक्ति जीवन दीपावानी. ७

६६

राग–हे रंगभीना नेमनगीना

गुरु विना भाई कोई नहि त्हारुं, नित्य गुरुवरने भजले;
भक्ति सुधा घटमां प्रगटावी, आतम तुं उजळो करले. १

कंई नहि लाव्यो, कंई नहि आवे, एह शीखामण उर भरले;
पाप पुन्य दो साथे आवे, एतो तुं निश्चय करले. २

अलख मचाया लाख लूंटाया, अनाथजनने कंई नमळे;
जाना सबको एक दीशामां, करणी कंई साची करले. ३

देह तणो भाई गर्व न करशो, सर्व जीवो निज समगणले;
मरवुं जीववुं सर्व शरीरने, आतम तो न्यारो सबसे. ४

भवजळ तरवा पार उतरवा, इष्टतणी सेवा करले;
परदुःखभंजन कार्य करीने, मानव जन्म सफळ करले. ५

किंकर दीन बाळकनी विनती, कारज तुं सघळां करले;
भवभयनां दुःख दूर करवाने, नित्य गुरुवरने भजले. ६

६७

राग-मिश्र

कृपा करी आ दीन बाळकनी, अर्ज प्रभु उरमा धारो
प्रभु विना भाई कोई नहि मारु, सदा प्रभु हु छु त्हारो;
दोष जीवनना माफ करीने, बाळकने डूबतो तारो,
अरजी अंतरमा धारो.

बाळक हु निरधार प्रभुजी, कोई नथी तुज विण आरो;
कृपा सिंधु अब महेर करीने, बाळकने डूबतो तारो;
अरजी अतरमा धारो

परम कृपाळु, आप दयाळु, दया हवे दीन पर धारो,
करुणा सागर करुणा करीने, बाळकने डूबतो तारो;
अरजी अतरमा धारो.

घणु कह्यु थोडामा समजी, रहेम नजर मुज पर धारो;
आप अरुपी ब्रह्म स्वरुपी, अरजी अतरमा धारो;
बाळकने डूबतो तारो

सदगुरुवर मनमदिर वसीया, शाति प्रभो घटमा प्यारो,
करगरतो प्रभु पाय पडु छु, किंकरने डूबतो तारो;
अरजी अतरमा धारो.

६८

एकतारानां पदो

मूरख मन क्या करेरे, तेरा कोई नहि अहीं संगी.

परभवमां कंई पुन्य कर्युं तो, मानव देह तुं पायो;
अब तुं भजन करी ले भाई, तो कुछ कर्म कटायो. मू.

चोराशी चक्करना फेरा, फीरतां फीरतां आयो;
न्हावडुं तारुं चोदीश फरीयु, जब तुं कांठो पायो. मू.

भवसमुद्रकी वीचमें आयो, जब तुं खूब गभरायो;
हांकनेवालो मल्यो मुताबीक, डूबतां तुने बचायो. मू.

सदगुरु मळे तो मार्ग बतावे, देहनां दर्द दबावे;
किंकरदास हृदयथी भजतो, 'शांति गुरु गुण गायो. मू.

६९

समज मन मेरा रे, जगमें कोई नहि तेरा;
तेरा हे सो तेरी पासे, बाकी सबी अनेरा. स.

जब तुं उदर महीं वसतोतो, तब प्रभुने भजतोतो;
बंधनमांथी मुक्तथवाने, हरदम जप करतोतो. स.

नव मास तुं मात उदरमे, उंधा शीरे लटक्योतो;
उदरतणा अवधिकष्टोमां, नित्य अरज करतोता. स.

उदर थकी तें जन्मलीया जब, अति हर्ष उछर्यो तुं;
दीन दीन वधतां बाळपणेथी, युवान वय पाम्यो तुं. स.

कुटुम्ब कवीला सब जन वीचमें, मोजमजा करतो तु;
अब मेरी घडीया सफळ बनी भाई, मुक्ति पुरी गणतो तुं. स.

उदरतणा सव दुःख विसरीने, अधारे भटकाणो;
साचा हीरानी शोध मूकीने, पत्थरमा पटकाणो. स.

भक्ति विना कोई पार नहि पाम्या, भक्ति सदा उर भरतुं;
किंकरदास कहे भक्ति विना भाई, पार नहि पामे तु. स.

ॐ

७०

सद्गुरु मळीया रे, आतम साधीलेजी;
शातीना दरीया रे, शातीरस सींचीलेजी.

भवोभव भमीयो जीवडा, तोय नहि आव्यो अरे पार,
सद्गुरु भजीनेरे, आतम साधी लेजी.

योगीओनी मस्ती माहे, अनहद तान मचाय;
ॐकारने साधीरे, आतम साधीलेजी.

आबु अविचळ गुफामा, ध्यान धरे छे गुरुराय,
आसन जमावी रे, आतम साधीलेजी.

"शातिविजयगुरु" दिव्य महर्षि कहेवाय,
किंकर नित्य भजतोरे, आतम साधीलेजी.

ॐ

७१

राग-हंसने कयों छे हेरान मनवे मूरख थईनेरे

आतममां थयुं नहि भान;
लोभमां ललचाईने रे, आतममां थयुं नहि भान.

सद्‌गुरु मळीया तोये, समज्यो नहि रे;
मायामां बन्यो छे महान, लोभमां ललचाईने रे;
आतममां थयुं नहि भान.

मनु जन्म पाम्यो तोये, अज्ञानमां डूल्योरे;
गुरुवरनु लीधुं नहि नाम, लोभमां ललचाईने रे;
आतममां थयुं नहि भान.

रात, दिवसनेरे, ओळख्यो नहि रे;
स्वार्थमां बन्यो छे गुलाम, लोभमां ललचाईने रे;
आतममां थयुं नहि भान.

"शांतिसूरी गुरु" साचा मळ्या रे;
शांतीथी पाम्यो ना विराम, लोभमां ललचाईने रे;
आतममां थयुं नहि भान.

किंकरदास करे, गुरुश्रीने विनती रे;
अर्हमथी करोने आराम, लोभमां ललचाईने रे;
आतममां थयुं नहि भान.

आप तणां अमूलां वचनो ने, भूली खरे भटकाणो,
नाथ विचार्यां नहि में मनमां, रोझ बनी अथडाणो;
दुर्गुण अवधि मारारे, माफ करीने प्रभुजी तारो. ३

माया देवीनी दुष्ट खाईमां, अंध बनी पटकाणो,
पंथ भूली खाडामां पडीयो, अति करुं चूमराणो;
फरतुं सैन्य मोहनुं रे, नीरखी खूब मनमां गभराणो. ४

मदिरा पीने मेड बने तीम, मद दारुमें पीधो,
नीशा महीं चकचूर बनीने, नर भव एळे कीधो;
सघळुं आप पीछाणोरे, प्रभुजी आप थकी नव छानुं. ५

अग्नि धखी छे रोमरोममां, त्राय त्राय पाम्यो छुं,
नथी हवे स्हेवातुं मुजने, कर्म थकी हार्यो छुं;
शरण गुरुनुं साचुंरे, ए विण कोई हवे नहि मारुं. ६

घणुं कह्युं थोडामां समजी, हस्त हवे प्रभु झालो,
करगरतो आ दीन बाळक कहे, अरजी नाथ स्वीकारो;
विनवे किंकर त्हारोरे, मुजने भवसागरथी तारो. ७

ॐ

श्री सद्‌गुरुभ्यो नमो नम.

॥ द्वीतीय गुरु काव्य तरंग ॥

ॐ

ध्यानमूलं गुरुमूर्ति,
पूजामूलं गुरुपद,
मत्रमूल गुरुवाक्य,
मोक्षमूल गुरुकृपा.
ज्ञानी, ध्यानी, मुनी, योगी, यती,
गुरु कृपा विना सिद्धी नथी

ॐ

आप तणां अमूलां वचनो ने, भूली खरे भटकाणो,
नाथ विचार्या नहि में मनमां, रोझ वनी अथडाणो;
दुर्गुण अवधि मारारे, माफ करीने प्रभुजी तारो. ३

माया देवीनी दुष्ट खाईमां, अंध वनी पटकाणो,
पंथ भूली खाडामां पडीयो, अति करुं चूमराणो;
फरतुं सैन्य मोहनुं रे, नीरखी खूब मनमां गभराणो. ४

मदिरा पीने मेड बने तीम, मद दारुमें पीधो,
नीशा मही चकचूर वनीने, नर भव एळे कीधो;
सघळुं आप पीछाणोरे, प्रभुजी आप थकी नव छानुं. ५

अग्नि धखी छे रोमरोममां, त्राय त्राय पाम्यो छुं,
नथी हवे स्हेवातुं मुजने, कर्म थकी हार्यो छुं;
शरण गुरुनुं साचुंरे, ए विण कोई हवे नहि मारुं. ६

घणुं कह्युं थोडामां समजी, हस्त हवे प्रभु झालो,
करगरतो आ दीन वाळक कहे, अरजी नाथ स्वीकारो;
विनवे किंकर त्हारोरे, मुजने भवसागरथी तारो. ७

ॐ

श्री सद्गुरुभ्यो नमो नम

॥ द्वीतीय गुरु काव्य तरंग ॥

ॐ

ध्यानमूल गुरुमूर्ति,
पूजामूल गुरुपद,
मन्त्रमूल गुरुवाक्य,
मोक्षमूल गुरुकृपा.
ज्ञानी, ध्यानी, मुनी, योगी, यती,
गुरु कृपा विना सिद्धी नथी

ॐ

१

राग-कल्याण

नमन करो श्री जय जय गुरुवर,
तुही तुंही त्राता, जगविख्याता;
घट घटमां गुरु गुण गवाता,
विश्व विभुवर महान धुरंधर. नमन १

अकळ अरुपी, ब्रह्मस्वरुपी,
विश्व मुही तुम ज्योत झळकती;
जय जय वंदन जय जय गुरुवर. नमन २

आत्म उद्धारक, कर्म निवारक,
भवसागरमां डूबता तारक;
जग उपकारी जय जय गुरुवर. नमन ३

दीन दुःख भंजन, पाप निकंदन,
विश्व करे छे वंदन वंदन;
जय जय गुरुवर जय जय गुरुवर. नमन ४

बाळ उगारो, डूबता तारो,
भव भयनां गुरु दुःख संहारो;
किंकरनाछो प्राण प्रभुवर. नमन ५

ॐ

२

राग-शातिसूरी गुरुवरजी तुमसे कोटी नमन

अखीलपती हरजनका तुमपे क्रोडो प्रणाम
अजर अविनाशी कहलाते, अगम अरुपी धून लगाते,
अनाथ नाथ कहाते, तुमपे क्रोडो प्रणाम १
शाम घटामें तेज छवाया, सकळ जगतका तात कहाया,
भव भय दूर भगाया, तुमपे क्रोडो प्रणाम. २
जीनके आप गुरु कहलाते, ईष्ट रुपे सब जन गुण गाते;
घट घट आप पूजाते, तुमपे क्रोडो प्रणाम. ३
यागीश्वर अवधूत कहाया, ब्रह्म दशामें नाद वजाया,
अमृत जळ वरसाया, तुमपे क्रोडो प्रणाम ४
शातिसूरीश्वर नाथ हमारे, उस बीन कोई नहि मन प्यारे,
भवसागरसे तारे, तुमपे क्रोडो प्रणाम. ५
हृदय कमलका मेल कटाते, जब अतर में ज्योत जगाते,
किंकर शीर नमाते, तुमपे क्रोडो प्रणाम. ६

३

भुजगी छद

जगत वैभवोमा रमे छेल राजी,
धनी शेर नाच्या अरे कईक पाजी,

विचार्युं कदापि नहि त्यां अमारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. १

मळे पुत्र मित्रो करे कंईक चाळा,
घडे कल्पनाना जीवनमांय माळा;
अरे एह सर्वे वधुं छे अकारु;
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. २

सूतो महेलमां ए प्रभु रुप माणे,
करे दास वृंदो अति शेव जाणे;
पलकमां वधुं ए थवानुं निराळु,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. ३

फर्यो वेल थई पुत्रने नार माटे,
अमारुं करीने चढयो छे झपाटे;
तथापि थवानुं नथी ए त्हमारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. ४

भले कोच शोफा हींडोळा हींचोळा,
चळकता दीशा चारमां काच गोळा;
मच्युं मोह राजा तणुं ए ढींगाणुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. ५

प्रभुए कीधा छे घणा मार्ग सारा,
परंतु वधा लागता ए अकारा;

पडे दुःख त्यारे प्रभुने पुकारु,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. ६

गुरुनु कदापि नहि नाम लीधु,
परार्थे अरेरे नहि काम कीधु;
अमारु थवानु नथी ए त्हमारु,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारु. ७

करी घोर कर्मो पछी तु रडे छे,
निराधार पक्षी बनी तडफडे छे;
अरे मोह माया महो सर्व हार्यु,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारु. ८

अरे महेल माळा वगीचा मिनारा,
कदापि थवाना नथी ए त्हमारा;
छता तु करे छे अमारु अमारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारु ९

चढो धर्मना उद्यमे नित्य भाई,
वणज त्या वधारी करी ल्यो कमाई;
नफोखाद सर्वे खरेखर त्हमारु,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारु. १०

अजाणे अरे काळ बनशे शिकारी,
उतरशे इहा देहनी सहु खुमारी;

जशे हंस चाल्यो थशे सर्व न्यारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. ११

गुरुवर प्रभो मार्ग साचो बतावे,
सूता प्राणीओ नींदमांथी जगावे;
भवाब्धी तणां बंधनो टाळनारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. १२

सदातान अंतर मही ए मचावो,
निरंतर धूनी रोम रोमे जगावो;
घटा शाममांए करे छे उजाळुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. १३

अरे आतमाराम अंतर विचारो,
गुरुवर विना पंथ सर्वे अकारो;
डूब्या भवरुपी सींधुथी तारनारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. १४

कहे दास किंकर हृदयमां घडायुं,
भींतर रोमने रोममां कोतरायुं;
शरण एक शांति गुरुनुं स्वीकार्युं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. १५

ॐ

४

राग-पूजारी मोरे मंदिरमे आवो

गुरुजी मोरे मंदिरमे आवो प्रभुजी.

गुरुपद प्यारु, भयहरनारु,
नित्य हृदयमा ध्यावो गु १

गुरुवर ब्रह्मा, गुरुवर विश्नु,
गुरुमहेश कहावो. गु. २

गुरुमही सृष्टी, गुरुमही सर्वे,
नित्य गुरु गुण गावो. गु ३

गुरुवर भजता, गुरुवर जपता,
अंतर ज्योत जगावो. गु. ४

नाथअरुपी, ब्रह्मस्वरुपी,
ब्रह्म दीशा बतलावो गु. ५

एक शरण ले, शांतिगुरुनुं,
किंकर बाळ बचावो. गु ६

ॐ

५

राग-राधेश्याम

भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. १

भमीयो भूला भवचक्रमा, भमरो थई पुष्पे फर्यो,

म्हेंकी छतां नहि वासना, आखर भुंडा रोतो रह्यो;
भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. २

म्हारा अने त्हारा महीं, मूर्खो वनी जग आथडयो,
त्हारुं विचार्युं नहि कदी, पागल वनी ढुंडतो रह्यो;
भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. ३

काया जुठी माया जुठी, दुनीआ वधी निश्चय जुठी,
अंधो वनी दुनीआ फर्यो, आखर प्रभो ज्वाळा उठी;
भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. ४

भजवा थकी पण ना मळे, बोल्या करेथी शुं वळे?
घट मेल जो धोवाय तो, निश्चय प्रभु तुजने मळे;
भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. ५

साचा जुठा व्यवहारनी, ओळख करी भक्ति करो,
नीती दिपक अंतर धरी, नीज आत्मनुं भातुं भरो;
भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. ६

किंकर कहे महापुन्यथी, मानव जीवन मोंघुं मळ्युं,
शांतिसूरी गुरुदेवनुं, स्वप्नुं मने साचुं फळ्युं;
भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. ७

ॐ

६

राग-महावरीका हम सीपाई वनेंगे

भजेंगे भजेंगे भजेंगे भजेंगे;
गुरुवर प्रभो हम सदाही भजेंगे. भजेंगे. १

पडे कष्ट हम पर, हुवे जुल्म भारी;
गुरुवर प्रभो हम कभी नहि भूलेंगे. भजेंगे २
गुरुध्यान मूर्ति, गुरुमंत्र पाठो,
गुरुनाम सूत्रो सदाही पढेंगे भजेंगे. ३
पीतु मात भ्राता, गुरुदीन दाता,
गुरुनाम हरदम जपेंगे जपेंगे. भजेंगे. ४
प्रहारो कदापि, पडे कर्म योगे,
छता शांतीका पान हरदम करेंगे. भजेंगे. ५
क्षमा औषधीसे, हृदय शुद्ध करके,
सभी जीवको हम नमेंगे नमेंगे. भजेंगे. ६
कहे दास किंकर, मुजे प्राण एकी,
प्रभो शांति चरणे सदाही झूकेंगे. भजेंगे. ७

ॐ

७

दुहा

भक्ति करवी दोहली, वचन बोलवा स्हेल,
हु पापी ए शुं करुं, भर्यो हृदयमा मेल. १
लक्ष चोराशी योनीमा, फर्यो अनंत वार;
छता नहि वारुं जडयु, कोण बचावणहार. २
संसारे सुख क्या मळे, कीचड ए कहेवाय,
असंख्य कीडा खदबदे, स्मित नहि लेवाय ३

ए पैकीनो एक हुं, नीच नराधम छेक;
भावनथी भक्ति नथी, घटमां नथी विवेक. ४

अनेक भवना पुन्यथी, मळया प्रभो कीरतार;
शांतिसूरीश्वरनाथने, अर्ज करुं वारंवार. ५

धन लक्ष्मी वैभव अने, कुटुंब सहु परीवार;
स्वार्थ सबंधे सांपडे, शरण एक कीरतार. ६

मानव मोह मही मरे, जाण छतां पटकाय;
आखर पोक मूकी रडे, अश्रु नयन वहाय. ७

किंकर कहे ए कठीन छे, मोह तणी महा जाळ;
विरलनरो जल्दी तजे, भजता दीनदयाळ. ८

८

भक्ति अजब जंजीर छे, भक्ति जीवननुं तीर छे;
कर्मो हणे ए तीरथी, ए नर जगतमां वीर छे. १

मृत्यु थकी जे ना डरे, मद मोह मायाने हरे;
परवा करे नहि मानवी, ए नर जगतमां वीर छे. २

जे विश्वने निज समगणे, समभावनां सूत्रो भणे;
जळपान प्रेमतणुं करे, ए नर जगतमां वीर छे. ३

दिप ध्याननो झळक्या करे, झरणां अमीरसनां झरे;
निज मस्तिमां म्हाल्या करे, ए नर जगतमां वीर छे. ४

गुरुदेवमा लयलीन थई, पळपळ धूनी चाल्या करे;
क्षण मात्र पण विसरे नहि, ए नर जगतमा वीर छे. ५

किंकर कहे आ सर्वमा, हु अल्प पामर शु करु;
भक्ति करी भगवतनी, घटमेलने धोया करु. ६

ॐ

९

राग-हे रगभीना नेमनगीना

हे! गुरु श्री महेर करीने, किंकर बाळ नचावी ल्यो;
भवसागरमा डूबता अमने, शिष्य गणीने तारी ल्यो हे! १

घोर गगनमा घूमी रहेला, अधकारमा अथडेला;
समज छता पण भान भूलेला, अनाथ बाळ उगारी ल्यो. हे! २

मोह मायामा मस्त बपेला, मणीधरमा सपडाएला;
मायाना महेमान बनेला, आश्रीतने अपनावी ल्यो हे! ३

परने दुःख देवु समजेला, परपीडाने भूलेला;
परदुःखभजन साची सेवा, पर उपकार शीखावी ल्यो. हे! ४

दीन बाळक आ अर्ज करे छे, विनती आप स्वीकारी ल्यो;
बाळक किंकर दास तहमारो, भवसागरथी तारी ल्यो हे! ५

ॐ

१०

राग-धनाश्री

दयालु गुरु सौनुं करो कल्याण,
पामो अमर विमान. दयालु. १

दया देवीने दिलमांहे धारी,
अनाथने तारनार. दयालु. २

करुणा केरु कमळ खीलाव्युं,
आतम दीपावणहार. दयालु. ३

मन, वचन, गुप्तीना पाळक,
छो जीवना प्रतिपाळ. दयालु. ४

सर्व सिद्धिना दायक गुरुश्री,
परदुःख भंजनहार. दयालु. ५

शांत सुधारस अमृत पीने,
उगारो नरनार. दयालु. ६

ॐ अर्हंना ध्यानने धारी,
अद्वैतमां वसनार. दयालु. ७

भवसागरमां डूबता अमने,
उतारो भव पार. दयालु. ८

बाळक किंकरदास कहे छे,
तारो दीन दयाळ. दयालु. ९

११

राग-माढ

गुरु प्राणथी प्यारा, दुःख हरनारा, मुज हैयाना हार.

आप विना गुरु कोण अमारो, नाद सूणे कीरतार;
भव अटवीमां भमता भमता, मळीयो तु आधाररे गुरु. १

जुठ प्रपचतणी जाळोमा, सपडायो वार वार,
जाण छता मैं हर्षे कीधा, कृत्य अति दूष्कार रे. गुरु. २

पुन्य प्रतापे भान थयुं तो, मार्ग मळ्यो कीरतार;
करुणासागर पार उतारो, चरणे पडु वारवार रे. गुरु. ३

भक्ति सुधा प्रगटे अतरमा, रोमे रोम भींजाय;
स्नान करी हु पाप पखाळु, मेल सहु धोवाय रे गुरु ४

बाळक आ निरधार त्हमारो, कोई नहि आधार,
आप अनाथ सनाथ गुरु श्री, भवसिंधुथी तार रे गुरु. ५

शातिसूरी प्रभो नाम त्हमारुं, ज्ञानी अने गुणवान;
सदगुरु साचा आप कहावो, किंकरना छो प्राणरे. गुरु. ६

१२

राग-धार तरवानी

ज्या लगे आतमा सत्य समजे नहि,
त्या लगे सदगुरु कीम पीछाणे. ज्या. १

रात दीन पापनी रमतमां रानीयो;
सद्‌गुरु पंथ ए केम जाणे;
सद्‌गुरु समजवा स्हेल ना जाणशो,
भाग्यशाळी भीरु एह जाणे. ज्यां. २

राग द्वेषे रड्यो मोह वैरी नड्यो,
काम क्रोधे मळी केर कीधो;
दया रुप देवने ध्यानमां नव लीधो,
दिव्य प्रभु पंथ ए केम जाणे. ज्यां. ३

नारी रुप नागणी देखीने वश थयो.
फुल मही भ्रमरे जेम वास कीधो;
रंगमां राचीने ख्याल कंई नव कीधो,
भक्तिनो मार्ग ए केम जाणे. ज्यां. ४

जगत व्यवहारमां जड बन्या मूर्खजन,
जीवननी ज्योतने नव पीछाणी;
दास किंकर प्रभो! शांतिने विनवे,
कीम करी जीवनने पार पामे. ज्यां. ५

१३

राग-वाजां वाग्यां सोहम वाजां वागीयां

नित्य उठी स्मरो गुरुराज, गुरुगुण दोहीला.

गुरुराज मळे महा पुन्यथी,
एतो पामे भविक नरनार, गुरुगुण दोहीला.
गुरुदेव गुरु दीप जाणजो,
गुरु विश्वना तारणहार, गुरुगुण दोहीला.
गुरुज्ञानी प्रभु रुप दीसता,
गुरु ईश्वरनो अवतार, गुरुगुण दोहीला.
प्रह उठी भजो गुरुराजने,
गुरु ब्रह्म जगावण हार, गुरुगुण दोहीला.
धन्य, धन्य, भविकजन पामशे,
एनो थाशे सफळ अवतार, गुरुगुण दोहीला.
मन मंदिरमा गुरु स्थापीने,
जपो जाप, तजो संताप, गुरुगुण दोहीला.
मनु जन्म मळ्यो महा पुन्यथी,
नर भव मळीयो अतिसार, गुरुगुण दोहीला.
नित्य ध्यान करो गुरुदेवनु,
गुरुराज नमो शीरताज, गुरुगुण दोहीला.
गुरु तत्व महीं सहु आवीयु,
गुरु भव भयना हरनार, गुरुगुण दोहीला.
सहु हर्ष थकी गुरुवर भजो,
कहे किंकर मुज मन प्राण, गुरुगुण दोहीला.

ॐ

१४

राग-वसंततिलकावृत

नित्ये उठी मह विषे गुरुदेव ध्यावो,
गुरुवर प्रभो विण बीजुं उरमां न लावो;
उठतां प्रभात समरे मन शुद्ध थावे,
भजतां थकां भव तणां दुःख दूर जावे. १

जय जय गुरु जय गुरुवर धूनध्यावो,
आनंद मंगळ तणां पुर उभरावो;
एना विना जीवननो नहि पार आवे,
भजतां थकां भवतणां दुःख दूर जावे. २

आहा ! गुरुवर तणा सहु गुण गावो,
पळपळ विषे सदगुरुवर नित्य ध्यावो;
महा पुन्यवान प्राणी गुरु गुण गावे,
भजतां थकां भवतणां दुःख दूर जावे. ३

गुरुदेवता गुरुप्रभो गुरु दिव्य ज्ञानी,
गुरुदेव पाय पडजो सहु शीर नामी;
शरणुं प्रभो गुरु तणुं डूबता बचावे,
भजतां थकां भवतणां दुःख दूर जावे. ४

चैतन्य सिंधु घुघवा गुरु धून ध्यावो,
घट मेल साफ करीने उरमां गजावो;

जळमां अने स्थळ विषे गुरु रुप आवे,
भजता थका भवतणा दुःख दूर जावे ५

गुरुतत्व दीप झळक्यो मुज आत्म मांहे,
एना विना जीवनमां नव स्हाय क्याए;
शांति प्रभो ! चरण किंकर गुण गावे,
भजता थका भवतणा दुःख दूर जावे. ६

ॐ

१५

राग-धार तरवारनी

प्रह उठ नित्य सदगुरु प्रभो समरीए,
भवतणा दुःख सहु नाश थावे.
सदगुरु सदगुरु सदगुरु सत्य छे,
ए विना कोई नहि पार पावे प्रहउठी १
सदगुरु मात छे सदगुरु तात छे,
नित्य भजता थका शुद्ध थावे,
सदगुरु विण नहि जीवनतारक प्रभो,
गुरु कृपा होय तो मोक्ष पावे. प्रहउठी २
सदगुरु ब्रह्म छे सदगुरु धर्म छे,
सदगुरु विण नहि पार पावे,
रटन गुरुदेवनु स्मरण गुरुदेवनु,
एह नरनु जीवन शुद्ध थावे. प्रहउठी ३

सदगुरुवरमहीं विश्व आवी गयुं,
सदगुरुदेव विण सर्व जुठुं;
सहाय साची सदा सदगुरुवरतणी,
सदगुरु ध्यावतां पार आवे. महुउठी ४

जाप पळपळ जपे, ताप नित्ये तपे,
मुखथकी इष्टनुं तान मचवे;
हृदयनो मेल धोवाय नहि त्यां सुधी,
सदगुरु पंथने केम पावे. महुउठी ५

मस्त थई वन विषे धून धखवे सदा,
नदीतटे जई अरे स्नान करता;
रामना नामनुं गान नित्ये करे,
हृदय शुद्धि विना कंई न थावे. महुउठी ६

हृदय शुद्धि करो मोह माया हरो,
जगत जंजाळ सहु परीहरो तो;
तान एनुं सदा ध्यान एनुं सदा,
शुद्ध मनथी भजे पार आवे. महुउठी ७

सदगुरु सदगुरु स्मरण नित्ये करो,
करगरो नाथ चरणे पडीने;
दासकिंकर प्रभो! शांतिने विनवे,
शुद्ध मनथी भजे पार आवे. महुउठी ८

*

१७

राग-उपरनो

कृपानाथ साचा मळ्या मोक्ष गामी,
करु हु स्तुति एहनी शीर नामी;
महा पुन्य योगे मळे एह जाणो,
गुरुराज ज्ञानी प्रभु रुप मानो १
गुरुराज मळवा नथी स्हेल भाई,
भमे भूत थईने तदापी न काई,
निरतर गुरु भक्तिनो योग आणो,
गुरराज ज्ञानी प्रभु रुप मानो. २
गुरु विण मळे नहि प्रभु पथ भाई,
गुरु विण मळे नहि प्रभुनी सगाई,
गुरु ज्ञानी ध्यानी गुरु सत्य जाणो,
गुरुराज ज्ञानी प्रभु रुप मानो. ३
सदा चित्त राखो गुरुदेव माही,
नथी ए विना विश्वमा भाई काई,
गुरुवर तणी स्हाय साची पीछाणो,
गुरुराज ज्ञानी प्रभु रुप मानो. ४
सदा गान एनु सदा तान एनु,
सदा पान एनु सदा ध्यान एनु,
करो नित्य भक्ति हृदय टेक आणो,
गुरुराज ज्ञानी प्रभु रुप मानो. ५

शरण एह साचुं विना सर्व काचुं,
प्रभो नित्य अंतर विषे भक्ति राचुं;
कहे बाळ किंकर सदा उर आणो,
गुरुराज ज्ञानी प्रभु रूप मानो. ६

ॐ

१७

राग-धन भाग्य हमारां

सदगुरु अमने पार उतारो.

दुनीआदारीनां दुःखो सहीने, रात दिवस एमां गाळ्यो;
विषम पंथथी कोण निवारे, गुरु विण नहि आधारो. स–१

राग, द्वेष, रमत बहु रमीयो, भवसागरमां भमीयो;
अनंत, अनंता, अवगुण भरीयो, एहने आप उगारो. स–२

अनुभवीअ विण कोण उगारे, साचो पंथ बतावे;
ज्ञान, ध्यानथी पार उतारे, एह गुरु उरधारो. स–३

सत्य मार्गनुं श्रवण करावो, शांतीनो पाठ पढावो;
दया धर्मना रस्ते लावो, किंकरबाळ बचावो. स–४

ॐ

१८

राग-सदगुरु भक्ति करेवारे

सदगुरु अरज स्वीकारो आप, सदगुरु अरज स्वीकारो;
अमने बाळक गणीने बचावो आप, सदगुरु रज स्वीकारो. स–१

संसार दावानळमा सडेला, अज्ञान माहे उघेला,
माया, मदमा भान भूलेला, पापीजनने तारो आप स-२
विषय, नींदमा अंध थएला, मानमा मस्त बनेला;
मोह, मदिरा पान पीधेला, एहनो केफ उतारो आप. स-३
पर नींदामा आनद मान्यो, मनमाहे बहु हरखाया;
पोताना दोषो नवी जाण्या, ए सहु नाथ निवारो आप. स-४
अति, अति, दोषोना भरेला, सदगुरु पथ चूकेला;
घोर गगनमा घूमी रहेला, किंकर वाळ उगारो आप स-५

१९

गुरुस्तोत्र

राग-हरिगीत छद

जीवन नौका तारनारा, एक श्रीगुरुदेव छे,
आत्मने उद्धारनारा, एक श्रीगुरुदेव छे,
घटमा दिपक सळगावनारा, एक श्रीगुरुदेव छे,
मानव जीवन पलटावनारा, एक श्रीगुरुदेव छे. १

भवःदुख ज्वाळामा हिमालय, एक श्रीगुरुदेव छे,
शातीनुं साचु शिवालय, एक श्रीगुरुदेव छे,
लक्ष्मी अने वैभव जीवनमा, एक श्रीगुरुदेव छे,
तत्वना भडार साचा, एक श्रीगुरुदेव छे. २

योगीश्वरो अवधूतमांपण, एक श्रीगुरुदेव छे,
रुषिवर अने मुनिवर महीं पण, एक श्रीगुरुदेव छे;
जपमंत्रने जगदीश जीनवर, एक श्रीगुरुदेव छे,
मूर्ति अने मंदिरमां पण, एक श्रीगुरुदेव छे. ३

भाग्यनो साचो सितारो, एक श्रीगुरुदेव छे,
मुक्तिनो मनहर मिनारो, एक श्रीगुरुदेव छे;
जीवनयंत्र सुधारनारा, एक श्रीगुरुदेव छे,
दिव्यपंथे प्रेरनारा, एक श्रीगुरुदेव छे. ४

संयम अने शास्त्रो महीं पण, एक श्रीगुरुदेव छे,
तरण तारण दुःख निवारण, एक श्रीगुरुदेव छे;
विश्नु अने ब्रह्मा महेश्वर, एक श्रीगुरुदेव छे,
परब्रह्मने ज्ञानी गुणेश्वर, एक श्रीगुरुदेव छे. ५

ज्ञान साचुं ध्यान साचुं, एक श्रीगुरुदेव छे;
सुख संपत्तीनुं स्थान साचुं, एक श्री गुरुदेव छे;
किंकर कहे मन मंदिरे पण, एक श्रीगुरुदेव छे,
विश्वमां व्यापी रहेला, एक श्रीगुरुदेव छे. ६

❧

श्रीसद्गुरुभ्यो नमोनम

तृतीय श्रीशांतिसूरीश्वर काव्य तरंग

ॐ

वसंततिलकावृत

काव्यो लख्या हृदयना अति हर्षथी में,
गुरुदेवना स्वरुपने अतर वरीने,
आहा ! अजब कृपा थई शांतिसूरीनी,
भभकी रही जीवनमां धून ए गुरुनी.

ॐ

१

श्री सरस्वती देवीने प्रार्थना

राग-बीलावल

नमन करुं नमन करु, हे ! सरस्वती,
मयूरवाहन वास करी, मुख सुहावती. नमन-१
जननी, धरणी, जगतभरणी, देवी भगवती;
ज्ञान, ध्यान, शक्ति अर्प, हे ! सरस्वती. नमन-२
रुषि योगी, संत जपे, पंडितो अती;
ध्यान त्हारु सर्व करे, हे ! सरस्वती. नमन-३
भोजराये भजन कीधुं, भ्रमर भींजवती,
कवि, कालिदास कहे, बुद्धि खीलवती. नमन-४
देवीमां असुर नाद, धरणी ध्रूजवती;
तेज त्हारुं दिव्य भासे, हे ! सरस्वती. नमन-५
प्राण प्रभु शांति कहे, विश्व वदंती;
शास्त्रने रचावनार, हे ! सरस्वती. नमन-६
शांति चरण दासमां, तुं पुरजे मती;
वांच्छना पुरो अमारी, हे ! सरस्वती. नमन-७

२

राग-रवारण हो मारे नेसलडे

गुरुजी हो ! मोरे मंदिरीये,
मोरे मंदिरीये हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. १

शातिसूरीश्वर, प्राणप्रभु माहरा;
शातिसूरीश्वर हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. २

ज्ञानी धुरधर, ध्यानी धुरधर,
विश्वमही वसीयारे हो !
पधारो मोरे मदिरीये ३

मोरे मदिरीये, अलवेली मेडीओ;
भक्तिना गोख रुडा हो !
पधारो मोरे मदिरीये. ४

प्रेम पुष्प हार गुथ्यो, कंठे सोहाववा;
कठे सुहाववारे हो !
पधारो मोरे मदिरीये. ५

धीरजनो धुप अने, शातीनी दीवीओ;
प्रगट्यो पुनमचद हो !
पधारो मोरे मदिरीये. ६

अनुभवनी आरती, उतारु आनदथी;
चित्तडाना चदन रे हो !
पधारो मोरे मदिरीये ७

ध्यान दीप झळक्यो छे, सघळी आलममा,
दिव्य तेज झळक्या रे हो !
पधारो मोरे मदिरीये. ८

पळपळ हुं जाप जपुं, प्राणप्रभु माहरा;
टळवळतां वाट जोउं हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. ९

शांशां सन्मान करुं, हुं तो प्रीतमजी;
अंतरना प्राणनाथ हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. १०

किंकर, बाळ प्रभो, शांतिसूरींद्रनां;
करगरतां पाय पडे हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. ११

ॐ

३

राग-सैदा तारो खूब के दहाडो रे

गुरुजी भीक्षा आपोरे, भिखारी आव्या आंगलडे.

राय पूकारे रंक पूकारे, पंडीतनो पोकार;
वीर अने वेदांत पूकारे, माया अपरंपार. गु-१

सज्जन आवे दुर्जन आवे, मानवनो नहि पार;
उंच नीचानो भेद् ना लावो, भाव भर्यो सत्कार. गु-२

कंईक रडे छे कर्मथी हारी, कंईक रडे संसार;
कंईक रडे छे भक्तिना माटे, ध्यान करे छे अपार, गु-३

आशिष आपो कष्टने कापो, हस्त जोडुं वारंवार;
शांतिगुरु श्री नाथ अमारा, हैयाना छो हार. गु-४

रक भिखारी राय भिखारी, मोटरमा फरनार;
संत अने सन्यास भिखारी, भीख भर्यो संसार गु-५

किंकर भटक्यो भव अटवीमा, फेरा फर्यो वारवार;
पुन्य प्रतापे नाथ त्हमारो, सापडीयो दरवार. गु-६

दश वर्षोमा दवळु देख्यु, माया अपरपार;
कर्म तणी महा क्रूर गती छे, नाथ बचावणहार. गु-७

दुनिआनो दाळीद्र भिखारी, रक अने निरधार;
खूब नचावो खूब हसावो, तोय न आवे पार. गु-८

उधा हाथे लोट पीसावो, खाल मही पडे ल्हार;
आकाशने पाताळ वतावो, माया अपरपार. गु-९

किंकर रडतो अर्ज करे छे, महेर करो कीरतार;
भक्ति तणी भीक्षाने काजे, नित्य करु पोकार गु-१०

४

राग कोई नहि तारणहारा

माया अकळ तुमारी;
गुरुजी माया अकळ तुमारी.
राय न जाणे, रंक न जाणे, जाणे नहीं रुप धारी,
सुर, असुर, देवो नहीं जाणे, अकळ गती प्रभु तारी. गु-१

जाप जपावे, ताप तपावे, धून धखावे भारी,
जय जय नाद वजावे मुखसे, तोय न जाण तुमारी. गु-२

घडीक नचावे, घडीक हसावे, पळमां भान भूलावी;
रातदिवस रखडे नव जाणे, अकळ गती प्रभु तारी. गु-३

पूंठ पकडतां प्रेम धरीने, भटके जेम भिखारी;
लक्ष्मी तणी ज्योति बतलावे, तोय न जाण तुमारी. गु-४

राय भमावे, रंक भमावे, भमता भान विसारी;
भक्तिवान नर भूंगळ वजावे, तोय न जाण तुमारी. गु-५

सोनुं कसे तिम देह कसातो, कष्ट पडे अति भारी;
मरतां मरतां माळ गुरुनी, माया दीसत तुमारी. गु-६

घट मंदिरने साफ बनावो, समता रस उर धारी;
शांति सूरीश्वर नाथ जीवनना, एक गुरु गिरधारी. गु-७

अकळमती छे अकळगती छे, गत गुरुवरनी न्यारी;
किंकर कहे आ दिन बाळकने, स्हाय निरंतर तारी. गु-८

ॐ

५

राग-लागी लगन मुने तारी

आवुना योगी त्हें मने माया लगाडी.

ब्रह्म दशामां त्हें तो, अलख जगायो बाबा;
मुक्तिनी वीणा त्हें वगाडी. आवुना. १

अदभूत मंदिर छे त्हारां, अनुपम द्वारो बाबा;
सोहम्नी धूनी त्यां जगाडी. आवुना. २

अविचळमां यज्ञो त्हारा, मानव नहि भासे बाबा;
अवधूत पुष्पोनी रची वाडी. आवुना. ३

रडवडीयो हु ससारे, भवभयना दुःखडा भारे;
शरणे आव्यो छु वारी वारी. आवुना. ४

अज्ञानी बाळक त्हारो, उरमा त्हें धार्यो वावा,
किंकरमा कळा त्हें लगाडी आवुना. ५

६

राग-कल्याण

नमन करो गुरु शातिसूरीश्वर,
अवधूत आनद घन योगीश्वर. नमन १

तुही तुहीं त्राता जग विख्याता,
भारतमा तुम गुण गवाता,
जय जय वदन जय योगीश्वर नमन २

आप अरुपी, ब्रह्मस्वरुपी,
आत्म मस्तीनी ज्योत झळकती;
विश्व विश्वभर महान योगीश्वर नमन ३

भव भय भजन पाप निकदन,
राज राजेश्वर करत हे वदन;
वसुमती नदन तार्यो मरुधर. नमन ४

आत्म उद्धारक, कर्म निवारक,
वदन करत हे विश्वना बाळक,
तारो किंकरदास सूरीश्वर. नमन ५

७

राग-कल्याण

नमन करुं शांतिसूरीश्वरने,
शांतिसूश्वरश्रीने. नमन १

भारत भूमीने धन्य धन्य छे,
धन्य मरुधरने. नमन २

गाम मणादर धन्य धन्य छे,
धन्य वसुदेवीने. नमन ३

आहिर कुळने धन्य धन्य छे,
धन्य पीता तोळाने. नमन ४

धन्य धन्य गुरु धर्मविजयजी,
धर्म धुरंधरने. नमन ५

धन्य धन्य श्री तिर्थविजयजी,
महान तपस्वीश्रीने. नमन ६

तेह शिष्य गुरु शांतिसूरीश्वर,
अवधूत ध्यानीश्रीने. नमन ७

किंकर बाळक शांति चरण रज,
जय जय तान वरीने. नमन ८

ॐ

८

राग-सूरीसम्राट पद महा जाणजो रे

व्हारी भक्ति जागी छे वधा विश्वमांरे;
प्रभो! शांतिसूरी गुरुराज. व्हारी १

सूता मानव जाग्या छे हवे नीदथीरे;
त्हारी माया अजब ! गुरुराज. त्हारी २

जगे जगमा सदेश त्हारो पहोचीयोरे,
त्हारा दर्शनथी खूब हरखाय. त्हारी ३

तान मचव्यु तें आबु गीरीराजमारे,
ॐ धूनीनो यज्ञ कहेवाय. त्हारी ४

राज महेलोमा सूर त्हारा गाजतारे,
राजवीरो नमे गुरुराय त्हारी ५

एक समये आवेल कदी नव भूलेरे,
त्हारी अदभूत ज्योती झघाय. त्हारी ६

त्हारा नयनो चळके छे दिव्य तेजथीरे;
नेत्र नीरखी आनद मुग्ध थाय त्हारी ७

विश्व प्रेम, सागर छला छल भर्योरे,
स्नान करवाथी पाप नाश थाय. त्हारी ८

भीलमेणा मानव घणा कारमारे,
एने वाणीथी बोध अपाय. त्हारी ९

त्हारा मुखथी अमृत रस वही रह्योरे;
नाम त्हारु आ विश्वमा पूजाय. त्हारी १०

नथी जातीनो भेद त्हारा अतरेरे,
राय रक सहु एक सरखाय त्हारी ११

लाग लगनी किंकर व्हारा वाळनेरे;
मस्त जीवनमां सर्वे लखाय. व्हारी १२

९

राग-अखीलपती हरजनका तुमपे क्रोडो प्रणाम

शांतिसूरी गुरुवरजी, तुमसे कोटी नमन;
प्राण प्रभु गुरुवरजी, तुमसे कोटी नमन.

भारतमां भडवीर गवाया, देश मरुधर जन्म धराया;
साचा संत कहाया, गुरुने कोटी नमन. शांति १

गाम मणादरने अपनाया, परम कृपाळु आप कहाया;
घर घर गुण गवाया, गुरुने कोटी नमन. शांति २

विश्व प्रेमथी पावन करीया, अवधूत योगीश्वर पदवरीया;
सत्य वचन उर भरीया, गुरुने कोटी नमन. शांति ३

परदुःखभंजन हार गवाया, अनाथना आधार कहाया;
भारत भूप नमाया गुरुने, कोटी नमन. शांति ४

आलममां जयघोष बजाया, सूत्र अहींसानां भजवाया;
दिव्य दिपक झळकाया, गुरुने कोटी नमन. शांति ५

दीन वाळकनी अज स्वीकारो, तुम विण नाथ नहि आधारो;
किंकरवाळ उगारो, गुरुने कोटी नमन. शांति ६

१०

राग-मेंदे झुले छे तरवार

नाद एनो घरघरमा थाय, प्राण प्रभु शातिसूरीजी.
शातिसूरी जगमा पूजाय, प्राण प्रभु शातिसूरीजी. १

शांतिसूरी गुरु भेटीने आजे, आनद आनद थाय;
प्राण प्रभु शातिसूरीजी. नाद २

चंद्र समान मुख चळके गुरुश्री, तेज एनु आलममा थाय;
प्राण प्रभु शातिसूरीजी. नाद ३

ज्ञाते आहिर ग्राव पाळरू कहाया, धन्य एनी जननीना वाळ,
प्राण प्रभु शातिसूरीजी. नाद ४

वसुमात कुक्षीए जनम्या जीणदजी, राजवीरो चरणे लोटाय;
प्राण प्रभु शांतिसूरीजी. नाद ५

धन्य, मणादर, नगरी दीपाव्री, दीप एनो घरघरमा थाय;
प्राण प्रभु शातिसूरीजी नाद ६

मृत्युना पंथेथी मानव उगारे, रोग एनी आशीषथी जाय;
प्राण प्रभु शातिसूरीजी. नाद ७

ज्ञानी धुरधर, ध्यानी धुरधर, आत्मज्ञान दवलु देखाय,
प्राण प्रभु शातिसूरीजी. नाद ८

एवा रुपीवरना दर्शन करे तो, दुःख एना भवभयना जाय;
प्राण प्रभु शातिसूरीजी. नाद ९

किंकरबाळ एना चरणोमां विनवे, नाथ तणी साची छे स्हाय;
प्राण प्रभु शांतिसूरीजी. नाद १०

ॐ

११

राग-धनाश्री

नमो नमो शांतिसूरी गुरुराया;
आनंद अधिक झमाया-झमाया. नमो १

वसंत पंचमी दीन शुभ जाणो;
जेम वसंत खीलाया-खीलाया. नमो २

आहिर कुळमां जन्म धरायो;
जग उपकारी कहाया-कहाया. नमो ३

रायका श्री तोलाना नंदन;
नामे सगतोजी कहाया-कहाया. नमो ४

माता वसुदेवी कुक्षी दीपावी;
भारत भूप नमाया-नमाया. नमो ५

आठ वरस घरवास वसाया;
जंगल ढोर चराया-चराया. नमो ६

धर्म विजय प्रभो धर्म धुरंधर;
एहनी पाट दीपाया-दीपाया. नमो ७

युवान वयमां संयम पाया;
शांतिविजयजी कहाया-कहाया. नमो ८

महान् तपस्वी तिर्थ गुरुना;
शिष्य तरीके सुहाया–सुहाया नमो ९
आर्य अनार्य नरो अपनाया,
शांतीना पाठ शीखाया–शीखाया. नमो १०
दारु मासनो त्याग करावी,
लाखो जीव बचाया–बचाया. नमो ११
परम कृपाळु परम दयाळु;
किंकर बाळ रीझाया–रीझाया. नमो १२

१२
राग-तेरे पूजनको भगवान

मारा प्राण प्रभु देखाय, आबू पहाडमा जोजो;
एना घर घर गुण गवाय, सारा विश्वमा जोजो १
एने घटमा ब्रह्म जगाया, आलममा नाद बजाया;
दीन बंधु नाथ कहाय, सारा विश्वमा जोजो. २
नाना म्हाडमा जन्म धराया, भीमतोळा तात कहाया,
एनी जन्मभूमी देखाय, मणादर गाममा जोजो ३
निज रूप जगतने भासे, नहि भेद जीवनमा वासे,
ऐनु तेज बधे झळकाय, सारा विश्वमा जोजो ४
महा योगीश्वर पद काजे, दीनरात गुरु धून गाजे,
घन घोर घटा देखाय, आबू पहाडमा जोजो ५
भय मृत्यु तजीने साध्यु, वीडु मोक्षपुरीनुं बाध्यु;
एनो घोर गगनमा थाय, आबू पहाडथी जोजो. ६

वसुनंदन नाथ कहाया, जंगलने पहाड घूमाया;
एनां दर्शन दुर्लभ थाय, आबू पहाडमां जोजो. ७

ए अकळकळाना गामी, प्रभु नाथ निरंजन स्वामी;
गुरु शांतिसूरीश्वर राय, आबू पहाडमां जोजो. ८

तुंही, तुंही, एक जीवनमां, तुंही, तुंही एकवचनमां;
तुंही, तुंही, नाम जपाय, मारा मंदिरे जोजो. ९

किंकर मन एक गुरु तुं, किंकर मन एक प्रभु तुं;
किंकरनां प्राण कहाय, आबू पहाडमां जोजो. १०

ॐ

१३

राग—नागरवेलीयो रोपाय

नमीए शांतिसूरीश्वरराय, भजतां आनंद आनंद थाय.

भारतना भगीरथ रुषी, ईश्वरनो अवतार जो;
सूरीश्वरश्री साचा कहेवाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० १

मरुधरमां मेरु तूठयो, अम्रत जळ उभराय जो;
पतीतो अहींयां पावन थाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० २

संत कहाया विश्वना, शासनना शणगार जो;
दयाळु दानेश्वर कहेवाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० ३

पुण्यवंत नरने मळे, भक्ति अपरंपार जो;
अभागी आलममां अथडाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० ४

ज्ञानी, ध्यानी, संयमी, लब्धी तणा भंडार जो;
कृपाळु दिव्यगुणी कहेवाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० ५
ध्यान दिपक प्रगट्यो पुरो, झघमघ ज्योत झघायजो;
पुरंधर प्राणप्रभु कहेवाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० ६
दीन बाळकनी विनती, शांतिसूरीश्वर चरणे जो;
हृदयथी किंकर पडतो पाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० ७

ॐ

१४

राग-मारु वतन मारु मारु वतन

कोटी नमन कोटी कोटी नमन,
मारा व्हाला गुरुश्रीने कोटी नमन कोटी १
नमन करेथी घट ज्योत जागे,
नित्ये रहो सहु एमां मगन. कोटी २
तिर्थविजयजी महान तपस्वी,
तप जप महीं जेणे गाळ्यु जीवन. कोटी ३
धर्मविजय प्रभो धर्म धुरंधर,
मरुधरना ए मोघा रतन कोटी ४
गुरुवर, गुरुवर, तान मचावो,
पळ, पळ, महीं करो एनु रटन. कोटी ५
जन्म मरणनी मुक्तिने माटे,
जेणे समर्प्यां तन, मन, धन. कोटी ६

एक शरण प्रभो शांतिगुरुनुं,
किंकर कहे मने लागी लगन. कोटी ७

ॐ

१५

राग-पार्श्वप्रभु प्यारा वामा माताजी के नंद

आज सूरीश्वरजी भेटीने आनंद थाय.

अवधूत आतम ज्ञानी धुरंधर,
आनंद अति उभराय. आज-१

अनंत जीव प्रतिपाळ कहाया,
बाळ ब्रह्मचारी कहेवाय. आज-२

बामणवाडजी तिर्थ धुरंधर,
महावीर स्वामी भेटाय. आज-३

साचा गुरुवर, साचा प्रभुवर,
साचा सुकानी कहाय. आज-४

विश्व गजावे ने विश्व हसावे,
विश्व मही डंको वजाय. आज-५

बाळक आपनां अर्ज करे छे,
किंकर गुरु गुण गाय. आज-६

ॐ

१६

राग-गुरु शांतिविजयजी स्वामी रे गुण गाउं आपना

ओ ! नाथ त्हमारु मनोहर मुखडु जोई जोई मन ललचाय.
वसुनंदन आप कहाया, आबु गीरीराज सुहाया,
धन्य धन्य तुमारी छाया मुखडु जोई जोई मन ललचाय. १
राग द्वेष रीपुने मार्या, मन वच कायाथी काढ्या;
भारतमां आप पूजाया मुखडु जोई जोई मन ललचाय २
माया ममताने त्यागी, भय दुर्गती दूरे भागी;
धून मोक्षपुरीनी जागी मुखडु जोई जोई मन ललचाय. ३
तुम अनाथ नाळ उगारो, भवभयना दुःखडा वारो,
किंकर कहे पार उतारो मुखडु जोई जोई मन ललचाय. ४

१७

राग-मैंतो दिवाना प्रभु तेरे लीए हय

मैंतो दिवाना गुरु तेरे लीये हय;
तेरे लीये, गुरु तेरे लीये हय. मैंतो-१
ज्ञान, दर्शन, चारीत्र, के धारक,
त्रण रतन गुरु तेरे लीये हय. मैंतो-२
पंच महाव्रत साधु कहाते,
दया का दान गुरु तेरे लीये हय. मैंतो-३

धन्य, आहिर, कुळज्ञाती दीपावो,
अर्हँम् का ध्यान गुरु तेरे लीये हय. मेंतो–४
अनंत जीव प्रतिपाळ कहाया,
योगीका नाम गुरु तेरे लीये हय. मेंतो–५
आत्म साधन केरी ज्योति जगावो,
संतन का पाठ गुरु तेरे लीये हय. मेंतो–६
पतितजनोकुं पावन बनावो,
मुक्तिका हार गुरु तेरे लीये हय. मेंतो–७
शांतिसूरीप्रभो ! नामे तुमारा,
शांतीका थाळ गुरु तेरे लीये हय. मेंतो–८
बाळक गुरुने अर्ज करे छे,
किंकरदास गुरु तेरे लीये हय. मेंतो–९

ॐ

१८

राग–ए जगमांहे अदभूत योगी

आलममां डंका बजादीया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने;
सोता मानवको जगादीया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. १
अर्बुदगीरीवरमे वास कीया, आतमकी ज्योत प्रकाषदीया;
अज्ञान तीमीर भय नाश कीया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. २
आनंदका सागर हीलवाया, वीर वचनामृतको पीलवाया;
शुभ पाठ दयाका पढवाया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. ३

ॐकार मंत्रको जपवाया, उस डंका घर घर बजवाया,
दिव्य दिपकको झळकाया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. ४

अहींसा आलमको समजाया, कई राजनको ए शीखलाया,
कुकर्म फंदसे छुडवाया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. ५

दर्दी के दर्दो नाश कीया, भव रोगोसे कई मुक्त हुआ;
अतिशयका कावु अजमाया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. ६

शांती सरोवरमें स्नान कीया, अमृत अमीरसका पान पीया;
दुनीआदारीको छोड दीया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. ७

ब्रह्मचारी बळको बतलाया, अंतरमें ज्योती झळकाथा,
किंकर बाळकने दीखलाया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. ८

ॐ

१९

राग-मेरा मौला बुलावे मदीने मुजे

मारी अरजी उपर तुम ध्यान धरो;
गुरु शांतिसूरीश्वर स्हाय करो.

आबु अविचळ पहाडमां, गुरु रात दीन फरता फरो,
वाघ सिंहनो भय तजीने, आतमनु भातुं भरो;
अष्ट पहोर गुरु तमे ध्यान करो गुरु-१

ॐकार ध्यान आराधीने, गुरु आतममां लैलीन बनो,
शांती अजब उरमां भरीने, आत्म मस्तिमां रमो;
प्रभो ! ध्यानथी कर्म चकचूर करो गुरु-२

वसुमात कुक्षे जन्म धरीने, देवसुत प्रसव्यो खरो,
मणादर भूमीने धन्य छे, ज्यां मानसर जेम हंसलो;
पीता तोलानो रत्न गवायो खरो. गुरु–३

क्रोध लोभ तजी गुरुश्री, मानने मूक्युं तमे,
मुक्ति किनारो साधवाने, मोहने छोडयो तमे;
करुणाळु गुरु करुणारे करो. गुरु–४

अशरण अने निरधारना, आधार छो गुरुश्री तमे,
परदुःख भंजन गर्व गंजन, शांतीना सागर तमे;
प्रभो! भवभयनां दुःख दूर करो. गुरु–५

लब्धी तणा भंडारने, दातार छो दीनना तमे,
अवधूतने ज्ञानी गुरु, कळीकाळमां प्रगटया तमे;
दीनानाथ हवे मुने पार करो. गुरु–६

बाळयोगी ब्रह्मचारी, योगीमां सम्राट छो,
डंको थयो आ विश्वमां, किंकर कहे मुज तात छो;
कहे भक्त मंडळ उद्धार करो. गुरु–७

ॐ

२०

राग–मेरा मौला बुलावे मदीने मुजे

योगी, अवधूत, वेष दीपाव्यो खरो;
पीतातोलानो रत्नगवायो खरो.

वाळपणमांहे तमे, जगल अने झाडो फर्या,
गौमातने भेंशो चरावी, आतमा ओजस भर्या;
धन्य, धन्य, आहिर, अवतार हीरो योगी-१

किशोर वयमा नीसरी, नहि देहनी परवा करी,
कष्टो अति जाते सही, शरणु गुरुश्रीनुं ग्रही,
मुनीश्वरमा तु महान कहायो खरो. योगी-२

शुभ शांती रस अंतर भरी, भक्ति पुरी झळकीखरी,
ॐकारने उरमा धरी, अवधूतयोगी पदवरी,
अवीचळमांहे नाद वजायो खरो योगी-३

योगीश्वरो अवधूतमा, सम्राट तु साचो खरो,
विश्वमा आदर्श साधु, तत्व दीप झळक्यो खरो,
गुरुवरमा तु ज्ञानी गवायो खरो योगी-४

दारु अने हीसा तजावी, राजवी पावन कर्या,
अंग्रेज अन्य मती जनोने, ॐ थी रीझव्या खरा;
कहे किंकर वाळ उद्धार करो योगी-५

ॐ

२१

राग-मेरा मौला बुलावे मदीने मुजे

एवा सदगुरुनुं तमे ध्यान करो,
जेथी जीवन तमारु पार करो. १

माया अने ममता तजी, जे आतम रस सींचन करे,
दुनीआथकी जे दूर रही, अवधूत योगी पद वरे;
एवा सदगुरुनुं तमे ध्यान करो. २

राय, रंक समानदेखे, श्रवण स्तुती नव करे,
आत्मज्ञान रमण करीने, ध्यानथी जाग्रत करे;
एवा सदगुरुनुं तमे ध्यान करो. ३

सत्य नीती मंत्र जेनो, धैर्यता हृदये धरे,
परनारी माता समगणे, शीव सुंदरीयारी वरे;
एवा सदगुरुनुं तमे ध्यान करो. ४

आबू अवीचळ पहाडमां, ए सदगुरु साचा मळे,
शांतिसूरीश्वर नाम जेनुं, शांतीथी कर्मो हरे;
एवा सद्गुरुनुं तमे ध्यान करो. ५

शांती तणा भंडार साचा, आत्मज्योत प्रगट करे,
ॐकारना महामंत्रथी, नरनारीने पावन करे;
कहे किंकर बाळ उद्धार करो.
एवा सदगुरुनुं तमे ध्यान करो. ६

*

२२

राग-जाओ जाओ के मेरे साधु रहो गुरु के संग

पायो, पायो, महापुन्य उदयसे, सदगुरुवर को संग;
देखलीया में सबही जगको मीला एक भगवंत,
अब तो नाथ! करुणा करके कृपा कीजे भगवंत. पा-१

गुरु वनना ए कठीन मार्ग हे, अती विकट ए पथ,
अकळ कळाका ज्ञान पढे जब, बने वोही भगवत पा–२
मृत्यु साथ जे रमत रमत हे, करे अलखमें जग,
आत्मज्ञान अंतरमें प्रगटे, बने वोही भगवत. पा–३
अवधूत रुप वीरला करजाने, अक्षयसुख अभंग,
अजर अमरपद वोही पीछाणे, एह स्वरुप भगवत पा–४
अर्बुदगीरी अवीचळ पहाडोमें, फीरता हे भगवत;
भाग्यवान नर दर्शन पावे, करे गुरुका संग. पा–५
घोर जंगलमें साधना करके, मुनीमें हुआ महत,
अती अती तप मौन लगा के, बने आज भगवत. पा–६
परम कृपाळु शांतिसूरीश्वर, मीला मुने भगवत,
बाळक किंकरदास बचायो, पूर्यो हृदयमा रंग. पा–७

२३

राग–बोल बोल आदीश्वर बाबा

बोल बोल योगीश्वर बाबा,
काय थारी मरजीरे केमाशु मुंदे बोल,
बोल बोल गुरु शांतिसूरीजी,
काय थारी मरजीरे केमाशु मुंदे बोल बोल १
दूर देशांतर से में आयो,
श्रवण सूणीने तोरा रे,

उलट अती मनमे हुई मेरी,
आशा पूरो रे केमासुं मुढे बोल. बोल २

मारवाडमे भले वीराज्या,
महीमा अजब बतावो रे;
देश देशमें नाम तुमारो,
महान कहायो रे केमासुं मुढे बोल. बोल ३

मरुधर भूमीमें घर घर तोरां,
मंगळगीत गवायां रे;
दुःखीआनां दुःख दूर करीने,
हर्ष भराया रे केमासुं मुढे बोल. बोल ४

समकीत केरो सत्य पूजारी,
साधु पद दीपायोरे;
पंच महाव्रत भार वहीने,
पूज्य गवायो रे के मासुं मुढे बोल. बोल ५

बार वरस तप ध्यान धुरंधर,
मौन अति तें धरीयां रे;
काम क्रोध को भष्म करीने,
शांती भरीयारे केमासुं मुढे बोल. बोल ६

जन्मभूमी जयवंत बनाई,
मातपीता कुळ तायौं रे;

धन्य आहिर अवतार तुमारो,
सिद्ध गवायो रे केमाखु मुढे बोल बोल ७
केसरीआजी तिर्थने माटे,
घोर अभीग्रह करीयो रे;
त्रीश उपवास हुआपण मनसे,
कदी नहि डरीयोरे केमाखु मुढे बोल. बोल ८
मोती महेलमा पारणु कीधु,
महाराणाना हस्ते रे;
भोपालसिंह राजनने युझव्यो,
जय जय वर्ते रे केमाखुं मुढे बोल बोल ९
अर्ज सूणो सहु भक्तजनोनी,
अन आधार तुमारो रे;
बालक किंकरदास तुमारो,
डूबतो तारोरे, केमाखु मुढे बोल. बोल १०

ॐ
२४

राग–धन धन हो जगमे नरनार सीद्धाचल के जाने वाले

धन्य धन्य शांतिसूरी गुरुराज,
शांतीके पान पीलाने वाले.
आहिर कुळमे अवतार, उपन्या ए जुग शीरदार,
सब धर्मके पालन हार ज्योतिसे ज्योत मीलानेवाळे ध–१

ब्रह्मचर्य अति बळवान, शुभ शांती अनोपम तान;
अरिहंत प्रभुके ध्यान पतितको प्रेम पीलानेवाले. ध–२

अर्हम पदना धरनार, अविनाशी पद उर धार;
गुरु तारे नरने नार मरुधर देश दीपानेवाले. ध–३

गुरु ज्ञानी अने गंभीर, झूकते हे कंई नरवीर;
कहे किंकर ए अवधूत धुरंधर ज्ञानी कहानेवाले. ध–४

ॐ

२५

राग–दांडी तणा किनारे

वंदन तो कर रहा हुं, चाहे तारो या न तारो;
दर्शन तो कर रहा हुं, चाहे तारो या न तारो. वं–१

संसार सागरोसे, तुम वीण कोण तारे;
अरजी सूणा रहा हुं, चाहे तारो या न तारो. वं–२

दोषो अति भरेला, दुनिया मही डूवेला;
पोकार कर रहा हुं, चाहे तारो या न तारो. वं–३

मद मोहमां मरेला, माया महीं फसेला;
विनती तो कर रहा हुं, चाहे तारो या न तारो. वं–४

बंधन भवाब्धी भयसे, तुम वीण कोन छुडावे;
शीर तो झुका रहा हुं, चाहे तारो या न तारो. वं–५

अज्ञानता हठाके, शुभ शक्ति आप अर्पो;
चरणोमे नम रहा हुं, चाहे तारो या न तारो. वं–६

आबु अजब गीरीमें, शाति प्रभो चरणमें;
सेवा तो कर रहा हुं, चाहे तारो या न तारो. व-७
किंकर पूकार करते, भवसे करो अनेरा,
शातिकु च्हा रहा हु, चाहे तारो या न तारो. व-८

ॐ

२६

राग-दाडीतणा किनारे

गुरुवर! प्रभो जीवनमे, हे एक ही हमारा,
शीर एक को नमाया, दुसरोंसे क्या सहारा १
अंधार कोटडीमे, अनतो हुवा उजाळा;
परवा नहे कीसीकी, सच्चा मीलासहारा. २
आफत पडे कदापी, सबही फना तदापी,
शोचु नहि जीवनमें, सच्चा मीला सहारा ३
चाहय तारे या डूबाडे, गेडीसे मार मारे;
कबही न टेक हारे, ये है नियम हमारा ४
मेंतो भूलुं कदापी, पण ए भूले न कबही;
माया अजब! गुरुकी, सच्चा मीला सहारा. ५
अवधूत ज्ञानी ध्यानी, अमृत समी हे वाणी,
गुरु! मोक्षकी नीशानी, सच्चा मीला सहारा. ६

अरजी प्रभोसे मेरी, कवही भुलुं न उन्को;
गुरु एकही कीयाहे, दुसरों से क्या सहारा. ७

कवही वियोग उन्का, मुजसे नहि कराना;
पळमात्र नहि विसारुं, सच्चा मीला सहारा. ८

मुज मन पीता ही माता, मुज मन प्रभो! मनाता;
मुज पापीकाए दाता, दीनके दयाळु प्यारा. ९

में ईष्ट उन्को जाणु, सवही गुरुमे मानु;
सर्वस्व भी पीछाणु, सच्चा मीला सहारा. १०

शांति प्रभो ! चरणमे, ये अर्ज वाळ केरी;
कहेते हे दासकिंकर, वाकी जुठा सहारा. ११

ॐ

२७

राग-वसंत तिलका वृत

मागुं प्रभो ! जीवनमां स्मित हर्ष त्हारुं,
मागुं प्रभो ! जीवनमां शुभ अर्पनारुं;
आहा ! प्रभो ! तुज वीना सहु छे अकारुं,
त्हारा वीना जगतमां नव कोई प्यारुं. १

आहा ! ध्वनी गुरुश्रीनो विश्वे वर्यो छे,
ॐकारनो दीपक आ जगमां धर्यो छे;
आहिरनां अति अति पुन्ये थनारुं,
त्हारा विना जगतमां नव कोई प्यारुं. २

शांती तणा खरेखर पुर उभर्यां छे,
आहा! मरुधरतणा पुन्ये वर्या छे;
सर्वात्मने हृदयथी तु एक धारुं,
त्हारा विना जगतमा नव कोई प्यारु ३

भवदुःखमां भमी रह्या जीव तु उगारे,
त्हारा विना अरेरे नव कोई तारे;
शांतिसूरीश्वर गुरुवर नाम त्हारु,
त्हारा विना जगतमा नव कोई प्यारु ४

भक्तोतणां भीतरथी भवःदुख कापो,
आहा! प्रभो! हृदयमा कंई ज्ञान आपो,
तुज वाळकिंकर कहे सर्व प्रकारुं,
त्हारा विना जगतमा नव कोई प्यारु. ५

ॐ

२८

राग-वसंततिलकावृत

शांतिसूरि गुरु मळ्या भव भीड भागी !
वदन करी हृदयमा शशी ज्योत जागी;
आतमन चिदनघन् ऋषिवर मस्त योगी,
महामंत्र ॐ रसपान पीयुप भोगी. १

बनीए सदा जीवनमा सुख-संपशाली; -
भक्ति भगीरथ वधे भय त्राप हारी,

अर्पो नीतीत्व वळ दीनदुःख उपकारी,
भूलीए नहि कदी विभु तुम टेक भारी. २

जनम्या मरुधर विषे कुळचंद्र भानु,
करे ध्यान अंतर विषे ईश साधवानुं;
ॐकारनी अजब मस्ति महिं रमे छे,
अज्ञानता दूर करी शुभ शक्ति दे छे. ४

भारत मही भवी जीवो तुम गुण गावे,
आनंद मंगळ तणां पूर उभरावे;
तुम बाळ दास किंकर चरणे नमे छे,
कहे हर्षथी दीन तणां दुःखडां हरे छे. ६

ॐ

२९

राग खमाज-ताल दादरा

नाथ आप छो सनाथ, बाळ हुं भिखारी;
आंगणे खडो पूकारुं, अर्ज ल्यो स्वीकारी. नाथ १

शांतिसूरी ज्योतपुरी, झळहळी तुमारी;
नाद थयो विश्व मही, डूबतने उगारी. नाथ २

आप तो अगाध अकळ, ज्ञानना धिकारी;
दीसत नहि विश्वमही, जोडली तुमारी. नाथ ३

मृत्युमां सुतेल रोग, रोगीना हणारी;
अभयदानथी उगारो, प्राणीओ अपारी. नाथ ४

भ्रमण टळ्युं भाग्य फळ्युं, पाप सहु पखाळी;
दीनदयाळ सुखदपाळ, हो! कृपा तुमारी. नाथ ५
नाथ शक्ति अजर छे, हु शु वदु तुमारी;
गुणनिधान मुक्तिदान, मस्त ब्रह्मचारी. नाथ ६
देव मानु, ईष्ट मानु, ब्रह्मरुप धारी,
सर्वभासु आपमा छे, मूर्ती प्राण प्यारी नाथ ७
शरण एक ताहरु, विना वधु नकारी;
पळे पळे हु जाप जपु, आपने विचारी. नाथ ८
बाळ निराधार नाथ, आप ल्यो उगारी;
प्रार्थना करे छे दास, नमत वारवारी. नाथ ९

३०

राग-धन्य भाग्य अमारा आज पधार्या मोंघेरा मेमान
नमो, नमो, श्री शांतिसूरीश्वर प्राणप्रभु देवा,
परम कृपाळु गुरुवर ज्ञानी विश्व करे सेवा. नमो १
धन्य श्रीयोगीश्वरराया, नमे सहु रंक जने राया,
भारतमा ए महान रुपीवर आनंद घन जेवा. नमो-२
उगारे कंईक पतितोने, रीझावे राय अमीरोने;
अर्हम् पदनो जाप जपावे अम्रत फळ लेवा. नमो-३
अहिंसाना डंका वागे, सूणी सहु राजवीरो जागे,
दया धर्मनो पाठ पढावे अभय दान देवा नमो-४

जगावे ज्योती अंतरमां, निरंतर ध्यान धरे घटमां;
किंकरदास कहे मुज अर्पो चरण कमळ सेवा. नमो-५

ॐ

३१

राग हरीगीत छंद

अहा! केवां पुन्य जाग्यां, शांतिनां चरणो मळयां,
आ देहनां सदभाग्य जाग्यां, शांतिनां चरणो मळयां. १

फरतो हतो हुं शोधमां, सारा जगतने ढुंड चूक्यो,
जीवन ज्योत झघावनारां, शांतिनां चरणो मळ्यां. २

विश्वनी चारे दिशामां, घर घरे भजवाय छे,
सत्य पाठ पढावनारां, शांतिनां चरणो मळ्यां. ३

ॐकारनी धूनी अजब, ज्यां विश्व प्रेम वहाय छे,
दिव्य जळ उभरावनारां, शांतिनां चरणो मळ्यां. ४

गुरुदेवनी साची कृपा, नर भाग्यवंता मेळवे,
कृपा रस पीवडावनारां. शांतिनां चरणो मळ्यां. ५

आत्मने दीक्षीत करी, निज मस्तीमां म्हाल्या करे,
आत्मज्ञान सुहावनारां, शांतिनां चरणो मळ्यां, ६

वैभव मळे लक्ष्मी मळे, गुरुतत्व कदीये नव मळे,
आत्मने उद्धारनारां, शांतिनां चरणो मळ्यां. ७

माया अने ममता तजी, स्वार्थ विण भक्ति करो,
परम पंथे प्रेरनारां, शांतिनां चरणो मळयां. ८

किंकर कहे भूलशो नहि, भक्ति सदा भगवतनी,
वधनोने टाळनारा, शांतिना चरणो मळ्यां. ९

ॐ

३२

राग हरीगीत छंद

शांतिसूरी गुरुश्री मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करु;
तरण तारणश्री मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करु १

अनंत जीव प्रतिपाळ सचे, योग लब्धी पद वडे;
आत्म उद्धारक मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करु. २

जो आग जल रहीती जीवनमे, शांत उन्से हो गई,
अनाथका रक्षक मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करु. ३

आनंद घन जेसे रुपी, आत्म मस्तिमे रमे;
गुरुवर प्रभो ज्ञानी मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करु. ४

ॐकारकी धूनी अजर, जहा रोममे चलती रहे;
अध्यात्म ज्ञानी वीर मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करु. ५

मद्यपान मांसाहारसे, लख्खो मनुष्यको छुडावे;
उपकारी गुरुवरश्री मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करुं. ६

जहा वचन सिद्धि जळ वहे, उपदेशसे अंतर ठरे;
अमृतभर्यां सागर मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करु ७

भडवीर भारतके महा, नमते सकळ लोको अहा,
ईश साधनेवाले मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करु. ८

सत्यका पोकार कर, आलमको जाग्रत कर दीया;
कहे दास मुजको मील गया फोर, जगत ढुंढके क्या करुं. ९

ॐ

३३

राग-हरीगीत-छंद

हे! नाथग्रही अम हाथ पकडी सत्य मार्ग बतावजो,
तुम सत्यने निर्दोष जळनुं प्रेमपान करावजो;
अंतर विषे लावी दया तुम बाळ जाणी तारजो,
ए पतित पावन परम पुरुषोत्तम स्वरुप बतावजो. १

जाग्या न घट अंतर विषे तुम बाळ जाणी जगाडजो,
विषयो न त्याग्या तन विषे ए बात साची जाणजो;
अंतर अमीरसथी भरेलुं नित्य पान करावजो,
ए पतित पावन परम पुरुषोत्तम स्वरुप बतावजो. २

माया अने ममता भरेला मूढ बाळ बचावजो,
अज्ञान पींजरमां फसेला मानवो छोडावजो;
भक्ति नीती रसथी भरेलां भव्य पात्र जमाडजो,
ए पतित पावन परम पुरुषोत्तम स्वरुप बतावजो. ३

दोषो थकी भरपुर अम उपर दया दर्शावजो,
जाण्या छतां रस्तो भूलेला मूर्ख अमने मानजो;
भवदुःखमां पीडीत थयेला दास जाणी उगारजो,
ए पतित पावन परम पुरुषोत्तम स्वरुप बतावजो. ४

ॐ

३४

राग-गजल

जगतना सर्व संतोमां, गुरुश्री एक में जोया,
नमुं श्री शांतिविजयजी, अमोने पार उतारो. १

वहे ज्यां शांतीना सागर, अमीनी धार ज्यां वहे छे,
करुणा प्रेममय गुरुश्री, अमोने पार उतारो २

गुरुश्री बाळ ब्रह्मचारी, खरी छे रत्ननी क्यारी;
वरी छे शांतीरुप यारी, अमोने पार उतारो. ३

आहिर कुळमां गुरु जनम्या, पितानु कुळ दीपाव्युं,
धन्य वसुदेवी कुक्षीने, अमोने पार उतारो. ४

मणादर गाममां वसता, पिताश्री भीम तोलाजी,
तेहना पुत्र गुरुश्री, अमोने पार उतारो ५

आनदघनजी थया योगी, चीदानदजी थया योगी;
गुरुश्री धर्मविजयजी, अमोने पार उतारो. ६

तपस्वी तिर्थविजयजी, गुरुश्री धर्मना चेला,
तेहना शिष्य गुरुश्री, अमोने पार उतारो ७

गुरुश्री ज्ञानी ने ध्यानी, खरी छे रत्ननी खाणी,
ओम अर्हम् तणी वाणी, अमोने पार उतारो. ८

नमे छे दास करजोडी, हृदयथी प्रेमने जोडी;
जन्मना त्रासने तोडी, अमोने पार उतारो. ९

३५

कवाली

दुःखीनी दादको सूणके, बचा दोंगे तो क्या होगा;
प्रभो शांतिसूरी प्यारे, उगारोंगे तो क्या होगा. १

अरज सूण लो प्रभो मेरी, मीटाओ जन्मकी फेरी;
कृपालु नाथ आलमके, बचा दोंगे तो क्या होगा. २

सकळ आलम मही ज्ञानी, धुरंधर आत्मके ध्यानी;
जीवन जादव प्रभो प्यारे, उगारोंगे तो क्या होगा. ३

बुझावो कंईक राजनको, जपाते ॐ अर्हम्‌को;
अहिंसा मंत्रको पढके, बचादोंगे तो क्या होगा. ४

रुषीवर आप भारतके, जगतके संकटो हरते;
जीवनकी ज्योत प्रगटाके, उगारोंगे तो क्या होगा. ५

जातिका भेद नहि रखते, सदा समभावमे रमते;
अनाथो पर दया करके, बचादोंगे तो क्या होगा. ६

दया दातार तुम सबके, सूणाते नाद अर्हम्‌के;
अरज अंतर विषे धरके, उगारोंगे तो क्या होगा. ७

मरुधर के महायोगी, दीपावो विश्व शासनको;
कहाते आपश्री दीनके, बचादोंगे तो क्या होगा. ८

भवाब्धी बंधको तोडो, जीवन तुम ध्यानसे जोडो;
कहे किंकर कृपा करके, उगारोंगे तो क्या होगा. ९

ॐ

३६

राग-गझल

कृपालु नाथ ओ म्हारा, नयनना छो तमे तारा;
गुरु शांतिसूरी प्यारा, प्रभो मारा प्रभो मारा. १
जीवन जादव तमे व्हाला, अमीरस प्रेमना प्याला;
जीवन अग्नि बुझवनारा, प्रभो मारा प्रभो मारा. २
तमे तो विश्व विख्याता, अनाथोना प्रभो दाता,
गुणो अद्वैत उभराता, प्रभो मारा प्रभो मारा. ३
विभुवर विश्वना भ्राता, जगतना छो पिता माता,
निजानंदे सदा रहेता, प्रभो मारा प्रभो मारा ४
अधम उद्धार करनारा, पतितने प्रेम पानारा,
अमारा दुःख हरनारा, प्रभो मारा प्रभो मारा ५
डूबेला मानवी तारो, सुखे आशिष अर्पीने;
उगारो प्राणथी प्यारा, प्रभो मारा प्रभो मारा. ६
भवाब्धीना दुःखो टाळो, दया आ दास पर धारो;
बतावो मुक्तिनो माळो, प्रभो मारा प्रभो मारा ७
नथी आ बाळमां शक्ति, रीझावाने पुरी भक्ति;
गुरुनी ज्योत झगमगती, प्रभो मारा प्रभो मारा ८
अरज अंतर विषे धारो, कहे किंकर मने तारो,
जीवनमां एक तुं प्यारो, प्रभो मारा प्रभो मारा. ९

ॐ

३७

राग-धनाश्री

सदगुरु भक्ति करेवारे, सदगुरु भक्ति करेवा;
कष्ट आवे गमे तेवारे, सदगुरु भक्ति करेवा.
आधी उपाधी दूर तजी दो, अंतरथी करो सेवा;
हर्ष धरीने भक्ति करो तो, पामो शीवपुर मेवारे. स-१
मोह मायाने दूर करीने, मान प्रपंच हणेवा;
आतम शुद्ध करीने भजी लो, भव समुद्र तरेवारे. स-२
सदगुरुवरनी संगती करीने, गुरु गुण ध्यान धरेवा;
एहनो आपेल मंत्र उच्चरजो, हरदम जाप जपेवारे. स-३
अर्बुद गीरीवरमांहे मळशे, दिव्य महर्षि एवा;
शांतिसूरीश्वर नाम छे जेनुं, किंकरदास कहेवारे. स-४

३८

राग-वागे छे रे वागे छे

आवे छे रे आवे छे, एक अदभूत योगी आवे छे;
आनंद आनंद वर्तावे छे, एक अदभूत योगी आवे छे. १
अर्हम्नुं ध्यान धरावे छे, अविचळमां नाद वजावे छे;
आलमने मंत्र सूणावे छे, एक अदभूत योगी आवे छे. २
ए अनहद तान मचावे छे, अंतरमां ज्योत जगावे छे;
अविनाशी पद अजमावे छे, एक अदभूत योगी आवे छे. ३

नयनोमां नाथ वतावे छे, नारायण रूप धरावे छे,
नरनारी मळी गुण गावे छे, एक अदभूत योगी आवे छे. ४

मन मंदिरीयामां जागे छे, माया तनमनथी त्यागे छे;
मधुरा वचनामृत लागे छे, एक अदभूत योगी आवे छे. ५

शुभ शांती पाठ भणावे छे, साचो गुरुपथ सूणावे छे;
समभाव जळे न्हवरावे छे, एक अदभूत योगी आवे छे. ६

दुनिआना दर्द दवावे छे, दील मांहे दया दर्शावे छे;
दीन किंकर गुरुगुण गावे छे, एक अदभूत योगी आवे छे. ७

ॐ

३९

राग-खमाज

आहिर ज्ञाती जन्मेला एक योगीराजए,
आबू गीरीराजमां वसे छे योगीराजए आहिर-१

आबू गीरीवरमां फरे, अनहद आनंद वरे;
नयनोमां नीर झरे एह योगीराजए. आहिर-२

भारतमां घोष करे, मरुधरमां वास करे;
शांतीमां स्नान करे एह योगीराजए. आहिर-३

प्रभुताना द्रव्य खरे, संकटमां क्षाम्य धरे,
हींमतथी कर्म हरे एह योगीराजए आहिर-४

रायरंक एकगणे, मद मोहमान हणे;
अंतरमां प्रेम भरे एह योगीराजए. आहिर-५

अर्हम्नो नाद करे, ॐकार ध्यान धरे;
सत्यनीती मंत्रभणे एह योगीराजए. आहिर-६

प्रभुतानुं पान करे, परमातम रुप धरे;
आत्मामां ज्योत झरे एह योगीराजए. आहिर-७

साचुं साधुत्व झरे, भक्तिनां पात्र भरे;
विश्वमांय दृष्टि करे एह योगीराजए. आहिर-८

जातीनो भेद नहि, आनंद उभराय अहीं;
आश्रीतनी बांह ग्रही एह योगीराजए. आहिर-९

शांतिसूरी नाम सूणी, भव भयने दूर हणी;
किंकरवाळ नमन करे एह योगीराजने. आहिर-१०

ॐ

४०

राग-चंद्रप्रभुजी से ध्यानरे मोहे लागी लगनवा

सदगुरु वरसे ध्यानरे मोहे लागी लगनवा.

लागी लगनवा छोडी न छुटे;
जवलग घटमें प्राण रे मोहे लागी लगनवा. सदगुरु-१

माया ममतानो त्याग करीने;
धरता आतम ध्यान रे मोहे लागी लगनवा. सदगुरु-२

ओम् अहम्नुं ध्यान करीने;
पामो अमर विमान रे मोहे लागी लगनवा. सदगुरु-३

दिव्य महर्पि साचा मळ्या छे;
शांतिसूरी गुणवान रे मोहे लागी लगनवा. सदगुरु–४
तन मन धन सहु अर्पण करीने;
ध्यावो गुरुनु ध्यान रे मोहे लागी लगनवा सदगुरु–५
बाळक किंकरदास कहे छे;
उतारो भवपार रे मोहे लागी लगनवा. सदगुरु–६

ॐ

४१

राग–सुदीर शामळीया

योगीश्वरराया, भवभयदूर भगाया,
योगीश्वरराया.

भारतभूमीमा जन्म धराया,
देश मरुधरने अपनाया;
जग प्रतिपाळ कहाया, योगीश्वरराया. १

भवसमुद्रमा भ्रमण कराया,
भमता भमता सदगुरु पाया;
अतर हर्ष भराया, योगीश्वरराया. २

पूरवपुन्य पसाये पाया,
शांतिसूरी योगीश्वर राया,
दर्शन करी हरखाया, योगीश्वरराया. ३

मन वचन गुप्तीने पाळे,
क्रोध कषायो मनथी वाळे;
आतमने अजवाळे, योगीश्वरराया. ४

दिव्य गुणो अंतरमां भरीया,
आतमज्ञान तणा छो दरीया;
परमातम पद वरीया. योगीश्वरराया. ५

बाळक आ निरधार तुमारो,
गुरु विण कोई नहि आधारो;
किंकर पार उतारो, योगीश्वरराया. ६

ॐ

४२

राग-भेखरे उतारो राजा भरथरी

बोलो रे बोलोरे योगी बालुडा,
क्यां थकी आवीया आपजी;
जन्म धर्यो रे कीया देशमां,
कोण मात ने तातजी. बोलोरे-१

धन्य, धन्य, मरुधरभूमि,
मणादर धन्य, धन्यजी;
धन्य, वसुदेवी मातने,
उपन्या दीनदयाळजी. बोलोरे-२

संवत ओगणीसपीस्ताळीसे,
महाशुद पाचम दीनजी,
दिव्य प्रभाते जन्मीया,
व र्त्यो ज य ज य का र जी बोलोरे-३

आठ वरस माहे नीसर्या,
छोड्यो घर ससारजी,
श्री धर्मगुरु पाटे रह्या,
करवा जगत उद्धारजी बोलोरे-४

अर्बुदगिरीमां आवी वस्या,
सह्यां कष्ट अपारजी;
सोळ वरसे दीक्षा लीधी,
लाध्यो सयम भारजी. बोलोरे-५

गच्छ कदाग्रह छोडीने,
झाल्यो मुक्तिनो मार्गजी;
ओमुकार ध्यान आराधीने,
बन्या आप योगीराजजी बोलोरे-६

शातिसूरी तुम नाम छे,
शाती तणा दातारजी;
किं क र वा ळ नी वि न ति,
शरणे राखो दयाळजी. बोलोरे-७

४३

राग-सखी स्वप्न मदी मनमोहनमें

गुरु शांतिसूरी दर्शन करी ले,
शांती रसने उरमां भरी ले;
ए सदगुरुवरनुं ध्यान करीने,
आतम तुं उजळो करी ले. गुरु-१

जे सदगुरुवरनुं ध्यान करे,
ते भव सिंधुथी पार तरे;
कुमती कर्मोनो नाश करे,
अंतरमां अजव प्रकाश वरे. गुरु-२

शुभ शांत गुणी गंभीर अती,
ॐकार सूणी आलम नमती;
अवधूत अविनाशी पदथी,
तारे कंई आर्य अनार्य अती. गुरु-३

ॐ ह्रीँ अर्हम् ने जपवाया,
कंई नरनारीने अपनाया;
सदगुरु मारगने वतलाया,
किंकरवाळ गुरु गुण गाया. गुरु-४

४४

राग-हार हीरानो हैये मढावजो

गुरु शांतिसूरीजीने ध्यावजो,
शांतीरस उरमां सींचावजो. गुरु–१
आत्म ओजस तणा झरणा वहावजो,
अती आनंद उरमां भरावजो. गुरु–२
प्रेम पुष्प थाळ भरी हर्षे वधावजो,
सौ मोतीडाना चोक पूरावजो. गुरु–३
ॐ ह्रीँ अर्हना जापने जपावजो,
नरनारी मळी गुण गावजो. गुरु–४
आत्म कल्याण केरी भावना दीपावजो,
सौ अंतरमां ज्योती जगावजो. गुरु–५
विश्व प्रेम सागरनुं पान पीवडावजो,
समभावजळे न्हवरावजो. गुरु–६
दिव्य महर्षि गुरुवर ए मानजो,
दिव्य अंजन नयनमां करावजो. गुरु–७
सदगुरु चरणोमां शीर सौ झुकावजो,
कष्ट आवे हींमत नवी हारजो गुरु–८
किंकरबाळ केरी विनती स्वीकारजो,
गुरु दर्शनमां वहेला पधारजो. गुरु–९

४५

राग–माढ

शांती सींचनारा, सुखवरनारा, शांति प्रभो गुरुराज;
मरुधर वसनारा, दुःखहरनारा, अवधूत योगीराज. शां–१
राजराजेश्वर पद्वी पाम्या, वामणवाडजी मांय;
गामगामना संघो आव्या, हर्ष धरी गुणगायरे. शां–२
आर्यअनार्य, घणा बुझाव्या, बुझव्या राजराजन;
अर्हम्पद अधिकार सूणावी, विश्व करो पावनरे. शां–३
आतम ज्ञानतणी छे धारा, अम्रतरस–पानार;
शांत सुधारस जळ झरनारा, किंकरवाळने ताररे. शां–४

ॐ

४६

राग–महावीर तुमारी मनोहर मूर्ति जोई जोई दील हरखाय

गुरु शांतीसूरीश्वर स्वामी रे सहु वंदो हर्षथी;
वंदो हर्षथी, सहु वंदो हर्षथी. गुरु–१
गुरु शांतीनगरना वासी, मन, वच, गुप्ती छे दासी;
भय दुर्गती दूरे नासी रे सहु वंदो हर्षथी. गुरु–२
शरणांगतना छे स्वामी, नवखंडे कीर्ती जामी;
गुरु अधिक, अधिक, गुणगामी रे सहु वंदो हर्षथी. गुरु–३
नरनारी मळी गुण गावे, मोतीना चोक पुरावे;
मन वांच्छित फळने पावेरे सहु वंदो हर्षथी, गुरु–४

ॐकार मंत्र आराध्यो, दुनीआमा डंको वाग्यो;
कहे किंकर भवभय भाग्योरे सहु वंदो हर्षथी. गुरु-९

ॐ

४७

राग-गांधी तो आज हींदका प्रकृशान बन गया

योगी तु आज विश्वमे महान बन गया।
तेरा चरणमें आये वो अयशान बन गया.
तेरी धूनी जगतमें, चारो तरफ जली रही,
ए धुन धखाने वाले धुरंधर तु बन गया योगी-१
ये विश्वका कल्याणकी, वीणा तुने बजाई;
एक विश्वका महान रुपिवर तु बन गया. योगी-२
मीत्रो बना के सबको, तें मीत्रता बताया,
एक प्रेमका महान जादुगर तु बन गया योगी-३
रडता अबोल प्राणी, उन्को तुने हसाया,
भय मृत्युसे उगारनार ईष्ट बन गया योगी-४
दुनीयामें घटा तेरा, घर, घर, बजा रहाहे,
आलममें एक ईश्वरी अवतार बन गया. योगी-५
जातीका भेद तजके, सब आत्मसे पीछाण्या,
आ वाळदास किंकर एक शान बन गया. योगी-६

ॐ

४८

राग–उपरनो

गुरु शांतिसूरीश्वरजीने कोटीवार वंदना,
मरुधरनाए मुनींद्रने कोटीवार वंदना.
अध्यात्म, योगबळसे, आलमको तें जगाया;
मन, वचन, शुद्ध हृदये सहु करे वंदना. गुरु–१
बचपणमे योगीश्वरजी, जंगलतमे फीराया;
धन्य, धन्य, तोरीजननी सहु करे वंदना. गुरु–२
ॐ मंत्रसाधी, कंई रायने तें तार्या;
धन्य, आहिर कुळभानु सहु करे वंदना. गुरु–३
महावीर पंथचाली, महावीर तुं गवायो;
दया धर्म धुरंधुर तुं सहु करे वंदना. गुरु–४
विश्व वंदनीय साधु, कळीयुगमें कहाया;
चरणोमे शीर नमावी, दास करे वंदना. गुरु–५

ॐ

४९

राग–शासनदेव दया कर हम पर

हे! गुरुदेव दयाकर हमपर,
शेवकजाणी बचावेंगा;

वाळको करे येही प्रार्थना,
भव समुद्रसे तारेंगा हे ! गुरु-१
विषय, कषायकीनींद भरेला,
उनको आप जगावेंगा;
काम क्रोधसे मुक्त करीने,
शांतीका पाठ पढावेंगा. हे ! गुरु-२
पंच समीती, गुप्ती, आराधी,
प्रेमका पान करावेंगा,
आम अर्हंपुना ध्यानने धारी,
कर्मोंकु दूर हठावेंगा. हे ! गुरु-३
विश्वप्रेमनी ज्योत जगावी,
आनंद आनंद पावेंगा,
फिकरचाळ कहे गुरुश्रीने,
मुक्तिका मार्ग दीखावेंगा हे ! गुरु-४

ॐ

५०

राग-चालो गीरी सिद्धाचळ जईए
साचा सद्गुरुजी मळीया,
बंधन कर्म तणा चळीया, साचा सद्गुरुजी मळीया १
आतम ज्ञान तणी न्यारा, आगम गुण अती सारा,
अंतरध्यानमा रमनारा, साचा सद्गुरुजी मळीया २

शांत सुधारस पानारा, सात्वीक बुद्धि धरनारा;
साचो पंथ सूचवनारा, साचा सदगुरुजी मळीया. ३
समद्रष्टी तृष्णा त्यागी, सुमती सती केरा रागी;
सत्य सूणी आलम जागी, साचा सदगुरुजी मळीया. ४
अर्बुद गीरीवरमां आया, आनंद आनंद, उभराया;
शांती सरोवरमां नाह्या, साचा सदगुरुजी मळीया. ५
शांतिसूरीश्वर गुरु राया, आतम ज्ञानी कहेवाया;
किंकरवाळे गुण गाया, साचा सदगुरुजी मळीया. ६

५१

राग प्रभुजी जावुं पालीताणा शहेर के मन हरखे घणुं रे लोल

वंदू शांतिसूरी गुरुराय,
अनोपम नामने रे लोल;
जेहने भजतां छुटे फंद,
तरे भव पारने रे लोल. वंदू-१

जे हरी अक्षर ब्रह्म आधार,
पार कोई नवी लहे रे लोल;
जेने शेष सहस्त्र मुख गाय,
नीगम नेती कहुं रे लोल. वंदू-२

वर्णवु सुंदर रुप अनुप,
जुगल चरणे नमुं रे लोल;

म्हाला तुज चरण कमळनु ध्यान,
धरु अती हेतमा रे लोल. वद्–३

गुरु अती कोमळ अरुण रसाळ,
चोरे छे चीत चालमा रे लोल;

किंकरवाळ नमे कर जोडी,
हृदय माहे राखजो रे लोल. वद्–४

५२

राग–गरवानो

जागो, जागो रे सौ जागो, जागो,
शांतासूरी भेटवाने आज सौ जागो, जागो
अर्बुदगीरीमा आवी वस्या छे,
विषय, कषाय, नींद त्यागो त्यागो रे सौ जागो, जागो. १
आत्म मस्तीमा जे खीली रह्या छे,
राग द्वेष रीपु भय भागो भागो रे सौ जागो, जागो २
मन वच कायाने वश करीने,
आत्म कल्याण हवे साधो साधो रे सौ जागो, जागो. ३
किंकरवाळ करे गुरुश्रीने विनती,
भक्ति नीतिमा मने राखो राखो रे सौ जागो, जागो. ४

५२

राग-वैष्णव जन तो तेने कहीए

श्रावक जन तो तेने कहीए,
पर पीडा जे जाणे रे;
परदुःख माटे प्राण समर्पे,
मद मनमां नवी आणे रे. श्रावक-१

पर धनने पत्थर सम पेखे,
पर पोता सम देखे रे;
तुज मुज केरो भेद तजीने,
नीज सम प्राणी पेखेरे. श्रावक-२

सम द्रष्टीनुं सींचन करीने,
परने शांती पमाडे रे;
एह जीवननो ध्येयगणीने,
अंतर ज्योत जगाडे रे. श्रावक-३

जन शेवा ते नीजनी शेवा,
एह भींतरमां ध्यावे रे;
पर नींदा हृदये नवी आणे,
नीज दोषो अपनावे रे. श्रावक-४

पर स्त्रीने माता सम देखे,
विषय कषाय निवारे रे;

बाळक किंकरदास कहे छे,
भक्ति नीती उरधारे रे. श्रावक–५

ॐ
५४
राग-वदो वदो भविक जनज्ञानीने

वदो, वदो, गुरु श्री ज्ञानीने,
श्री धर्मविजयजी ध्यानीने. वदो–१
माडोलीमा प्रभु गुण गाया,
अतरमा आनद उभराया,
अवधूत, योगी, पद धारीने. वदो–२
जेणे संयम शुद्धपणे पाळयुं,
कुळ, मात, पीतानु अजवाळयुं;
दया धर्म तणा अधिकारीने वदो–३
असख्य पशु उपकार कर्या,
महाघोर अभिग्रहव्रत उच्चर्या;
नवकार, महा, मत्रधारीने वदो–४
रात दीन प्रभुनु ध्यान धर्युं,
अमृत अमीरसनु पान कर्युं,
दीन दुःखभजन दातारीने. वदो–५
श्रावण वद छठ दीन स्वर्ग थया,
नयनो अश्रु चोधार वह्या;
ए दिव्य, गुणी हीतकारीने. वदो–६

सहु शरीर बळीने भष्म थयुं,
उपकरण उपरनुं साफ रह्युं;
ए ईश्वर रुप अवतारीने. वंदो–७

अग्नि प्रगटी कुदरत बळथी,
ध्वज पालखी ज्योती झगमगती,
किंकरनी अर्ज स्वीकारीने. वंदो–८

ॐ

५५

राग–रघुपती राम हृदयमां रहेजो रे

गुरुजी धर्म विजयजी ध्यावो रे,
दया धर्मने जेणे दीपाव्यो. गुरु–१

मांडोली तणा ए वासीरे,
मरुधरने बनावी काशीरे;
पुण्यवंत भूमिने प्रकाशी. गुरु–२

अरीहंत तणा अधिकारी रे,
मुनी पंच महाव्रत धारी रे;
पाम्या शीव सुखनी बलीहारी. गुरु–३

महा आतम ज्ञान आराध्युं रे,
नवकार तणुं फळ चाख्युं रे;
साधी साधना सर्व प्रकाश्युं. गुरु–४

नवकारनु नाव चलाव्यु रे,
धन्य, धन्य, जीवन दीपाव्यु रे,
बाळकिंकर ने ए जणायु. गुरु-५

ॐ

५६

शीखरीणी छंद

अहो ! दीव्य गुरुश्री, शीष नमावु हर्ष धरीने,
पडु पाय तुमारा, आश अर्पो प्रेम करीने. १
अरेरे ! हु डूब्यो, सदगुरुनु भान भूलीने,
ग्रहुं आजे शरणु, स्हाय करजो बाळ गणीने. २
पडया छे जे जगमा, मूर्ख जीवडा अध थईने,
नथी ए कई समज्या, अतर विषे ख्याल दईने ३
भम्या भवसागरमा, मोह, मदिरा, पान पीने,
क्षमा रस नव पीधो, जीवन घटमा धीर थईने ४
नम्या नहि सदगुरुने, मदअरी, माया तजीने,
गुरुवीण कुणतारे, मूर्ख जनने हस्त लईने ५
अरेरे ! ओ ! गुरुश्री, अम गुन्हाओ माफ करजो,
नमे छे तुम किंकर, बाळना सहु दुःख हरजो. ६

ॐ

५७

राग-वलीहारी वलीहारी वलीहारी

ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी,
गुरुशांतिसूरी वलीहारी;
आबूना वासी शरणमां राखजोजी. ब्रह्मचारी-१

आबू गीरीवरमां आया, आदी जीन दर्शन पाया,
मूर्ति शोभे छे मनोहारी, गुरुशांतिसूरी वलीहारी;
आबूना वासी शरणमां राखजोजी. ब्रह्मचारी-२

दूर देशांतरथी आया, वंदन करीने हरखाया,
अधिक, अधिक, गुणधारी, गुरुशांतिसूरी वलीहारी;
आबूना वासी शरणमां राखजोजी. ब्रह्मचारी-३

त्रण, रतन आपो, दीलनां सहु दुःखडां कापो,
समकीत केरा अधिकारी, गुरुशांतिसूरी वलीहारी;
आबूना वासी शरणमां राखजोजी. ब्रह्मचारी-४

डूबता प्राणीने तारो, भवसागर पार उतारो,
अंतरथी मूकजो ना विसारी, गुरुशांतिसूरी वलीहारी;
आबूना वासी शरणमां राखजोजी. ब्रह्मचारी-५

ॐकार पदने ध्यावो, अर्हमनो जाप जपावो,
जंगल, पहाड, गुफाधारी, गुरुशांतिसूरी वलीहारी;
आबूना वासी शरणमां राखजोजी. ब्रह्मचारी-६

भक्त मंडळने तारो, अरजी आ आप स्वीकारो,
किंकरवाळने उगारी, गुरुशांतिसूरी बलीहारी;
आबूना वासी शरणमा राखजोजी. ब्रह्मचारी-७

ॐ

५८

राग-मनमंदिर आवोरे कहु एक वातलडी

गुरुशांतिसूरीश्वररे, दया दीलमांहे धरो;
तुमे दिव्य महर्षिरे, करुणा दृष्टि करो गुरु-१

दया धर्मना धोरीरे, अमृतनु पान करो;
मोह मिथ्या मारीरे, अलखमा वास करो. गुरु-२

क्रोधमान निवारीरे, कुमतीनो त्याग करो;
अज्ञानी उवेलाने, गुरु गुणवान करो. गुरु-३

कर्मो सहु कापीने, अर्हमनु ध्यान करो,
ॐकार आराधीने, अजव आनंद वरो. गुरु-४

क्षमा धैर्य ने धारीरे, सेवकने स्हाय करो;
तुम किंकर विनवेरे, प्रभो उद्धार करो गुरु-५

ॐ

५९

राग-शार्दूलविक्रडीत छंद

शांतिसूरी गुरुराय विश्वयोगी कष्टो सदा छेदजो,
साचा विश्वमर्दी रुपिवर प्रभो बुद्धि महा अर्पजो,

प्राणांते हिंमत कदी नव तजुं संतोष सींचावजो,
अर्पो आशीष प्रेमथी सुखतणी शांती अति प्रेरजो. १
भक्ति रस भरपुर अंतर भरी आनंद उभरावजो,
मंगलमय वाणी वदी मन विषे माधुर्यता पूरजो;
नयनोना तेजस्वी चक्रवळथी अंधाकृति टाळजो,
अर्पो आशीष प्रेमथी सुखतणी शांती अति प्रेरजो. २
स्नेही सज्जन सर्व सुखमयी बनी भ्रांती दूरे भागजो,
साचा प्रेमतणा सरोवर महीं सौन्दर्य उभरावजो;
सृष्टीना शृंगार आभूषणथी दुर्गंधता टाळजो,
अर्पो आशीष प्रेमथी सुखतणी शांती अति प्रेरजो. ३
भारतना भगीरथ विभुश्वर रुषि आंत्रीत्व रेडावजो,
भक्तोने भवदुःखथी दूर करी दाळीद्रता हारजो;
बाळक किंकरदासना जीवनमां सत्यार्थता पूरजो,
अर्पो आशीष प्रेमथी सुखतणी शांती अति प्रेरजो. ४

ॐ

६०

राग-राधाकृष्णा विना बीजुं बोलमा

झीलजो, झीलजो, झीलजोरे,
सहु अमृत नीरमां झीलजो.
नरनारी सहु हर्ष मळीने,
कमळ खीले तेम खीलजोरे,
सहु अमृत नीरमां झीलजो. झीलजो-१

विश्वप्रेम केरो ज्या सागर भर्यो छे,
स्नान करी अतर पखाळजो रे,
सहु अमृत नीरमा झीलजो झीलजो–२

आत्म आनद केरा झरणा वह्या छे,
तेह पी तृपाने छीपावजो रे,
सहु अमृत नीरमा झीलजो. झीलजो–३

शाती सागरमा स्नान करीने,
ज्ञान सागरमा म्हालजो रे,
सहु अमृत नीरमा झीलजो. झीलजो–४

भव भय दुःखथी दूर थवाने,
ॐकार ज्योति जगावजो रे,
सहु अमृत नीरमा झीलजो. झीलजो–५

शातिसूरीश्वर साचा मळ्या छे,
मस्त फकिर ए जाणजो रे,
सहु अमृत नीरमा झीलजो. झीलजो–६

शातिचरणबाळ किंकर कहे छे,
जय जयकार वर्तावजो रे,
सहु अमृत नीरमा झीलजो झीलजो–७

ॐ

६१

राग माढ

गुरुराज जगत शीरताज, भव डूबतुं तारो झाझ;
कहावो अवधूत योगीराज,
दुःखीनी भीड भागो महाराज.

आतम कमळ खीली रह्युं, मुखडुं चंद्र समान;
भारतमां भडवीर तुं, ब्रह्मचारी बळवान. गुरु-१

धन्य आहिर अवतारने, जनम्या जग कीरतार;
सूत्र अहिंसा आदर्युं, पर पीडा हरनार. गुरु-२

मरुधर तारा आंगणे, उपन्यो पुनम चंद;
वसंतपंचमी जन्मीयो, खील्यो जेम वसंत. गुरु-३

ज्ञानी ध्यानी संयमी, गुरुवरमां गंभीर;
आतम पंथ दीपावीयो, साधुमां शूरवीर. गुरु-४

विश्वेश्वर भगीरथ रुषि, दीन दातार कहाय;
भूपती शीर नमावता, सूर्य समा झळकाय. गुरु-५

भक्तजनोनी विनति, अंतर हर्ष अपार;
बाळक किंकरदासने, उतारो भवपार. गुरु-७

६२

राग-माढ

मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो
तुज विना मम जीवनमा, नथी कोई जगमाय,
प्राण प्रभु छो विश्वना, करजो म्हारी स्हाय,
मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो
मीरा बनी सतयुगमा, भक्ति अपरपार,
गुरु गिरधरना नामथी, विष अमी थानार;
मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.
कळीयुग भासे कारमो, विषम समय कहेवाय,
प्रपचना पासा महीं, भक्ति ज़ुज वहाय;
मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.
कर्म तणी आधी चढी, शाम घटा देखाय,
कीकीआरी दुःखनी थई, नयन नीर उभराय;
मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.
मृत्यु कष्टथी ना डरे, रोम रोम खरडाय,
अन्न वस्त्र विण टळवळे, हाम कदी न तजाय;
मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.
हरिष्यामी सूनो शीखे, गुरुगुरु जाप जपाय,
पळपळ एमा मस्त रहे, ए गुरु भक्त कहाय;
मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

अहो! प्रभु हुं शुं करुं, विश्व चरण रज बाळ,
शांति प्रभो शांति प्रभो, मोंघी मननी माळ;
मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

मद माया ने मोहमां, जीवन कदी न फसाय;
लघु पाठ नित्ये पढु, विश्व प्रेम वरसाय,
मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

निराधार छुं नाथ हुं, अधम अने अज्ञान,
किंकर अर्ज स्वीकारजो, दीनबंधु भगवान;
मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

ॐ

६३

राग-देश

नाचे रसभीनो अलबेलो अदभूत तानमां रे;
अरीहंत ध्यानमां रे. नाचे.

नयनोमां ए नाच करे छे, नाथ निरंजनने जगवे छे;
नीरखी नूर झळके छे एना ज्ञानमां रे. नाचे-१

पंखी वनोवन उडी फरे छे, एह जंगलमां वास करे छे;
प्रेम पुष्पनी माळ वरे छे ध्यानमां रे. नाचे-२

दुर्गंधताने दूर करे छे, शांती थकी सहु कर्म हरे छे;
क्षमा धैर्यने धारी रहे गुलतानमांरे. नाचे-३

विश्वप्रेमनु जळ पीवडावे, आनद, आनद उरमा ध्यावे;
वाघ सिंह पशु शीर नमावे सानमारे. नाचे-४
अनहद तान मचावे वनमा, अर्हम्ने प्रगटावे तनमा,
अवधूत योगीश्वर पदवीना पानमारे. नाचे-५
अर्बुद गीरीवरमा विचरे छे, शातिसूरीश्वर नाम धरे छे,
किंकरवाळ नमे छे एना चर्णमा रे. नाचे-६

६४

राग-जीनराजा ताजामल्ली वीराजे भोयणी गाममें

योगीश्वर राया आप विराजो मरुदेशमा.

देश देशना भक्तो आवे, हर्षधरी गुण गावे,
अर्हम्पद अधिकार सूणीने, मनवाछीत फळ पावेरे यो-१
आर्यअनार्य गुणीजन आवे, अर्हम्थी अपनावो,
विश्व प्रेमना परम प्रकाशे, अदभूत वळ वतलावोरे. यो-२
अनत जीव प्रतिपाळ कहावो, योग लब्धी पद पावो,
एम अनता प्राणी रीझवी, अतर ज्योत जगावोरे यो-३
भक्ति नीतीनो पाठ पढावो, सदगुरु पथ सूणावो,
अभयदान पशुओने अर्पी, धर्म ध्वजा फरकावोरे. यो-४
सवत ओगणीस साल नेव्यासी, चैत्र वदी त्रीज पाया,
परम कृपाळु शातिसूरीना, किंकरे गुरुगुण गायारे. यो-५

६५

राग–आशावरी

नमुं श्री शांतिगुरु चरणे, दिव्य रुषिवरने. नमु–१

पंचमआरो महादुःखीआरो, विषम समय कहेवायो;
वीसमी सदीनी घोर घटामां, साचो तुं भजवायो. नमु २

सदगुरु मळवा स्हेल न समजो, अंतर धून धखावे;
मृत्यु तणी परवा न करे तो, गुरुगुणने ए पावे. नमु ३

मायाने ममतानी खातर, मूढ जनो कंई मरता;
मोहमतीमां भान भूलीने, आतम हीरने हणाता. नमु ४

परम कृपाळु परम प्रतापी, परम पुरुष कहेवाया;
पर आतम उपकारी गुरुश्री, घरघर नाम गवाया. नमु ५

विश्वप्रेमनी अजब विभूति, घटघटमां पथराया;
परम कृपाळु गुरुवर साचा, किंकरे गुरु गुण गाया. नमु ६

६६

राग–धरमी लोकोनां टोळां ऊतर्यां

वीरा दर्शन करवाने वहेला आवजो,
आबू गीरीमां इंद्रपुरी देखाय रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. १

अजब ! ज्योती जागी छे गुरु राजमा,
चादलीओ त्या पूर्ण पणे चळकाय रे;
शातिसूरीना दर्शन करवाने वहेला आवजो २

जग, जगना, मानव इहा आवता,
डको वाग्यो देश मही कहेवाय रे;
शातिसूरीना दर्शन करवाने वहेला आवजो ३

धन्य, धन्य, भारत म्हारा आगणे,
मरुभूमीना पुन्य अति कहेवाय रे;
शातिसूरीना दर्शन करवाने वहेला आवजो. ४

सोळ वरसे सयम एणे आदर्युं;
दुनिआदारी छोडी दीधी एणीवार रे;
शातिसूरीना दर्शन करवाने वहेला आवजो. ६

नयन नीरखी नरनार अति म्हालता,
अमृत केरो कूप फळयो छे आज रे;
शातिसूरीना दर्शन करवाने वहेला आवजो. ६

अगम ज्ञानी गुरुराज सहु वदता,
आनद, आनद, अतरमा उभरायरे,
शातिसूरीना दर्शन करवाने वहेला आवजो. ७

गुरु झघमघता सूर्य समा दीसता,
भाल मही शशी तेज तणो नहि पार रे;
शातिसूरीना दर्शन करवाने वहेला आवजो. ८

गुरुवर छे साची विभूती विश्वनी,
जनम्या छे ए विश्व जगावण हार रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. ९

धन्य, धन्य, देवी मरुधर देशनी,
दिव्य विभूति भेट धरी जगमांय रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. १०

आबू शिखरे आसन झमाव्युं पहाडमां,
चोथो आरो वर्त्यो छे देखाय रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. ११

कहे किंकरवाळ सहु सुणजो,
उतरीयो ए ईश्वरनो अवतार रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. १२

ॐ

६७

राग भीमपलासी-त्रिताल

(भोगीलाल पानाचंद)

: १ :

ए जगमांही अदभूत योगी,
एनी ज्योति झघमग झघमघती,
ए त्यागी तपस्वी वैरागी,
एनी आंखलडी करुणा भीनी....१

एना वचन सुधा रसथी भरीया,
जनगणने उपकारे हरीया,
एना नयन अमीरसथी भरीया,
पापीना पाप जलन करीया २

एने भेद नथी उच के नीचनो,
ए रसियो छे आत्मिक जननो,
एनो मार्ग अनुपम न्यारो छे,
आत्मिक जन एने प्यारो छे ३

ए जगनो साचो उपकारी,
एनी कीर्ति करे आलम सारी,
ए मस्त सदा आत्मिक रंगे,
नहि परवा एने जग संगे ४

अर्बुदगिरि शिखरे विराजे छे,
शांतिसूरि नामे गाजे छे,
ओ! जगमांहे अद्‌भूत योगी!,
करे वंदन तुज बालक भोगी...५

ॐ

६८

राग मालकस-ताल त्रिताल

: २ :

मोरी लागी लगन, गुरुकीर्तनकी टेक०

गुरुकीर्तन बीन कुछ नहिं भावे,
आत्मिक ज्योत प्रकाशनकी....मोरी० १
भवसागर अंधेरा घहेरा,
गुरु दीपकसे तरननकी....मोरी० २
भोगीदीपक गुरु शांतिसूरीश्वर,
व्याकुलता तुज दर्शनकी....मोरी० ३

ॐ

६९

राग मिश्र भीमपलासी–त्रिताल

: ३ :

ए दीन दयाल कृपा सींधो,
हरजन के तारनहार गुरु;
मझधारमें आय फसी नैया,
करो भवसागरसे पार. गुरु....१
जळ अपार उलटी धार वहे,
विपरीत पवन दिन रजनी चले;
जग लागे फिरता जीव कांपे,
तुम बिन करे कोन सहाय गुरु....२
चहु ओर अंधेरा न दीश सूझे,
मोरी नाव भमरसे केसे बचे;

तोरी योगकी ज्योत दया जो करे,
मिळ जाए ओर किनार गुरु ३
पर्वतको जो चाहो तो राई करो,
ओर राईको तुम पर्वत करदो;
कोई काम कठिनहि नहि तुमको,
हो अगम अपार जगतमे गुरु ४
विपत विदारक सब जग के,
ओर अंतर्यामी हरजन के;
ये भोगीकी अरज हृदय धरके,
करो भक्तका बेडा पार गुरु ५

ॐ

७०

राग भरवी-धुमाळी

: ४ :

पायो पायो में हे गुरुवरजी,
तुम दर्शन सुखकार टेक०
देख लीया अब जगहि सारा,
मिला न को आधार;
करुणासागर अब मत छोडो,
मेरे तुम आधार पायो० १

भव अंधेरा सागर घहेरा,
नैया पडी मझधार;
तुम विन नाथ कोन निर्बळकी,
नैया खेवनहार.... पायो० २
शुभ आशिष सब जगको देकर,
करो भला सब जगका;
भोगी हम तुम गुन गावेंगे,
शांतिसूरी दातार.... पायो० ३

ॐ

७१

राग काफी ताल दीपचंदी

: ५ :

आंखलडी मनोहारी, दिव्य महर्षि तमारी....टेक०
दर्शन काजे आजे हुं आव्यो,
मुखडुं दीठुं मनोहारी;
भाल विशाळ निरंतर शोभे,
चांदल चमके गगनरी....१
राग द्वेष दिसे न लगारे,
मोह माया दुःखहारी;

अनुपम मार्ग अचल तें साध्यो,
भटकु हुं भवमा भिखारी २
अंश दिसेना तमारो मुजमा,
कीर्ति करुं शुं तमारी,
चरणकमलनी सेवा चाहु,
शांतिविजय दुःखहारी ३
सद्गुरु मितम मेरे दिल वसीयो,
मितम विण जग खारी;
भोगी भ्रमर दिल वास तुमारी,
रहो अविचळ सुखकारी ४

ॐ

७२

राग-प्रीतमजी तेडां मोकले

गुरु शांतिसूरीश्वर, ज्ञानी धुरंधर, डंको थयो वधा विश्वमा. टेक
देशदेशोथी भक्तजनो आवे, एना दर्शनथी आनंद पावे;
अजब अंजन नयनमां लगावे गुरु श्री, डंको थयो वधा विश्वमा. १
धन्य भारतना भाग्य खीलाया, मोह मायाने माननें हणाया,
नयन बाणोथी क्रोधने हराया गुरुश्री, डंको थयो वधा विश्वमा २
एने कळीयुगमां ज्योती झगाया, मरुधरना मुनींद्र कहेवाया;
वचन सिद्धीना जळने वहाया गुरुश्री, डंको थयो वधा विश्वमा. ३

एनी आशीषथी रोग दूर थावे, काळ फांसी फसेला बचावे;
परम ज्ञानीने ध्यानी कहावे गुरुश्री, डंको थयो बधा विश्वमां. ४

कदी जातीनो भेद नहि लावे, रंक राजाने एकरुप ध्यावे;
भक्ति नीतीना पंथे चढावे गुरुश्री, डंको थयो बधा विश्वमां. ५

ध्यान ॐकार मंत्रनुं जपावे, कंई पतितोने पावन बनावे;
दास किंकर गुरु गुण गावे गुरुश्री, डंको थयो बधा विश्वमां. ६

ॐ

७३

राग-कल्याण

सकल जगतना तात गुरुश्री, नमीए तमने लीन थईने.
हम अपराध क्षमारे गुरु करजो, रहेम नजर अम उपर वसजो.
दोषो हमारा सहु रे दूर टळजो, भक्ति नीतीमां लीन मुने करजो.
वैर विरोधो सहु रे दूर टळजो, प्रेम फुवारो हृदय मांहे उडजो.
आतम मस्तिमां लय मुने करजो, ध्यान थकी कर्मो सहु हरजो.
किंकर पर करुणा रे गुरु करजो, भक्ति नीतीनी आशीष मुने वरजा.

ॐ

७४

राग-वाजां वाग्यां रे वाजां वागीयां

वाजां वाग्यां सोहम वाजां वागीयां;
ए तो वाग्यां मरुधर मांय, सोहम वाजां वागीयां. १

एनो नाद थयो वधा विश्वमा,
वाग्या शातिसूरी दरबार, सोहम वाजा वागीया २

प्रभो ! शातिसूरीश्वर भेटीया;
भेट्या ज्ञानी गुरु महाराज, सोहम वाजा वागीया. ३

अमे थाळ भरी प्रेम पुष्पनो;
हरपे वाद्या गुरुराज, सोहम वाजा वागीया. ४

सहु भक्तो अही भेगा थया;
कई आनद उरमा न माय, सोहम वाजा वागीया ५

गुरु साचो अनुपम दीवडो,
आखु विश्व जगावणहार, सोहम वाजा वागीया ६

जाणे इद्र अति गुणी उतर्यो;
धन्य, धन्य, आहिर अवतार, सोहम वाजा वागीया. ७

योगी अवधूत साधी साधना;
साधी तारे घणा नरनार, सोहम वाजा वागीया. ८

दिव्य ज्योत नयन चळकी रह्या,
शीव सुदरीना वरनार, सोहम वाजा वागीया. ९

सूणी किंकरवाळ नमन करे;
गुरु भव भयना हरनार, सोहम वाजा वागीया. १०

ॐ

७५

छंद-भुजंगी

कृपानाथ साचा वसे दीन स्वामी,
पडो पाय सहु चर्णमां शीर नामी;
मळे पुण्यना योगथी ईष्ट जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. १

रुपिवर मुनीवर थया पूर्वमां जे,
पूजाया प्रभोरुप थई विश्वमां ते;
दीसे एह सर्वे तणा रुप जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. २

भयानक, गीरीवन, विषे ए फरे छे,
निरंतर, धूनी ध्याननी त्यां जळे छे;
रहे आत्म ध्यानी सदामस्त जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. ३

तजी मृत्यु भयने सदा मोज माणे,
निराशा कदापी नहि उर आणे;
वन्या साधको पूर्वमां एह जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. ४

घूमे पहाड आबु गीरीवर गजावे,
निरंतर, धूनी ॐनी ए धखावे;

थया मोक्ष गामी जीवो एह जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा ५

अति गुण एना लखे अंत नावे,
पुरा पंडितो पण नहि पार पावे;
निहाळो सदा ध्यानी अवधूत जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. ६

सदा विश्व कल्याणना भाव भावे,
कदापी नहि उरमा भेद लावे,
रहे मस्त आनंद घन रूप जेवा,
दीठो आज शान्तिसूरीराज एवा. ७

अभय दान आपी पशुने उगारे,
दया धर्मना मंत्रथी जीव तारे,
रीझे राजवीरो करे चर्ण सेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. ८

कहे दास किंकर पुरा भाग्य जेना,
हशे तेह नर पामशे गुण एना;
दीसे दिव्य दर्शन रुपि ब्रह्म जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. ९

७६

राग ओधवजी संदेशो कहेजो म्हारा श्यामने

आतम तारक गुरुवर श्री साचा मळया,
परम प्रतापी पुरण कृपा दातार जो;
पूरव पुन्य पसाये साचा सांपडया,
मस्तक मूक्युं शांतिचरणमां नाथजो. आतम १

धन्य मरुधर देश मणादर गामने,
धन्य आहिर कुळ उपन्या तारणहारजो;
अवतारी नर कहेवाया आ विश्वमां,
नाथ नीरंजन जीवदया प्रतिपाळजो. आतम २

किशोरवयमां गृहस्थाश्रमथी नीसर्या,
सोळ वरसमां साधुपद लेवायजो;
मार्ग वर्यो अंतरमां आतम ज्ञाननो,
परम पुरुषनो पंथ लीधो गुरुराजजो. आतम ३

ध्यान अरे साध्युं तुं वामणवाडमां,
बारी उपरथी पटकाया ततकाळजो;
मस्तक तूटयुं धारा छुटी लोहीनी,
तोय तजी नहि धीर गुरु गुणवानजो. आतम ४

गाम अजारी मारकुंडेश्वरमां रह्या,
सरस्वती देवीनी पुरण स्हायजो;

कवीवर्य पडीतो विद्या साधता,
साधक जनना सफळ थया त्या काजजो. आतम ५

परआतम उपकारी सद्गुरु वर प्रभो,
अमर कर्युं छे मातपीतानुं नामजो,
तरणतारण दुःखनीवारण दोहीला,
दीनवधु दीन दानेश्वर दातारजो. आतम ६

पशु पोकार सूणीने जगवे राजवी,
दया धर्मथी बुझवे हींसक लोकजो,
आत्मने रीझवा साध्यो ॐने,
रोमे रोममा अर्हमूनो जय नादजो. आतम ७

अभयदान अर्पे अती मुगा प्राणीने,
विजय अहींसा ध्वज फरकावे विश्वजो,
विश्व प्रेमथी पावन करता सर्वने,
आशीष आपे भक्ति नीती वळ वाधजो. आतम ८

एकीका वीचरता वळी शमशानमा,
वाघ सिंह पशु सर्व निहाळे एक जो,
ध्यान निरंतर निर्भय थईने साधता,
मळीयो जाणे परम मित्रनो योगजो. आतम ९

निर्मोहक अवीनाशी रुपमा विचरे,
अकळ अरुपी ब्रह्मदशा देखायजो,

मूढमती जन कंई नहि भासे अंतरे,
नीरखवुं ए परम पुन्यनो योगजो. आतम १०

बार वरस तप घोर परीग्रह आकरा,
अवधि कष्टो सहन कर्यां गुरुराजजो;
माया ने ममताने बाळ्यां देहथी,
ध्यान बळेथी करीयां सर्वे खाखजो. आतम ११

घोर विकट वन वृक्षोने गीरीवर फर्या,
रोग शोग सहु भाग्यां छे ओ ! नाथजो;
परमातम पद परम प्रभुमां लय थया,
रात दीवस ने पळ पळ चाले ध्यानजो. आतम १२

परम पद प्राप्तिनी फरता शोधमां,
निश्चय करीयो मुक्ति तणो नीरधारजो;
चंद्र ललाटे चळक्यो छे महा तेजथी,
दर्शन करतां नासे सघळां पापजो. आतम १३

एक अनेक अनेरा रूपमां भासता,
समय समयमां भीन्न रुपे देखायजो;
अदभूत बळनी ज्योति जागी आत्ममां,
आध्यात्मीकनो पाम्या साचो योगजो. आतम १४

एह तत्वनी भीक्षा हुं मागी रह्यो,
गजा वगरनो केम उठावुं भारजो;

परम कृपा जो प्रगटे अंतर आपनी,
तो हु पामु आपतणो संयोग जो आतम १५

भव भ्रमणानी खाई मही हु आथडयो,
आप विना प्रभु कोण बतावे पथजो;
शांत सुधा नीर नीत्य मुखे वहेतु रहे,
स्नान करी हुं निर्मळ करतो देहजो. आतम १६

भान भूली भटकायो जगमा चोदीशे,
अनेक भवना पुन्ये पाम्यो योगजो,
तोपण दोषीत बाळक छु प्रभु आपनो,
क्षाम्य करो जो! अल्बेला आधारजो आतम १७

बाळक छु नीरधार गुरुजी आपनो,
दया दृपावी नाथ करो भव पारजो;
विरहतणा दु.खथी हु अश्रु सारतो,
हवे नथी स्हेवातो आप वियोगजो. आतम १८

अभय अगोचरशास्वत सुखनी शोधमा,
भमता भमता आव्यो छु ओ! नाथजो,
करगरतो विनवे छे बाळक आपनो,
दीनदातारी दया दृपावो नाथ जो. आतम १९

मूर्ति में स्थापी अंतरमा आपनी,
आप विना नहि भासु तारणहार जो,

रटन करुं हुं निशदीन घटमां आपनुं,
शांतिसूरीश्वर साचो छे आधार जो. २०

परम कृपाळु, परम दयाळु सांभळो,
अनाथ जनने नोंधाराना तात जो;
दीन दुःखभंजन विनती सूणजो माहरी,
किंकर वाळने भवसागरथी तारजो. २१

ॐ

७७

गुरुपूर्णिमा प्रसंगे

राग-गझल

अषाडी पूर्णिमा आजे, गुरुदर्शन तणा काजे;
मूको मस्तक कृपासिंधु, प्रभो! शांति गुरुवरजी. १
नबीरा राजवी आवो, अति आनंद उलटावो;
गुरुपद अंतरे ध्यावो, प्रभो! शांति गुरुवरजी. २
पधारो सर्व भ्राताओ, न जाणो भेद अंतरमां;
विभूति विश्वनी साची, प्रभो! शांति गुरुवरजी. ३
गुरुने मानवावाळा, कदापि नव भूले भाई;
निशानी मुक्तिनी साची, प्रभो! शांति गुरुवरजी. ४
अजब मस्ति खीली आजे, अखंडानंद वर्ते छे;
धूनी ॐकारनी जागी, प्रभो! शांति गुरुवरजी. ५

दिपक आजे झग्यो एनो, अरे! घर घर विषे भाई,
झळकती विश्वमा ज्योती, प्रभो! शांति गुरुवरजी. ६
दिपावी ज्ञात आहिरनी, पितानुं कुळ तार्युं छे;
मरुधरना महायोगी, प्रभो! शांति गुरुवरजी. ७
कमळ करुणा खीलाव्युं छे, भरी छे वास अंतरमां;
बगीचो पुष्पनो साचो, प्रभो! शांति गुरुवरजी ८
वळेलो कर्मथी मानव, पूकारे त्राय भीतरथी;
शीतळ छाया अहो म्हारी, प्रभो! शांति गुरुवरजी. ९
तृषातुरने मळे शांती, छीपे छे प्यास अंतरनी;
दुःखीनो आशरो साचो, प्रभो! शांति गुरुवरजी. १०
वहे मुखथी सदा अमृत, करे संतुष्ट आत्मने;
निहाळे विश्व समभावे, प्रभो! शांति गुरुवरजी. ११
जगतनी चोतरफ जोता, घटा घनघोर भासे छे;
नथी म्हारा विना रस्तो, प्रभो! शांति गुरुवरजी १२
दयाकर! ओ दयासिंधु, शरण म्हारु हवे साचु,
स्वीकारो अर्ज किंकरनी, प्रभो! शांति गुरुवरजी. १३

ॐ
७८

जन्म जयंति

राग-गुणवंती गुजरात अमारी गुणवंती गुजरात

आज! थयो उल्लास प्रभाते जयजयकार गवाय!
प्रभो! ए दिव्यपुरुष सरजाय! १

वसंतऋतु दवली देखाय, अति महातमय एनुं कहेवाय;
वसंतनी अदभूत घटनाथी पार कदी न पमाय!
ऋतुमां श्रेष्ठ वसंत कहाय! २

वसंत ऋतुमां पान खराय. लीला पानोथी वृक्ष भराय;
वसंतनी रमणीय छायामां दीव्य स्वरुप झळकाय!
पूरो आनंद इहां प्रगटाय! ३

घटा घनघोर दीसे वनमां, खीले मस्ती रुधिर तनमां;
मोर, बपैयां, पीयु पीयु वदतां मधुर स्वरे टहुकाय!
पवन मधरो, मधरो फरकाय! ४

महा सुद पांचम दीन उजवाय,
ओगणीस पीस्तालीस साल गवाय;
वसंत पंचमी दिव्य प्रभाते जन्म थयो गुरुराय!
आहिरनां पुन्य अति कहेवाय! ५

पीता तोलाना रत्न कहाय, वसुदेवी कुक्षी दीपवाय;
गाम मणादर नगरे शुभ मुहुरतमां नाम पडाय!
वदे सहु सगतोजी गुरुराय! ६

प्रभो जंगलमां ढोर चराय, ललाटे चंद्र अहो! चळकाय;
लक्षणवंता महान! पुरुष ए दिव्य महर्षि थाय!
गुरुना विश्व सहु गुण गाय! ७

युवानवये संसार तजाय, अवस्था गभरु बाळ कहाय;
आठ वरसमा घरथी नीसर्या जंगल पहाड फराय !
अनुभवमां परीपक्व थवाय ! ८

अहोहो ! दीक्षाव्रत लेवाय, जीवनमा ज्योत खरी झळकाय;
सोळ वरसमा संयम लीधुं शांतिविजय गुरुराय !
तपस्वीना ए शिष्य कहाय ! ९

प्रभो ! श्री धर्मविजयराया, महान धुरंधर कहेवाया,
एह तणा पट्टधर गुरुवर श्री साचा संत गवाय !
प्रभु महावीरनो पंथ दीपाय ! १०

तपस्या घोर ! करी गुरुराय, अभीग्रह कष्ट घणा सहेवाय,
चार वरस जंगल पहाडोमा मौनपणे विचराय !
स्मृणीने अश्रु नयन उभराय ! ११

रुडो ! अर्बुदगीरीराज गवाय, रुषीयोगीनुं स्थान कहाय;
अर्बुदगीरीमा ध्यान करीने योगीश्वर पद पाय !
कहाया शांतिसूरीश्वरराय ! १२

चरणमा भूपती शीर नमाय, जगत सहु एकरुपे नीरखाय;
विश्वप्रेमना परम प्रकाशे देश विदेश जगाय !
प्रभो ! आत्ममां डंको वाय ! १३

असंख्य जनो हिंसक बुझवाय, मदिरा पान सहु छोडाय,
अनहद शक्ति नाथ ! तमारी वर्णन केम कराय !
वचनसिद्धि मुखथी म्हेकाय ! १४

अहिंसानां सूत्रो भजवाय, अबोलानां अंतर रीझवाय।
भक्तमंडळ सहु हर्षे गावे किंकरदास नमाय।
महर्षि ए साचा कहेवाय। १५

ॐ

७२

जन्मजयंति

राग-गझल

जयंती आज गुरुवरनी, वीराओ हर्षथी उजवो;
नमावी शीश चरणोमां, त्हमारा आत्मने रीझवो. १

अगम अदभूत बळ ज्योती, प्रकाशी विश्वमां आजे;
करी अंजन नयन मांहे, त्हमारा आत्मने रीझवो. २

गीरीवरने शिखर मांहे, प्रभो! आसन जमाव्युं छे;
गुणो एना विचारीने, त्हमारा आत्मने रीझवो. ३

अजर अविनाशी पद काजे, अहा! सर्वस्व अर्प्युं छे;
जीवनमां ज्योत प्रगटावी, त्हमारा आत्मने रीझवो. ४

गुफाओने खीणो मांहे, सदा निर्भयपणे फरता;
दिपक घरघर झग्यो आजे, त्हमारा आत्मने रीझवो. ५

दुःखोना डुंगरो तोडी, अजब! मस्ती खीलावी छे;
अरे ए वासना म्हेंकी, त्हमारा आत्मने रीझवो. ६

मरुधर देशना महाडे, अरे! ओ! भारती माता;
धरी छे भेट अणमोली, त्हमारा आत्मने रीझवो. ७

मणादर गाममा वसता, पीताश्री भीमतोलाजी;
पुत्र श्री नाम सगतोजी, त्हमारा आत्मने रीझवो. ८

उजाळी कुंख मातानी, वसुदेवी! वसुदेवी!,
धन्य आहिर ज्ञातीने, त्हमारा आत्मने रीझवो, ९

ओगणीस पीस्तालीसे साले, वसते वासना मुकी;
महासुद पाचमे जन्म्या, त्हमारा आत्मने रीझवो. १०

अवस्था आठ वय माहे, जगत माया तजी एने;
अनुपम मार्ग निरधार्यो, त्हमारा आत्मने रीझवो. ११

जन्म दीक्षा समय एके, फकिरी आत्मा लीधी,
वन्या ए विश्वना साधु, त्हमारा आत्मने रीझवो. १२

स्वीकार्युं नाम शांतिनु, गुणो अद्वैत उभराया;
गुरुश्री तिर्थविजयजी, त्हमारा आत्मने रीझवो. १३

तपस्वी तिर्थविजयना, गुरुश्री धर्मविजयजी;
धुरधर ज्ञानी ने ध्यानी, त्हमारा आत्मने रीझवो १४

पूजाया देव थई आजे, माडोली गामना पाळे,
महायोगेंद्र कहेवाया, त्हमारा आत्मने रीझवो. १५

दिपानी पाट्र गुरुवरनी, प्रभो! शांतिसूरीश्वरजी;
मुनीश्वर महान कहेवाया, त्हमारा आत्मने रीझवो १६

भयानक वन अने पहाडो, वसे हिंसक पशुओ ज्यां,
मरणनो भय तजी साध्यु, त्हमारा आत्मने रीझवो. १७

अमर फळ योगनुं पामी, बनी अवधूत पूजाया;
लीला चैतन्यमय झळकी, त्हमारा आत्मने रीझवो. १८

परमपद प्राप्त करवाने, कर्यो निरधार मुक्तिनो;
करी दर्शन कृपाळुनां त्हमारा आत्मने रीझवो. १९

नमन! कोटी! नमन! कोटी, प्रभो शांतिगुरु चरणे;
विनंती दास किंकरनी, त्हमारा आत्मने रीझवो. २०

ॐ

८०

श्री गुरुमंदिर महोत्सव प्रसंगे.

वीराओ सहु वेळेरा आवजो,
वालुडां सहु प्रेमे पधारजो. ए टेक

मरुधर प्रदेशे नगर नामे गाम मांडोली महीं,
गुरुदेव धर्मविजय प्रभोनुं धाम उज्वळ छे अहीं.
चरण छे त्यां धर्म विजयनां,
चरण छे त्यां तिर्थ विजयनां. १

धर्मविजय प्रभो धुरंधर ज्ञानीने ध्यानी थया,
जन्म्या मरुधर देश नगरे गाम मांडोली रह्या.
गुरुवर हो ज्ञानी गवाया,
रुषिवर हो घर घर पूजाया. २

गुरुदेव स्वर्ग थया पछी ज्यां देहनी भस्मी करी,
अग्नि भभूकी आपथी ए दिव्य घटना छे खरी.

अगम वळ हो गुरुवरनुं वामीयु,
अमर फळ हो मुक्तिनुं पामीयु ३

देहभस्म थयो अने ध्वज पालखीनी झगमघी,
लीमखूट वस्त्र वळ्या नहि ए सर्व अमर रह्या अहीं.
लीमडीओ त्या अदभूत गाजती,
पादुका त्या गुरुवरनी भासती. ४

तसशिष्य तिर्थविजय तपस्वी ज्ञात आहिरमा थया,
शांति सूरीश्वर शिष्य एना एक कुळमा उपन्या
नवे खंड हो कीर्ती गवाणी,
सूरीश्वरश्री ज्ञानीने ध्यानी. ५

मंदिर गुरुनु भव्य रचीयु गाम माडोली महीं,
मूर्ति ईहा स्थापन करे ए वात निश्चय छे सही.
विभुवरश्री धर्मविजयनी,
गुरुवरश्री तिर्थविजयनी. ६

भक्तो पधारो हर्षथी आनदनी अवधि नहि,
दर्शन करी गुरुदेवना पावन बनो सर्वे अहीं.
वीराओ सहु झाझरथी झूरूजो,
वालुडा सहु भक्तिना चूरूजो ७

मणीमय महामंगल प्रभाते दिव्य अनुपम अवसरे,
अगम अदभूत ज्योत झरशे मानवीना मनहरे.

चांदलीओ त्यां चमकेलो उगशे,
घनाघन त्यां वाजांनी उडशे. ८

ओगणीसे चोराणुं साले मास फागण फालशे,
शुक्ल दशमीने प्रभाते दिव्य उत्सव झामशे.
अविचळ रहो मंदिर गुरुनुं,
शरण एक हो शांतिसूरीनुं. ९

छोळो उछळशे प्रेमनी अद्भूत रचना झामशे,
गुरुवर प्रभो शांतिसूरीनी दिव्य घटना वामशे.
किंकरदास कहे अवसर ना भूलजो,
बालुडां सहु भक्तिमां झूलजो. १०

ॐ

८१

गझल

मांडोली गाममां आजे, अजब आनंद उलटायो;
वह्यां झरणां कृपासिंधु, प्रभो शांति-सूरीश्वरजी. १

पधार्या प्रेमथी भ्राता, हृदयमां हर्ष उभराता;
गुणो गुरुदेवना गाता, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. २

नवीरा राजवी आव्या, जीवनमां भेद-नव लाव्या;
सर्वने एक सरखाव्या, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. ३

गुरुमंदिर रुडु भासे, अमर पुष्पो थकी वासे;
निरखतां पाप सहु नासे, प्रभो शांति सूरीश्वरजी. ४

तपस्वी तिर्थ विजयने, प्रभो श्रीधर्मविजयनी,
करी मूर्ति ईहा स्थापन, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. ५

ओगणीसें चोराणु साले, फागण शुक्ले दशम दहाडे,
लीलाओ दिव्य प्रगटावी, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. ६

मरुधरना महापुन्ये, मणादर गाम नगरेथी,
हीरो आदिव्य झळक्यो छे, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. ७

पीताश्री भीमतोलाजी, वसुदेवी अहो माता;
उजाळी ज्ञात आहिरनी, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. ८

दुःखो अवधि सही आजे, परमपथे मुकाया छे,
दिपक घर घर झगाया छे, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी ९

परम ज्ञानी अने ध्यानी, जीवनना एक विज्ञानी,
चुझावे विश्वना प्राणी, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १०

युरोपीअन पारसी राजन, करे छे कईकने पावन;
जपावे ॐ ने अर्हम्, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. ११

अगम मस्ती खिलावीने, वजाव्यो देशमा डंको;
पूजाया चोदीशा माहे, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १२

सदा समभावनी नैया, महीं पोढया प्रभोस्वामी;
निजानंदे सदा रहेता, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १३

जगत कल्याणने माटे, फक्किरी आत्ममा लीधी,
सीडीए स्वर्गनी सीधी, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १४

पुरण पुण्यात्म मांडोली, थयुं ज्यां रत्न अणमोलु;
प्रकाषी विश्वमां ज्योती, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १५

हृदय शुद्धी थशे त्यारे, पछी गुरुदेव छे व्हारे;
डूबेलां मानवी तारे, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १६

विना स्वार्थ करो भक्ति, पछी कंई पामशो शक्ति;
नथी भक्ति विना मुक्ति, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १७

अनाथो नाथ छे स्वामी, जमर कीर्ती जुगे झामी;
अहो ! शीवपुरना गामी, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १८

पुरवना पुन्य योगेथी, मळया ज्ञानी प्रभो साचा;
दया किंकर उपर कीधी, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १९

गुरुमंदिर अमर रहेजो, मुखेथी सर्व ए कहेजो;
पुरो त्यां हर्षनां वहेजो, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. २०

८२

राग-एवा सदगुरुनुं तमे ध्यान करो

प्रभो आनंदपुर वहायां अहीं,
धन्य धन्य मांडोली गाम मही. १

मूर्ति करी स्थापन प्रभो गुरुधर्म तिर्थ विजय तणी,
नयने निरखतां पाप नासे दिव्य छे पारसमणी.
प्रभो धर्म धुरंधर ज्ञानी तणी,
योगी अवधूत आतम ध्यानी तणी. प्रभो २

उलट्यो अजब आनंद सागर दिव्यदिप झळकी रह्यो,
वर्णन मुखे नर थई शके दर्शन करी पावन बन्यो.
अति अद्भूत तान मचायुं अहीं,
गुरु ज्ञानीतणा गुण गाया सही. प्रभो ३
महापुन्यशाळी नर हता ते सर्व अहींआ आवीया,
दर्शन करी गुरुदेवना आनंद रस उभरावीया.
प्रभो अमृत जळ उभराया अहीं,
गुरु दिव्यलीला प्रगटावी सही. प्रभो ४
शांतिसूरीश्वर महानयोग विश्वमा भजवई रह्या,
जंगल अने पहाडो फरी ॐकारनी धूनी वर्या.
प्रभो शांतिसूरीश्री पधार्या अहीं,
एनो डंको थयो जधा विश्वमही. प्रभो ५
किंकर कहे आ दिव्य घटना भाग्यवंता पामीया,
भक्ति करी भगवंतनी आनंद उरमा वामीया.
प्रभो सहाय करो तुम बाळगणी,
मारा जन्म मरणना दुःख हणी प्रभो ६

ॐ

८३

श्री केसरीयाजी तिर्थ अने सूरीश्वरनी हाकल

राग-आजनना देश पधारीया गुरुशांतिसूरीश्वर योगीने
केसरीया तिर्थ बचानेको, पधार्या हाका सूरीश्वरने,
करो जय जयनाद जमानेको, भारतीयाना भगवान ननने. टेक

ए तिर्थ धुरंधर जैनोका, मंदिर कहलाता जीनवरका;
ए सत्य स्वरुप वतलानेको, वजव्याता डंका सूरीश्वरने. १
पूजारी पंण्डा मंदिरके, रहेते प्रभु पूजन करनेको;
ए हक सच्चा समजानेको, वजव्याता डंका सूरीश्वरने. २
लख्खो जैनो वहां जाते है, दर्शन करी आनंद पाते है;
ए तिर्थ तणी यात्रा करके, आदीश्वरके गुण गाते है. ३
पंडा कहे तिरथ वैष्णवका, अवतार सूणाते रीखवका;
ए असत्य नाश करानेको, वजव्याता डंका सूरीश्वरने. ४
पण्डाने जुल्म कीया भारी, निश्चय झघडेका नीरधारी;
ए झघडा शांत करानेको, वजव्याता डंका सूरीश्वरने. ५
किंकर कहे तप तपीआभारी, गुरु शांतिसूरीश्वर बलीहारी;
समभाव सदा अंतरधारी, बजव्याता डंका सूरीश्वरने. ६

ॐ

८४

राग-आशावरी

सूरीश्वर साचा कोण कहावे;
वीर धर्म दिपावे. ए टेक.

भूतकाळमां थया सूरीश्वर, नाम अमर कहेवायां;
सत्य तणो संदेश सुणाव्यो, दिव्य पुरुष कहावे. सूरीश्वर-१
सकळ संघनो भार उठावे, एह सूरीपद पावे;
संकट समये शीर झुकावे, वीरपणुं वतलावे. सूरीश्वर-२

धर्म खातर जे प्राण समर्पे, आतमने अपनावे;
देहतणी परवा नहि करता, अद्भूत बळ अजमावे सूरीश्वर-४
शांतिविजयजी महान योगीश्वर, सूरीश्वर पद पावे;
संघ सकळ पदवी अर्पे छे, धन्य, धन्य, गुणगावे. सूरीश्वर-५
केसरीयाजी तिर्थ बचावा, भिष्म प्रतिज्ञा लीधी;
स्नेह अने शांती करवाने, अनशन व्रत बतलावे सूरीश्वर-६
मरुधरना ए महान रुपीवर, आतम ज्योत जगावे;
शांतिचरण रज किंकर कहे छे, आनंद मंगळ थावे. सूरीश्वर-७

८५

राग-आशावरी

सूरीश्वर चरण मही नर्दीजे, आतम शुद्ध करीजे १
हीरविजयजी सूरीश्वरराया, भारतरत्न गवाया;
दारु मासनो त्याग करावी, अकबरराय बुझाया. २
हेमाचार्य सूरीश्वरराया, वीर पुरुष कहेवाया;
गुर्जर भूमीना भूपनमाया, रायकुमार पहाया. ३
वर्तमान समय कळीयुगनो, महान योगीश्वर राया,
शांतिविजयजी नाम छे जेनु, भारत भूप नमाया. ४
बामणवादजी तिर्थ मरुधर, सूरीश्वर पद पाया,
विजय शांतिसूरीश्वरजीना, जय जयनाद वजाया. ५

घोर प्रतिज्ञा साथे लीधी, तिर्थ केसरीया माटे;
क्लेश हणावी शांती थवाने, अनशन व्रत बतलाया. ६

विश्वप्रेमना अदभूत बळथी, आलमने अपनाया;
शांतिचरण रज किंकर कहे छे, जय जयकार जगाया. ७

ॐ

८६

राग-प्रीतमजी तेडां मोकले

तिर्थ केसरीया जैननुं बचायुं गुरु श्री,
घर घर संदेशो मोकल्यो. ए टेक

पंडा लोको मंदिरना पूजारी, एने जुल्म कीधो अति भारी;
अन्य धर्मीनी स्हायने स्वीकारी गुरुश्री;
घर घर संदेशो मोकल्यो. तिर्थ १

ध्वजा जैनत्व केरी उतारी, होम कीधो मंदिरमां भारी;
जैन आलममां चर्चा अपारी गुरुश्री;
घर घर संदेशो मोकल्यो. तिर्थ २

युद्ध चाल्युं पंडानुं भारी, जुठी बाजी जगतमां प्रसारी;
पंडा लोको कहाता पूजारी गुरुश्री;
घर घर संदेशो मोकल्यो. तिर्थ ३

यती श्रावक मंदिरमां सारी, पुजा प्रक्षाल भावना अपारी;
कहे पंडा श्रावक ए अमारी गुरुश्री;
घर घर संदेशो मोकल्यो. तिर्थ ४

गुरु शांतिसूरीश्वरराया, एने आलममां डंका वजाया;
परम ज्ञानीने ध्यानी कहाया गुरुश्री;
घर घर संदेशो मोकल्यो. तिर्थ ५

महाराणा मेवाड ना आया, गुरुचरणोमां शीषने झुकाया,
मोतीमहेले आनंद उभराया किंकर कहे,
घर घर संदेशो मोकल्यो. तिर्थ ६

८७

राग-त्हारी भक्ति जागी छे वधा विश्वमां रे

सूरी सम्राट पद महा जाणजो रे,
होये छत्रीश गुण गुणवान. सूरी १
गुरु शांतिसूरीश्वरने नमो रे,
जेने नमवाथी पार पमाय सूरी २
धन्य धन्य भारत त्हारा आंगणे रे,
गुरु सूर्य समा झळकाय. सूरी ३
सोळ वरसे संयम एणे आदर्युं रे,
राय रंक सहु एक सरखाय. सूरी ४
भील मेणा मानव घणा कारमा रे,
एने वाणीथी बोध अपाय सूरी ५

घोर कष्टो सह्यां गीरीराजमां रे,
परमज्ञानी ने ध्यानी कहाय. सूरी ६

शुदी त्रीजे मागशर मास महुरते रे,
बामणवाडा तिरथ कहेवाय. सूरी ७

सूरी सम्राट पद गुरु पामीया रे,
संघ सर्वे मळी गुणगाय. सूरी ८

केसरीयाजी तिरथ रुडु जाणजो रे,
युद्ध चाल्युं पूजारीनी साथ. सूरी ९

वदे मंत्री आ तिर्थ नथी जैननुं रे,
ए तो सार्वजनीक कहेवाय. सूरी १०

तिर्थ माटे प्रतिज्ञा आदरी रे,
स्नेह शांती अनुपम थाय. सूरी ११

आवी गामेमदार तप आदर्यो रे,
त्रीश उपवासे जयजय थाय. सूरी १२

मोती महेले आवी नम्या राजवी रे,
अति आनंद त्यां उभराय. सूरी १३

कहे किंकर बाळ गुरु शांतिनो रे,
एनी घर घरमां ज्योती झघाय. सूरी १४

ॐ

८८

राग-आया हुं गुरु द्वारपे कुछ लेके जाउंगा

केसरीयाजी तिर्थ बचावा, घट बजायो तो,
घट बजायो तो, गुरुए घंट बजायो तो के-१
तिर्थ बचावा अनशन व्रतनी, भिष्म प्रतिज्ञा जो,
त्रीश उपवास करी गुरुवरश्री, घट बजायो तो. के-२
सूरीपद श्री संघे अर्प्युं तु, एह बतावा जो;
पदवी लईने पण आरम्यु, धन्य सूरीश्वर जो. के-३
उदेपुर मेवाड प्रदेशे, अनुपम घटना जो,
दाखल नहि करवाने माटे, सैन्य स्वयवर जो. के-४
पोलीस पेरो रात दिवसनो, चार तरफ मूक्यो;
दीवान श्री सुखदेव प्रसादे, निश्चय करीयो तो. के-५
मदार गामे ध्यान बळेथी, शांतिसूरीश्वर जो;
दीवान आवी चरणे पडीयो, दर्शन करतो तो के-६
त्रीश उपवासे ध्यान बळेथी, गाम देवाली जो;
महाराणा श्री चरणे पडता, जय जय बोले जो के-७
किंकर कहे आ कार्य वीरोनु, हसता जावे जो;
मृत्यु तणो भय नाश करे ए, शीव सुख पावे जो. के-८

८९

गझल

केसरीया तिर्थने माटे, प्रतिज्ञा भीष्म लीधीती;
अरस्पर स्नेह करवाने, करी हाकल दीशा चारे. १

गजाव्यो घोष दुनीआमां, सूरीपद सत्य वतलावा;
जीनेश्वर गुण गावाने, करी हाकल दीशा चारे. २

भयानक युद्ध पंडानुं, वन्युं ए तिर्थमां भारी;
प्रतिज्ञा प्रेमथी पाळी, करी हाकल दीशा चारे. ३

नीकळीया टेक निरधारी, तपश्चर्या जीवन भारी;
मृत्युनो शोक विसारी, करी हाकल दीशा चारे. ४

मदारे वास कीधो तो, जीहां उपवास आरंभ्या;
जीवन मस्ति जगावीने, करी हाकल दीशा चारे. ५

सूरीपद सिद्ध करवाने, अभीग्रह आत्म कीधो तो;
वीणा जय जय वगाडीने, करी हाकल दीशा चारे. ६

मुलक मेवाडनो उतर्यो, सूरीश्वर दर्शनो माटे;
अहींसा सूत्र समजायुं, करी हाकल दीशा चारे. ७

पधार्या त्रीश उपवासे, देवाली गामना पाळे;
प्रभो ! निज आत्मना बळथी, करी हाकल दीशा चारे. ८

अनंता मानवी उभर्या, पधार्या राजवी महेले;
मदारे शोध गुरुवरनी, करी हाकल दीशा चारे. ९

मदारे नव दीठा गुरु श्री, दीशा चारे सहु खोजे,
पुरधर ज्ञानीने ध्यानी, करी हाकल दीशा चारे. १०
जडेला रत्नने मोती, हीराथी पालखी झळके,
गुरु सन्मानने माटे, करी हाकल दीशा चारे ११
देवाली गामथी आगे, हता त्रण कोश उपर ए,
पधार्या ध्यानना बळथी, करी हाकल दीशा चारे. १२
हती त्या थूरनी वाडो, निहाळ्या वाडनी वच्चे,
वधाव्या नाद जय जयथी, करी हाकल दीशा चारे १३
झूकाव्यु शीष महाराणे, क्षमा अंतर थकी याची;
कराव्यु पारणु हस्ते, करी हाकल दीशा चारे १४
वन्यु सहु मोती महेलोमा, कमीशन् राज्यथी नीम्यु;
दीगवर श्वेतना वच्चे, करी हाकल दीशा चारे. १५
हती जे वात वैश्नवनी, तजी जैनत्वनी आवी,
लगाडी शातीनी चावी, करी हाकल दीशा चारे. १६
पूकारे बाळ दीन किंकर, अजब ! माया गुरुवरनी,
ध्वजा जैनत्वनी झळकी, करी हाकल दीशा चारे. १७

९०

राग–आशावरी

माया वीरला पावे, गुरुनी माया वीरला पावे
सदगुरुवरनी अकळ लीलाओ, भाग्यवानमा आवे,
मोह मतीमा भान भूलेला, उधारे अथडावे गुरुनी–१

कृपा दृष्ट मनमंदिर स्थापे, झगमग ज्योत जगावे;
नैयां डगमग थाय नहि तो, घटमां घंट बजावे. गुरुनी-२

मारुं त्हारुं मनथी छोडे, शांती जीवन उभरावे;
गुरु गुणमां लयलीन बनीने, भेदन उरमां लावे. गुरुनी-३

परगुण निरखी निजने माटे, पंडीत जात मनावे;
पंडीत बनवा अवनव रीतीए, अंतर हर्ष धरावे. गुरुनी-४

नाम जगतमां निजनुं करवा, भीन भीनता न मचावे;
सब जन अकळ कळा नहि पावे, अकल नकलमां नावे. गुरुनी-५

सर्व बने निज मनथी कवीओ, वीध वीध रीत गुण गावे;
सदगुरुवरनी अदभूत माया, घटघटमां नहि आवे. गुरुनी-६

किंकर बाळक शांति चरणरज, मूढमती कहलावे;
शांति प्रभोनी अकळ लीलाथी, आतमने अपनावे. गुरुनी-७

ॐ

९१

राग-ज्ञान ना थयुं रे जीवने ज्ञान ना थयुं

शुं रे करुं रे हवे शुं रे करुं, गुरुवर गुरुवरनुं ध्यान धरुं. टेक.

गुरुवर माता पीता, गुरुवर दीन दाता;
गुरुनाम भजवाथीः हुं प्रभुने मळुं. शुं-१

आरे . जीवनमां साचो, गुरुवर गुरुवर;
सदगुरुवरना चरणे सहु रे धरुं. शुं-२

दुनीआदारीना सुखो, दुःख रुप भासे,
आरे दुःखडामा एनु शरणु भयुं. शु-३
चितडानी चोरी जाणे, डूबताने काठे आणे;
भवरुपी दरीआमाथी, केमे तरु. शु-४
विषडानी वेले चढीयो, भवसागर एले करीयो,
मोह ने मायामा हुं तो, रम्या रे करु शुं-५
हजु नथी समज्यो किंकर, सदगुरुवरने;
शांति गुरुवरने मारी, अरजो करु. शु-६

९२

विखवादना वादळ

हरिगीत छंद

आ जगतमा ज्या ज्या निहाळु, त्या बधे विखवाद छे,
ज्या ज्या नयन मारा फर्या, त्या त्या बधे विखवाद छे,
भक्ति अने शक्ति महीं पण, सर्वमा विखवाद छे,
निजनी मुरादो पार करता, सर्वमा विखवाद छे. १
साधु अने संतो महीं पण, सर्वमा विखवाद छे,
मुनीजन अने गुणीजन महीं पण, सर्वमा विखवाद छे;
भक्तो तणा अंतर महीं पण, कट्टर ए विखवाद छे,
क्रोध किल्लो बाधनारो, एक ए विखवाद छे. २

शीतळतानी लहेरमां पण, उष्ण ए विखवाद छे,
विश्व प्रेम तणा झरामां, आग ए विखवाद छे;
ज्यां सत्यनी सरिता वहे, त्यां पण खरे विखवाद छे,
जय जय तणा झणकारमां पण, एक ए विखवाद छे. ३

माळा जपे मुखथी छतां पण, अंतरे विखवाद छे,
शांती जीवनमां राखतां पण, दुष्ट ए विखवाद छे;
धर्ममां ने कर्ममां पण, सर्वमां विखवाद छे,
किंकर शिरे वादळ तूट्यां, धिख, धिख, [illegible]. वखवाद छे. ४

मुज नाथ शांतिसूरी प्रभोमां, शांतीनो शुभ नाद छे,
ए योगीना अंतर मही, शांती तणो संवाद छे;
आ जगतना कल्याण माटे, एक आशीर्वाद छे,
किंकर कहे छे चोदीशा, ए विण बधे विखवाद छे. ५

९३

राग-डंको वाग्यो लडवैया शूरा जागजो रे.

डंको वाग्यो घर घरमां, एना नामनो रे;
एना नामनो रे, मुक्ति धामनो रे. डंको

ज्ञानी-ध्यानी झळक्या छे, सारा विश्वमां रे;
सारा विश्वमां रे, सारा विश्वमां रे. डंको

वंदन करवा वीराओ, वहेला आवजो रे;
भक्ति काजे अंतरमां, नित्ये ध्यावजो रे. डंको

आतमरामी, विश्रामी, कष्टो कापजो रे,
कष्टो कापजो रे, भक्ति आपजो रे. डंको
आतम मुक्तिने काजे, सर्वे झूकजो रे;
किंकर कहे छे, मायाने मनथी मुकजो रे डंको

९४

राग-गुणवती गुजरात अमारी गुणवती गुजरात

शांतिसूरीश्वरराय, अमारा प्राण प्रभु कहेवाय.
आतम कमळ अंतरमा खीलव्युं, अनहद तान मचाय,
अलबेला ए नाथ अमारा, प्राण प्रभु कहेवाय. शा १
करुणा सागर करुणा नागर, छे जीवना प्रतिपाळ,
कृपासिंधु ए नाथ अमारा, प्राण प्रभु कहेवाय. शा २
नाथ उगारो, दुःखडा टाळो, महेर करो शीरताज,
दीन दुःख भंजन नाथ, अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. शा ३
आतम रामी शीव सुखगामी, शांती तणा दातार,
भव भयनाशक नाथ, अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. शा ४
किंकर बाळक अर्ज करे छे, चर्ण पडे गुरुराय,
आत्म उद्धारक नाथ, अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. शा ५

९५

राग-शांती माटे सदगुरुनुं शरणुं लीधु रे

सदगुरुनो संग हवे नहि मुकूं रे;
तारे के डूबाडे तोये नहि चुंकूं रे. सदगुरु-१
दुनीआ केरो डर तजीने, भक्तिमां झुंकूं रे;
भाग्य फळयुं भगवान अमारुं, गांठ न चुकूं रे. सदगुरु-२
अंध दशामां ज्योत झघावी, टेक न मुंकूं रे;
तारे के डूबाडे तोये, बाळक हुं छुं रे. सदगुरु-३
गोतती चारे कोर हुं, तेने घटमां चींध्युं रे;
अंग तणी दुर्गंध भगाडी निर्मळ कीधुं रे. सदगुरु-४
शांतिसूरी गुरुवरनुं में तो शरणुं लीधुं रे;
प्रेम पीलावी किंकरनुं, एने मनडुं वींध्युं रे. सदगुरु-५

ॐ

९६

राग-आवुना योगी त्हें मने माया लगाडी

मुज अरजी सूणजो, शांतिसूरीश्वर स्वामी;
मुक्ति तणा छो तुमे गामी. मुज-१
क्रोध, हणीने त्हेंतो, शांती सुहावी बाबा;
माया धुतारीने हठावी. मुज-२

मद मोहन मनथी काढयो, समता रस रेल्यो बाबा,
अर्हमनी ज्योती त्हें जगावी. मुज–३

अज्ञानी बाळक त्हारा, शरणे आव्या छे बाबा,
अतरनी अग्नीने बुझावी. मुज–४

मुक्तिपुरीना स्वामी, ज्ञानी ध्यानी छो बाबा;
बाळकने मूकजो ना विसारी. मुज–५

भवभवना दुःखडा वारो, बाळकने तारो बाबा,
किंकरनी अरजी ल्यो स्वीकारी. मुज–६

ॐ

९७

राग-अवतारी

गुरु गीरधारी, बेठा छे ब्रह्मचारी,
आबू केरी गुफा माहे, शुभ ध्यान धारी गुरु–१
शीरपेरे झटा सोहे, ब्रह्म रुप धारी,
शांतिसूरी, गुरु, जग बलीहारी. गुरु–२
गुरु दिव्य ज्ञानीने, आतम रामी,
भव दुःख भजन, दीनानाथ स्वामी. गुरु–३
प र म कृ पा लु, प र म द या लु,
निजानद रहेता स्वामी, प्रभु प्रभु प्यारु. गुरु–४
भेद न जाणो स्वामी, नव खड कीर्ति जामी,
विश्व नमे छे गुरु, चर्ण वारी वारी गुरु–५

किंकर बाळक, शांती चरण रज;
दर्शन देजो नित्ये, गुरु गीरधारी. गुरु-६

ॐ

९८

राग-साचा शांतिसूरी कहेवाय

गुरु श्री शांतिसूरीश्वर राय;
अमारा प्राणप्रभु कहेवाय.

वसु कुक्षी जन्म धराया गुरुश्री,
आनंद दीप प्रगटाया गुरुश्री;
घोर गगनमां थाय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. १

पारणीए हुलराया गुरुश्री,
आहिर ज्ञात गवाया गुरुश्री;
जंगलमां उछराय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. २

मोर करे टहुकार गुरुश्री,
वन वृक्षोनी हार गुरुश्री;
दिव्य नयन तलसाय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. ३

जंगल ढोर चराय गुरुश्री,
तिर्थविजय भेटाय गुरुश्री;
भान भीतरमां थाय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय ४
संयम व्रत लेवाय गुरुश्री,
आतम दीक्षा थाय गुरुश्री;
मृत्यु बाथ भीडाय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. ५
शांतिसूरीश्वर नाम गुरुश्री,
ज्ञानी अने गुणवान गुरुश्री;
आतम ज्योत झघाय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. ६
घर घर गुण गवाय गुरुश्री,
ध्यान दिपक झळकाय गुरुश्री,
किंकर गुरु गुण गाय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. ७

९९

राग-मारा मनना मालीक मळाया रे थई प्रेमवश पातळीया
मारा मनना संशय टळीयारे, गुरुराज साचा मळीया
गुरु शांती तणा छे स्वामी, आतम गुण अंतर्यामी,
परदुःख भंजन शीवगामीरे, गुरुराज साचा मळीया. १

ॐकार मंत्र आराध्यो, वणसे अतिशय वळ वाध्यो;
साचा तन मनथी साध्योरे, गुरुराज साचा मळीया. २

मरुधर भूमी पून्य कहाणी, अमृत अमीरसनी वाणी;
धन्य धन्य गुरुश्री ज्ञानीरे, गुरुराज साचा मळीया. ३

घरघरमां घंट बजाया, कंई राजनने अपनाया;
वसुदेवी कुक्षी दीपाया रे, गुरुराज साचा मळीया. ४

विश्वप्रेमनी ज्योती जागी, धून मोक्षपुरीनी लागी;
भय दुर्गती दूरे भागीरे, गुरुराज साचा मळीया. ५

प्रीते हाथ ग्रहो प्रभु मारो, भवभयनां दुःख संहारो;
किंकरने पार उतारो रे, गुरुराज साचा मळीया. ६

ॐ

१००

राग-दांडी तणा किनारे

आबू तणा मीनारे, शांतिसूरी पधारे;
प्रभु आदीनाथ द्वारे, मनोहर स्वरुप धारे. १

नमुं आदी देव राया, मारु देवी मात जाया;
अर्बुदगीरी सुहाया, सूणी आत्मनंद पाया. २

शांतिविजयजी राया, वसुदेवी मात जाया;
मरुधर भूमी दीपाव्या, गुरु धर्म पाट पाया. ३

साधु पदे सुहाया, अवधूत योगी राया;
आत्मीक गुण दीपाव्या, धन्य धन्य तोरी छाया. ४

बाळयोगी ब्रह्मचारी, खरी रत्ननी छे क्यारी;
वरी शाती रुप यारी, कर्मोने तोडनारी. ५

धन्य धन्य आत्मज्ञानी, अर्हम तणी छे वाणी;
मुक्ति तणी नीशानी, भव पार पामवानी. ६

धन्य धन्य योगीश्वरजी, सुणो आप मोरी अरजी;
कहे दास शिष्यवरजी, करुणा करो गुरुजी. ७

ॐ

१०१

दुहा

शात दात गुरुदेव छो, परम कृपा नीधान;
शातिसूरी तुम नाम छे, शाती तणा बळवान.

धन्य धन्य मरुधर भूमी, धन्य मणादर गाम,
धन्य वसुदेवी मातने, उपन्या करुण नीधान.

आठ वरसे घर छोडीयुं, रह्या तिर्थ गुरु पास,
अर्बुदगीरी माहे रह्या, ध्यान धर्यु छे खास.

सगतोजी सतोकीयो, ससारी तुज नाम,
गौ माताने चारता, बन्या गुरु गुणवान.

आठ वरस गुरु चरणमा, रह्या गुरुश्री आप,
अनुभव पाको संचरी, दीक्षा आपी खास.

सोळ वरसे दीक्षा लीधी, गाम रामसीण मांय;
संघ सहु भेळो थई, धन्य धन्य गुण गाय.

साधुतामां संचर्या, पंच महा व्रत धार;
बाळ ब्रह्मचारी तमे, पामो शीव सुख सार.

किशोर वय कष्टो सह्यां, त्यागी मोह वीचार;
राग द्वेषने जीतीया, छोडयो देहाचार.

अति अति तप आदर्यो, धर्यां जंगलमां ध्यान;
मोह शरीरनो छोडीने, पाम्या आतम ज्ञान.

घोर कष्ट गुरुश्री सह्यां, कह्यां न मुजथी जाय;
कर्म सटोसट तोडीने, बन्या आप योगीराय.

क्षमा धैर्य हृदये धरी, तारो कंई राजन;
कुकर्मना फंदो तजी, बनता कंइ पावन.

जैन अने जैनेतरो, गुण तमारा गाय;
वचनामृत तुम सांभळी, मनमां बहु हरखाय.

अहो ! अहो ! गुरुश्री मळ्या, आत्म ज्ञान भंडार;
किंकर अर्ज स्वीकारजो, दीनबंधु भगवान.

१०२

कवाली

भले सारुं बुरुं थावे, प्रभु ईन्साफ करवानो;
करेला कृत्यनो बदलो, जरुर अहींआंज मळवानो. १

नचावे भाग्य सर्वेने, वीधीना लेखथी भाई;
नहि त्यां कोईनुं चाले, प्रभु ईन्साफ करवानो. २

गजब छे लक्ष्मीनी माया, मूरखडा कंईक भरमाया;
वीराओ पुन्यथी पाया, प्रभु ईन्साफ करवानो. ३

कसोटी कर्मनी आवी, जीवन अगार सळगाया;
जुठी छे जगतनी माया, प्रभु ईन्साफ करवानो. ४

नतीजे जुल्मनी आशा, बन्युं आजे अहो भाई;
अरेरे केर वर्तायो, प्रभु ईन्साफ करवानो. ५

नतीजा न्याय पर आजे, चढी अंधेरनी आंधी;
छता निश्चय नीतीनो छे, प्रभु ईन्साफ करवानो ५

हती जे प्रेमनी धारा, बनी ए लोही सम आजे,
नयन अश्रु वहाया छे, प्रभु ईन्साफ करवानो. ७

अरे! आ शुं बन्यु आजे, निरखता लोक सहु लाजे;
अधमता युद्धनी गाजे, प्रभु ईन्साफ करवानो. ८

सज्या त्या वस्त्र जे अंगे, गुरुना दर्शने चाली;
मुरादो हर्षथी वाळी, प्रभु ईन्साफ करवानो. ९

दिपक ज्यां रातदिन झगतो, प्रसादी भक्त मन लेता;
कहे किकर बन्यु अवधि, प्रभु ईन्साफ करवानो. १०

१०३

शीखरीणी छंद

अहो ! अमृत रसनां, झरण वहेतां नित्य हृदये,
हरख हरखे म्हाली, भक्ति भावे हास्य वदने;
तृषातुर हैडांने तृप्त करीने, रम्य करता,
अति आनंदोमां, अवनवा ज्यां प्रेम झरता. १

जीवन जादव व्हाला, प्राण प्रभुने प्रेम थाळो,
गीरीवर आबूजी, पहाड भासे छे रुपाळो;
जता साथे सर्वे, ऐक्यतानां तान वरता,
उमंगे उछरंगे, शुद्ध भावे हास्य करता. २

अहो ! लक्ष्मी देवी, कृतिमता त्हारी गजब छे,
जपे त्हारा जापो, ए जीवनमां महा प्रबळ छे;
वरे भाग्य वारोने, भ्रमर खुलतां हस्त भरता,
नहि समजे त्हारा, विविध गुणने एह रडता. ३

भजन भक्ति भावे, मनुष हृदये हाम रहेती,
जगत जाणे मनमां, अश्रुधारा अंत लेती;
दुःखोना वादळमां, विषम समये तेज झघतुं,
ईहां श्रद्धा साची, विजय पामे मन मलकतुं. ४

बन्युं नहि बनवानुं, ए प्रभुनी दिव्य माया,
पडे पहाणा अंगे, कष्ट कारागार काया;

वीरल नर ए पावे, मृत्यु सामे हाम भरता,
दुःखो अवधि सहेता, अमर सुखनी वास वरता. ५

गजब गुण एना छे, मोह माया तान मचवे,
रडया कंईक रडावे, भाग्य सहुने नाच नचवे;
समजवुं दुष्कर छे, कर्म राजा वास वसतो,
क्षमा औषध पीने, कर्म तोडे एज हसतो ६

अरे! लक्ष्मी त्हारा, त्रीवीध तापे मन घवाया,
दुःख तणी वादळीओ, नयन अश्रु जळ भरायां;
नतां स्वप्नो जेनो, एह नजरे आज भासे,
रुठया अम अंतरमां, प्रेम रसमां झेर वासे. ७

न तु जाण्युं घटमां, कल्पनाना कोट चणता,
तूटयो आजे किल्लो, करुणताथी मन विवळता;
हृदयमां गभरातां, नयन रडतां जाप जपता,
स्मरी श्री गुरुवरने, कर्मकेरा ताप तपता ८

अहो! आ शुं आजे, मन मूझयु चाल्या सजीने.
निराधारे उभा, गृह अने सर्वे तजीने,
प्रभो शांति शांति, अमजीवनमां एक प्यारु,
गुरुविण आ जगमां, सर्व मनथी छे अकारु. ९

१०४

राग–युवानो ओ हिंदना सनिक थनीने चालो

वीराओ, भक्ति करीने,
आत्मने दीपावो.

भवसागर तरवाने माटे,
एज नीशानी साची छे;
भक्ति झाझमां बेसवाने,
पळपळ धून मचावो. वीरा–१

कर्मयुद्ध महाभारत चाल्युं,
नीराधार सपडाया छे;
कर्म त्हमारां तोडवाने,
नित्य हृदयमां ध्यावो. वीरा–२

मोह मणीधर नाग डश्यो छे,
मायामां पटकाया छो.
मायामांथी मुक्त थवाने,
घटमां घंट बजावो. वीरा–३

सदगुरुवरनी साची सेवा,
ए विण जग सहु जुठुं छे;
मारुं तारुं सर्व तजीने,
अंतर ज्योत जगावो. वीरा–४

किंकर पाय पडी करगरतो,
गुरुपद भय हरनारु छे,
सदगुरुवरना चरणकमळमा,
सर्वे शीर झुकावो. वीरा-५

१०५

भुजंगी छद

गुरु ब्रह्म ज्ञानी गुरु देव मानो,
गुरु विश्व व्यापी प्रभु रुप जाणो;
गुरु गुण गावो गुरु गुण ध्यावो,
गुरुने सदा चित्तमा सर्व लावो. १

गुरु मोक्ष मानो गुरु सर्व जाणो,
गुरुवर तणी स्हाय साची पीछाणो,
गुरुभक्ति नित्ये हृदयमाही ध्यावो,
गुरुने सदा चित्तमा सर्व लावो २

गुरुना गुणोनो कदी पार नावे,
विचारेल सघळु सदा व्यर्थ जावे;
गुरु मंत्रनी धून नित्ये धरावो,
गुरुने सदा चित्तमा सर्व लावो. ३

गुरुने समजवा अती दोहिला छे,
गुरुना गुणोनी अनेरी लीला छे,

गुरु ओळखीने सदा उर ध्यावो,
गुरुने सदा चित्तमां सर्व लावो. ४

गुरुनी कृपा विण नथी कांई थातुं,
गुरुनी कृपामां बधुं आवी जातुं;
कहे दास किंकर धूनी ए मचावो,
गुरुने सदा चित्तमां सर्व लावो. ५

ॐ

१०६

राग-धन्यभाग्य हमारां आज पधारो मोंघेरा मेमान

ओ ! नाथ ! कहेला कोल प्रमाणे मुज फळशो क्यारे.
प्रभु अंतर्यामी मळीया, उलट अवधि उरमां भरीया;
रजनी विषे आपेला कोल प्रभु फळशो क्यारे.
ओ ! नाथ–१

नीरखतो भीन्न स्वरुप त्हारुं, बतावो समय समय न्यारुं;
दर्शनमां आपेल दीलासा, मुज फळशो क्यारे.
ओ ! नाथ–२

निहाळुं नाथ घणा रुपमां, वसे छे मन मारुं तुजमां;
स्वप्न महीं आपेलां वचनो, मुज फळशो क्यारे.
ओ ! नाथ–३

नयनमां मार्ग नथी सूझतो, प्रभो पळ मात्र नथी भूलतो;
दर्शावेलां स्वरुप प्रभोश्री, मुज फळशो क्यारे.
ओ ! नाथ–४

घडीभर वचन नथी भूलतो; सदा तुज तान मही झूलतो;
कृपासिंधु ए दिव्य लीलाओ, मुज फळशो क्यारे.
ओ! नाथ-५

पुरो विश्वास प्रभो त्हारो, दया आ दीन परे धारो;
तलसाव्या विण कोल, प्रभुश्री मुज फळशो क्यारे.
ओ! नाथ-६

विरहथी अश्रुअति सारु, रडे छे हृदयसदा मारु;
विरह तणा दुःख शांत करीने, मुज फळशो क्यारे.
ओ! नाथ-७

हवे तो धीरज नथी रहेती, बंधी शक्ति तुजमा वहेती;
कोल मुजब आ दीन बालकना, मन वसशो क्यारे.
ओ! नाथ-८

गुरुश्री भद सहु खोलो, हृदयथी आप हवे बोलो;
किंकर कहे प्रभु कोल प्रमाणे, मुज फळशो क्यारे
ओ! नाथ-९

१०७

आशावरी

गुरुवीन कोई न तारणहार.

तन दुःखीआरा, मन दुःखीआरा, जग मांहे सब जन दुःखीआरा;
त्रिविध, त्रिविध, तापे बळनारा, रडतां आंसुधार. गुरु-१

राय भिखारी, रंक भिखारी, मोटरमे फीरनार भिखारी;
संत अरी संन्यास भिखारी, भीख भरा संसार. गुरु-२

मन मगरुर बनाके फीरते, धन वैभवमे कुछ नव करते;
प्रभु, पूकारे मरते मरते, करगरता नीरधार. गुरु-३

कोई नहि धन जन दुनीआमे, कोई न हे निर्धन दुनीआमे;
कर्म विपाके सब जन पामे, ईश्वर केशव वाळ. गुरु-४

मन साधे वो सबसे मोटा, उन चरणोमे सब जन लोटा;
किंकर बाळक सबसे छोटा, गुरु मुज पालनहार. गुरु-५

ॐ

१०८

स्तुति

जय, जय, गुरुदेवा;.
अभय अगोचर आनद, शास्वत सुख लेवा. जय
आत्म ध्यान धुरधर, अवीचळमा वसता;
काम क्रोध रीपु भयने, अतरथी हणता. जय
जंगल पहाड गुफामा, ध्यान अती धरता;
हिंसक पशु भय छोडी, शूरवीरता भरता जय
अवधूत योगीश्वर, गुरुविश्व तणा रागी;
आम् धूनी धखवीने, भय दुर्गती भागी. जय
विश्व प्रेम सागरमा, पान सदा करता;
दिव्य दिपक प्रगटावी, जगना दुःख हरता. जय
सत्य तणो पोकार करी, आत्मने तें जगव्या,
विश्व धर्मना पूजक, अन्य जनो रीझव्या. जय
जाती तणो नहि भेद, जीवनमा शांती तणी धारा;
आत्म एक रुप नीरखी, अम्रत पानारा. जय
तु जगत्राता दाता, प्राण थकी प्यारो;
किंकरबाळ कहे छे, भवसागर तारो जय

१०९

स्तुति

जय, जय, गुरुदेवा;
आरती करुं सदगुरुनी, चरण कमळ शेवा. जय
चित, चंदन, जळ शब्दे, प्रेम तणा पुष्पे;
ज्ञान, गुलाल, अबील, शील, धीरजना धुपे. जय
दिपक, अवीचळ नाम, अक्षत अनुभवना;
कर्पुर आरती करुणा, लग रहा गुरु जपना. जय
नथी ईच्छा अंतरमां, कंई लेवा के देवा;
भजन गुरु प्रतापे, पामुं हुं नित्य मेवा. जय
आरती सदगुरु केरी, जे कोई गाशे;
भाव धरी शेवक कहे, शांती थई जाशे. जय

ॐ शांती ॐ शांती ॐ शांती